मधुमाछी

मधुमाछी

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

MADHUMACHHI

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-04-9
दाम: 251/- (भा.रु.)
सत्त्वाधिकार: © लेखक (श्री जगदीश प्रसाद मण्डल)
पाँचिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2015)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। सत्त्वाधिकारी अथवा प्रकाशक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

कथा-सत्तैर

मधुमाछी

जेठ मासक चिलचिलाइत रौदमे छिलमिलाइत मधुमाछीक समूह तरसैत-तलपैत रानीमाछी लग जाए रहल अछि।

सौनक सुहावन आ आसिनक मनभावन समैयक विपरीत मास अछिए। ओना, माघक गुज्जर, फागुनक मोजर, चैतक टिकुला आ बैशाखक कोषा पाबि जहिना गुलाबखासो, बम्बैयो आ सिनुरियो आम अपन कड़कड़ाइत जुआनीमे रंग-रूप-रस भरैक फेड़मे रहैए तहिना जमुनियाँ जामुनसँ गुलजामुन धरि करियाएल-ललियाएल रंगसँ सेहो अपन मुहोँ-कान आ देहो-दशा रंगि-रंगा रस-रसा गेले अछि। तँए कि पोखैर-झाँखैर अपन दिन-दुनियाँ-ले मत्थाहाथ दऽ नहि झखि-झखि झमान होएत सेहो बात तँ नहियेँ अछि। आसिनक आस पैबते जे पोखैर-झाँखैर भादोमे जलजलौ होइत जाठि-सँ-घाट धरि समगम बनि घाटक शोभा-सुन्दरसँ पवित्र नहान-घाट त्रिवेणी बनैत रहल, से आब अपन हहरैत जिनगीसँ खसैत-खसैत मुर्दघाट बनि बालुक तर पड़ि हेराएल जा रहल अछि। तहिना अथाहमे गड़ल जाठिक दशा सेहो बिगड़ले अछि। जे जाठि जौमुठिसँ संलग्न लबालब रहै छल से आइ धुर दसेक आँट-पेटक काद-कादोमे सिमैट गेल अछि आ आरो सिमटल जा रहल अछि..! सोभाविक अछि जे जे पानि अपने कानि रहल अछि ओ केना मनुखसँ माछी धरिक पेय भऽ सकैए। जे वसन्ती-गुलाब वसन्ती-रस पीब चमैक उठल छल, चमकैत रहै छल, आइ ओकर एहेन दिन भऽ गेल जे अपने रस विहीन भेल असोथकित अछि। माने ई जे माटिक बेरसतासँ गाछक अपन अंग-

अंग बेरस होइत-होइत फूल-कोढ़ी धरि एहेन बेरस बनि गेल जे..!

जेकर अपने मुँह-ठोर झड़ैक-झड़ैक झूड़ भेल छै ओ केना मधुमाछीकेँ रस दऽ सकैए.! दिन भरिक थाकल-ठेहियाएल माछीक समूह एक राय बना- रानीमाछी लग पहुँच अपन निवेदन निवेदित करैत बाजल-

“काल नहि महाकाल, महाकाल नहि दुरकाल, दुरकालो नहि अकालक स्थितिमे पड़ि गेल छी! फूलक रस संचय करैत मधुरस बनबै-सिरजै छेलौं, रौदकल्लामे पड़ि कर्तव्यहीन भऽ रहल छी, तँए..?”

मधुमाछीक चिन्त्य मनक बेथासँ रानीमाछीकेँ चिन्तासँ चिन्तित केलक। चिन्तित होइते रानीमाछीकेँ चिन्तन चेतन जगौलक। जगिते चेतन मन बिचड़ऽ लगल। बाजल किछु नहि पुछलक-

“आरो किछु कहैक छह?”

आने समूह जकाँ मधुमाछियो एक-मुहरी छल, मुदा हवाक विषयमे चर्च करब छुटि गेल छेलै तँए ओ अर्जीसँ फर्जी रहल। मुदा से भेल नहि। समूहेक एकटा माछी तनल। ओना, समूहो ओकरा बातपर प्रतिरोध ठाढ़ नइ केलक मुदा एते चेतावनी तँ दाइए देलकै जे ‘चर्चमे आएल प्रश्न दोहरौल नइ जाए।’ ओना, ओकर प्रश्न उठबैक कारण भेल जे जखन माछीक समूह ‘सबजन विचार’ बनबै छल तखन ओइ माछीक मन विर्ड़ोमे उड़ल विचारमे डुमि गेल छेलइ। भेल ई छेलै जे फुट-फुट सभ माछी चरौर करए गेल रहए, तहीकाल भुरकी जकाँ हवामे भूर भेल जइसँ विर्ड़ो जकाँ उठल, जे सुरकुनियाँ मारि अकासमे पहुँच गेल, ओही विर्ड़ोमे वेचारी माछी पड़ि गेल छल। जे बात मनमे उठलै। बाजल-

“जखन हवा तक संग दइले नइ अछि, सदिकाल विष-वर्षन करैए, तखन केना जीब आ अपन काजक पुरौनी केना करब?”

ओना, रानीमाछी समूहक बेथा-कथा सुनलक मुदा बाजल किछु ने। बाजल एतबे- “विचारल जाएत।”

विचारपर अपनो सहमैत मधुमाछीक समूह देलक। तत्काल सभ शान्त भऽ गेल। शान्तो केना ने होइत, कोनो कि गाम-गामक जत्था-जुलूस थोड़े छेलै जे राजधानी घेरऽ गेल छल, एक्केठाम छत्ताक समूह छै जइमे सभ बास करैए। मुदा रानीमाछी अपन परिवार, धन- सम्पैतक रक्षाक उपाय नइ करत तँ वंशो नाश हेतै आ सम्पैतोक क्षय हेतइ, तही डरसँ किछु विचारि काजो करब तँ छइहे।

सखी-सहेलीक बीच रानीमाछी भरमए लगल। पहिने अपन सखी सबहक बीच बिचड़ल। सखी भेल जे जे माछी मधु बनबैत आ सहेली ओ भेल जे भ्रमण करैत रस चूसि-चूसि पीबैत मुदा मधु संचय नहि करैत।

जइसँ मधुमाछीक शकल-सूरत रहितो विष-वमनेटा करैए संगे मधुमाछीकेँ कलंकित सेहो करैए। मुदा तैयो रानीमाछी ओकरा बिढ़नी-माछीक श्रेणीमे रखितो संगे रखिते अछि।

तँए कि ओ रानीमाछीक रक्षक नइ छी सेहो बात नहियेँ अछि। ओकरे चलैत छत्तोक रक्षा होइ छै आ माछियोक। नइ तँ तेहेन बीजकाठी लोक भऽ गेल अछि जे मधुक संग माछियोकेँ उला-पका कऽ खा जाएत।

रानीमाछी अपन सखी सबहक बैसार कऽ बैसकमे प्रस्ताव रखलक-

“हम सभ केना जीब, जइसँ धरतीपर अपन वंशो रहत आ मधुसँ जनसेवो जीबित रहत।”

बुढ़-पुरान मधुमाछी रानीमाछीक संग बैसार करऽ लगल आ जुआन-जहान आन-आन माछीक संग। एकसँ एक योद्धाक बीच बैसार गरमा-गरमीक संग शुरू भेल। एकटा माछी बाजल-

“राजाकेँ राजक फीकिर रहै छै रानीकेँ किए ने रहतै।”

कहि वेचारा चुप भऽ गेल। आगू किछु बजबे ने कएल जइसँ समूहक बीच प्रश्न-पर-प्रश्न लदा गेल। भाय, राजा-रानीमे कि फरक छै,

राजाक पत्नी जीबितमे रानी भेल आ मुइला पछाइत माने विधवा भेला पछाइत राजा। मुदा से भेल नहि, पहिल प्रश्न उठा प्रश्नकर्ता चुप भऽ गेल छल। चुप कि ओहिना भेल आकि अपन विचार पुरा कऽ भेल। समूहमे सभ रंगक माछी रहबे करए। पहिल प्रश्नक समर्थनमे दोसर बाजल-

"हँ केहेन बढ़ियाँ तँ प्रश्न अछि। प्रश्नकर्ता अपन मनक वेग नइ बहौत तँ अनका वेगे काज चलतै। सुनिनिहार सुनलक कि नइ सुनलक, आकि सुनि कऽ अनठौलक तेकर दोखी प्रश्नकर्ता थोड़े भेल.!"

एक तँ ओहिना दोसराक बले बल अबै छै, तैपर विचारक संगबे तँ आरो रंग पकड़ा देलकै। प्रश्नपर विवाद उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। भाय, बैसार छिऐ, एके आदमी घरक विचार अपना विचारे अपन जीवन-मरण देखैत करैए, मुदा वएह जखन कोनो सामाजिक बैसारमे जाइए तखन ओ समूह बनि समस्याक समूल तकैए। जाबे समूल नइ भेटत ताबे जे किछु विचार हएत ओइमे कचड़ा रहबे करत...।

देखिते-देखिते बैसारमे घोल-फचक्का शुरू भेल। ने केकरो बात कियो सुनिनिहार रहल आ ने एको मुँह चुप रहल। सभ अपने सूरे अनधुन बजैत। कियो सुरसा जकाँ सुरसुराइत तँ कियो गबदी मारि खुरखुराइत। सभ अपन-अपन ताकक तकिया बना घरक ताख दिस नजैर गड़ौने। मुदा बैसारो कि बैसार भेल, महादेवक बरियाती जकाँ सभ रंगक माछी बैसने देव-दानव एकत्रित भेल। देव मन्दिरमे जहिना हजारो-लाखो-करोड़ो अपन-अपन बेथा ऐ आशासँ कहैत जे सुफल पएब, तहिना।

सभकेँ अपन जिनगी अपन भविस छइ। सामंजस करैत एकटा अधवेसू बिढ़नी माछी बाजल-

"भाय, सभकेँ अपन-अपन ढोलो आ घेघो अपना-अपना गरदेनमे लटकल छह, केकर के सम्हारबहक.! तँए सभ मीलि एहेन बाट बनाबह जइसँ सभ बटोही बनि बटगवनी गबैत अपना घरवारमे शान्त-चित्त

जीबैत रही।"

तेसर माछीक ऐ विचारसँ गुलगुलाइत शोर शान्त दिसक बाट पकड़लक। मुदा बीच-बीचमे तैयो ओहिना उठि जाइ जहिना झगड़ाक पछाइत गारि-गरौबैल होइ छइ। भाय, गारि-गरौबैल चलैत मारि-मरौबैल भेल, मारि-मरौबैल भेला पछाइत फरिछा गेल। जे जेरगर छेलह से पटका मारलह। मुदा जे गारि-गरौबैलक पाछू पड़ि गेल तेकरा छत्तामे किए खोंचारै छहक आकि गोला मारै छहक। मुदा से भेल। गुलगुली गुणगुणी दिस बढ़ल। सभ अपन-अपन बेथा-कथा अपने-अपने गुणऽ लगल। मुदा ओझरी तेहेन रहै जे सोझरेबे ने करै, जइसँ गुण-गुणी करवनो-करवनो गुलगुली दिस बढ़ि जाइ तँ करवनो-करवनो सुनसुनी दिस। पोखैरक पानि जकाँ थीर होइत आवाज देखि चारिम माछी बाजल-

"भाय, ओझरी ओना नइ छुटतौ। छुछुनरिक मंत्र जकाँ उनटा गिनती करए पड़तौ।"

कहि चुप भऽ गेल। मुदा तेकर असैर भेल। भेल ई जे अधिजन ओहने रहै जेकरा साए तक गनऽ अबै। मुदा अभ्यास नइ रहने थोड़े-थोड़े धकमकेबो करइ। किछुकेँ जे अभ्यास रहै ओ दुनू हाथे थोपड़ी बजा देलक। जेकरा साए तक गनल अबै ओ सहजे कनी धकचुका गेल मुदा जेकरा साफे नइ गनऽ अबै, ओ रामधुन जकाँ थोपड़ी बजबए लगल। मुदा चारिम माछी जे बाजल छल 'छुछुनरिक मंत्र' ओकरा बुझैमे अपने धकमकी आबि गेलै जे थोपड़ीकेँ तँ दू-दिसिया मुँह होइ छै.! नीको काजकेँ लोक थोपड़ीक संग सुआगत करैए आ अधलोक संग सेहो थोपड़ी बजा खिल्ली उड़बैए.! विचारमे विचड़न करैत चारिम माछीक रंग-रूप देखि पहिल माछी, जेकर पहिल सबाल छेलै, वएह समैयक किल्लतक दोख लगबैत बाजल- "भाय, दुखे कि सुखे मुदा भरि दिनक थाकल-ठेहियाएल सभ छह, सुतै बेर भऽ गेल तँए सुतनहि सभ दुख बिसरबह। ऐगला दिनक आगूक विचार करैक समय राखह।"

पहिल माछीक बात सुनि बेदम भेल मुरजन माछी सभ साँस छोड़लक। हरे-हरे कऽ बैसारसँ उठि सभ अपन-अपन शयनकक्ष दिस विदा भेल। सभ अपन-अपन हन्नामे पहुँच मनमना गेल मुदा तीनटा माछी नै मनमनाएल। अपन-अपन हन्ना छोड़ि तीनू निकलल। निकलबो केना ने करैत, जेठ मासक जरनी काजेटा नइ ने जरबै छै, पेटो जरबै छै आ सुतनियोँ जरबै छइ। जहिना बाट-घाटमे नवको यात्री आ पुरनो यात्रीक आ संगियोँ साथीक भेँट होइत तहिना तीनूक भेल। परिचय होइते तीन मन एकठाम ओहिना भेल जहिना बरियातीकेँ होइत। बरियातीमे जहिना बाघ-बकरी एके घाट नहाइत तहिना तीनू एकठाम बैस अपन जीवन-लीलाक चर्च शुरू केलक। पहिल बाजल-

“जखन मरैयेक बेर आबि गेल तखन मछही तराजूपर जे जोखाइत रहब तइसँ नीक ने जे सोना-चानीक तुलापर तौलाइ?”

दोसर-तेसर बाजल किछु ने, बजबो केना करैत अगुतेलहा पंच थोड़े छल जे पहिनहि बाजि दैत जे ‘बुझि गेलियह बुझि गेलियह, तोहर मनक बात बुझि गेलियह।’ तेतबे नइ रहै, मनमे ईहो उठैत रहै जे केहनो दुख आकि बिपैत किए ने हुअए दोसर-तेसरक बीच बजने ओकर भार कमऽ लगै छै, आ कमैत-कमैत ओइठाम पहुँच जाइ छै जैठाम मानव-जनित दुख आ दैव-जनित दुखक सीमा पकड़ा जाइ छइ। तँए जे प्रश्न प्रश्नकर्ताक अछि ओइ प्रश्नक निदान सेहो ओकरा मनमे हेतइ। भलेँ ओ नइ बाजि पबैत हुअए।

किछु काल चुप रहला पछाइत दोसर माछी बाजल-

“भाय, तोहर विचार कनी-मनी बुझि पेलियह, कनी-मनी नइ बुझि पेलियह।”

‘कनी-मनी बुझि पेलियह’ सुनि पहिल माछीकेँ सवुर भेलइ। ओना, सोलहन्नी सवुर नइ भेल, मुदा किछु तँ भेबे कएल। सवुर होइते मन

विचड़ए लगलै। मनमे उठलै जे भरिसक भाषा दुआरे नीक जकाँ नहि बुझि पेलक। तँए जँ सोझ-मतिया सोझ-बतियामे कहबै तँ नीक जकाँ बुझि जाएत। बाजल-

"भाय देखहक, अपना सभ तँ सहजे माछीक श्रेणीमे छी, बुझिते छहक जे एकटा माछी ओहन होइए जे गाछपर रहैए, एकटा ओहन होइए जे तीसी फूलपर बास करैए, एकटा ओहन होइए जे गंदगीमे लेपटाएल रहैए, आ एकटा अपना सभ छह जे मौध सन अमृत बनबै छी मुदा कहबै छी माछीए।"

पहिल माछीक विचार सुनि दोसर माछीक मनमे जेना उपाय उपकलै तहिना बाजल-

"भाय, देखा-देखी संसार चलै छै, अपना सभ तँ सहजे माछी छी आ जे देश-दुनियाँक जनगण-ले अमृते पैदा नहि स्वर्णमय संसार बनबैक शक्ति सेहो रखने अछि ओकरो तँ माछीए बुझल जाइ छइ।"

दुनूक विचार सुनि तेसर माछी बाजल-

"देखह भाय, ई बात मानि गेलियह जे देखा-देखी संसार चलै छै, मुदा संसार तँ बहुरंगी अछि, तइमे तूँ केकर देखसी करबह से ते तोरे ने विचारऽ पड़तह?"

तेसर माछीक विचार सुनि पहिल-दोसरकेँ जेना झकझोड़ि देलक, तहिना दुनू एकेबेर मुँह खोलि बाजल जइसँ कियो सुनिनिहारे ने भेल। केकर के सुनत।

दुनू दिससँ विचार तेना उठल जे सबहक कानमे विचारक बदला झड़े पड़ल। तेसर बाजल- "एना जे सभ बजबे करबह तँ कहबहक केकरा आ सुनतह के? घेघ छल तोरा उछटि गेल मोरा.! अपन-अपन गरदेनक घेघ अपने सम्हारने हेतह।"

तेसर माछीक बात सुनि दुनू माछीक मुँह बन्न भेल। मुदा जहिना

तेसर अपन विचारपर विराम देलक तहिना पहिल आ दोसर सेहो देलक। जइसँ गुमा-गुमी, चुपा-चुपी पसरल।

मुदा किछु कालक पछाइत पहिल माछी गुमा-गुमी, चुपा-चुपी तोड़ैत बाजल- "एना जे चुपा-चुपी, धुपा-धुपी करबह तखन एकठाम बैसलह किए?"

पहिल माछीक विचारकेँ दोसर टीपलक-

"भाय, तूँ तँ एक नम्बरमे छह तँए पहिने तोहीं अपन विचार बाजह।"

बोलेसँ विचारो आ दिशो अबै छइ। मुदा फड़िछाएल मन पहिलक तँए बिनु बिलमेने बाजल-

"भाय, सभकेँ अपन-अपन जिनगी-ले अपन-अपन काज स्वतंत्र करए पड़तह, तखने अपन स्वतंत्र बुधि स्वतंत्र काज दिस बढ़तह। जखने स्वतंत्र काजक संग स्वतंत्र विचार चलऽ लगतह तखने जिनगीक मर्म बुझबहक।"

पहिलक विचार सुनि दोसर एते गम्भीर भऽ विचारए लगल जे बकारे बन्न भऽ गेलइ। मुदा तेसरकेँ जेना नीन आबऽ लगलै तहिना हफुआइत बाजल-

"भाय, आब सुतैबेर भऽ गेल, काल्हि-ले ऐगला विचार राखह।"

तेसरक बात सुनि दोसरक धियान खुजलै। खुजिते बाजल-

"एना जे कोनो चीज विचारै काल ओंघी लगतह, तखन तँ ई आशा तोड़ि लएह जे ऐ बेटासँ पोता हएत.!"

दोसरक बात जेना तेसरकेँ कबौछ जकाँ लगलै, तहिना लोहछैत बाजल-

"तूँ केना बुझै छहक जे हमरा ओंघी लागल अछि?"

सामंजस करैत पहिल बाजल-

“भाय, तोरा के कहै छह जे ओंघी लागल छह।”

तेसर बाजल-

“सुनलहक नइ?”

पहिल-

“ओ अपना मने कहलकह। तीन गोरे जखन ऐठाम छी तखन तीनूक ने एक मन हएत जइसँ तीनू तीन मन भारी हएब।”

तेसर माछीक तामस कमल। कमिते बाजल- “अपन भार हम तोरे दइ छिअ। जे कहबह अन्ध-भक्त जकाँ सेवामे लागल रहबह।”

अपन विचार दैत पहिल बाजल- “काल्हि भिनसुरका समय रहलह। तीनू गोरे संगे चलि रानीकेँ अपन सभ दुखनामा सुनेबै, तखन जे बाँहि-बगल करत तेकर विचार पछाइत करब।”

थोपड़ी बजा तीनू बैसारक विसरजन केलक।



तिथि : 07 मई 2015, शब्द संख्या : 1892

दनगर घास

कुसमय जहिना कोनो गाछीमे दिन-बिसरू गोटे मोजर निकैल टुकलाइत-जुआइत-कोसाइत आम पकि कऽ पूर्ण जिनगी पेब धरतीपर खसल केकरो भेटैत, जइसँ जहिना ओकर मन खुशियाइत तहिना सोनाय काकाकेँ सेहो भेलैन। अपन जिनगीक पचपनम बर्खमे एकटा नव विचार मनमे उठलैन। ओना, नव विचार नइ छेलैन, परम्परामे चलिए अबैत अछि, मुदा अपन जिनगीक अनुभवमे नव अनुभव भेने सोनाय काका नव बुझलैन तँए मन खुशियेलैन...।

एहेन नव विचार मनमे उठैक आ नव खुशी अबैक कारण की? कारण भेलैन दुरकाल समयमे जीबैक, माने एहेन समयमे केना जीब..?

जीबैले पहिल खाहिंस लोककेँ पेटक होइ छै माने भोजनक। केहेन हुअए भोजन ईहो मूल प्रश्न भेल। अन-पानि, तीमन-तरकारी, दूध-दही-घीक संग फलो-फलहरी तँ दूषित भइये गेल अछि तखन शुद्धता केना औत? जखन शुद्धते नइ औत तखन सही दिशामे स्वच्छ जिनगी चलत केना? दोरस हवा बहने जहिना मौनसून अबिसवासू बनैक उपक्रममे अबऽ लगैत तहिना सोनाय काका जिनगीकेँ अबिसवासू बाट पकड़ने देखलैन तँए सोचै-विचारैले मन मजबूर भेलैन। मजबूर होइते मनमे अनेको विचार एक संग उठि गेलैन, मुदा मन तँ मन छी, केकरो एकेटाक संग देत। चाहे साधु होउ आकि असाधु। अपन सभ सबालकेँ सेरिया कऽ चौपेत रोटीक पपड़ा जकाँ चाहे परती खेतकेँ जहिना कोदारिसँ उनटा-

उनटा छबे-छह उनटौल जाइए तहिना एक-एकटाकेँ सोनाय काका ओदारऽ लगला। पहिने अपन जिनगीक पपड़ा ओदरलैन। छह गोरेक परिवार अछि। माने दुनू परानी अपने, बेटा-पुतोहु आ दूटा पोता-पोती। गनल-गूथल तीन कट्ठा घराड़ी आ पाँच कट्ठा जोतसीम खेत अछि जे कोनो बेजाए नहि, मध्यम किस्मक अछि। मध्यम किस्मक खेतक माने भेल तीन फसिला उपजैबला।

अपन समटल ओकाइत, जइसँ समटल काजो आ जिनगियो सोनाय कक्काक छैन। छबो मुँह तँ खेबे-पीबे करत। मुदा तइ बिच्चेमे बड़का मोइन फुटैत रस्ता अवरूद्ध जकाँ भेल जा रहल छैन। अवरूद्ध ई जे अन्नक खेतीमे नव-नव चीजक सही उपयोग नइ भेने अन्न दूषित भऽ रहल अछि, जैठाम किसान परिवारमे दस बर्ख पुरान अन्नक रक्षाक बोध अछि ओ घटि रहल अछि...।

जैठाम दस बरखा-बीस बरखा घीओ आ मौधो सुरक्षित रखैक लूरि अछि तेकरो लोक बिसैर रहल अछि। बागुसँ अनाएल समय धरि अन्नक भण्डारन धरि जहर युक्त वस्तुक प्रयोग भऽ रहल अछि। ओना, सुरक्षाक दृष्टिये नीको अछि, मुदा उपयोगक बेढंगपनासँ गड़बड़ तँ भइये रहल अछि। तहिना पानियोँक दिशा-दशा बनियेँ रहल अछि। तीमन-तरकारीसँ खेबाक अधिकांश वस्तु एहने भेल जा रहल अछि। एहेन स्थितिमे केना जीब?

एकाएक पोखैरक असथिर पानि-हवा लगिते जेना डोलए लगैए तहिना सोनाय कक्काक मन डोलए लगलैन। जइसँ अखन धरिक जे जिनगी जीबैक सक्कत विचारक विवेक छेलैन ओ सिहरऽ लगलैन.! सिहरऽ लगलैन ई जे जिनगी नइ बाँचत, विवेकहीन भऽ जाएत। जहिना देहमे रोगक प्रवेश भेने मृत्युक शक्ति बढ़ऽ लगैत आ जिनगीक शक्ति क्षीणसँ क्षीणकाय हुअ लगैत तहिना हुअ लगलैन। खसैत मन ढलकैत पहाड़क चोटीसँ झहरैत विचार झहरऽ लगलैन...।

..जखन भँसैत धारमे छोट-छीन तनको-तिनको जान बँचा सकैए, पहाड़क तरहत्थीमे झाड़ो-झूड़क फूल-फड़ बँचा सकैए, तखन हम तँ पचपन बर्खक ओहन बुधिगर विवेकी छी जे डेगे-डेग पगे-पग अपन जाँघ असथिर रखैत मृत्युक मुहसँ किए ने बँचि सकै छी। ओना, हवाकेँ रोकलो जा सकैए, बँचलो जा सकैए। मुदा तइले विज्ञान पढ़ब जरूरी होएत, से तँ सोनाय काकाकेँ छैन्हे। कम पढ़ल-लिखल रहनौं काका एते बात तँ बुझिते छैथ जे जहिना अपन कुल-मूलक इतिहास अपने बुझने हएत तहिना अपन जिनगी अपने जिनगीक विज्ञान पढ़ने हएत। की खाएब, की पीब तइले खेबा-पीबाक उपाय जानि करए पड़त, से तँ सोनाय काका केनहिये छैथ, तँए मनमे जीबैक सवुरो छैन्हे। ईहो आशा छैन्हे जे जँ अपन अनुकूल नइ हएत, तइले बोन-झाड़मे बैरक फड़ तँ अनेरूआ रहिते छै, तहू खा किछु दिन गूदस कइये सकै छी, तखन अनेरे जे मनकेँ मारि ओछाइन धड़बै छी ई अल्लढ़पना भेल। अपनो जिनगीक आगू बाट विचारि धरऽ पड़त। मन थीर भेलैन। समैयक किरदानी देखि जे तामस मनमे छेलैन तेकरा पानि पीब थीर केलैन।

ऐगला जिनगीक माने भेल काल्हि-ले करब, तखने ने काल्हि दिन जीब पएब। असथिर मन होइते तमाकुल खाइक मन भेलैन। चुनौटीसँ तमाकुल-चुन निकालि सानि चुनबऽ लगला। मुदा तइ बिच्चेमे अपन जिनगीक चुनियाएल विचार उपकऽ लगलैन।

..ओना, चुनौटीसँ तमाकुल-चुन निकालि दुनूकेँ औंठाक घुस्सासँ नीक जकाँ चुना कऽ मिला नेने रहैथ, तँए दुनूक गरदा झाड़ैक मन भेलैन। दुनू तरहत्थीक बीच तेना समधानि-समधानि एक-दोसरक बीच पटकलैन जे सभ गरदा हवामे उड़ि गेल। मुदा वएह उड़ि कऽ नाक लग पहुँच सुरसुरी भरलकैन तँए छीक भेलैन। पेटक सभटा बिकार-हवा नाक-मुँह दुनूसँ निकललैन। मनो हल्लुक भेलैन। भाय, हल्लुके मन ने हल्लुक खेनाइ-पीनाइक संग हल्लुक रहनाइयो नीक बुझैए, से तँ सोनाय काकाकेँ रहबे

करैन। तँए बुधियो-विवेक ओते विचलित नहियेँ भेलैन।

सोनाय काकाकेँ मनमे उठलैन अपन काज, अपन परिवार आ अपन जिनगी। जिनगियो केतेटा, तँ छह गोरेक परिवारमे चारि गोरे काज करैबला दूटा टेल्हुक। टेल्हुक कि जे चारू गोरे जँ एक-एक कौरक घटबी कऽ लेत तहीसँ दिन-राति दुनू टनमन रहत। काजमे सुधार करऽ पड़त। तीन कट्ठा घराड़ीमे घर-आँगनसँ मालक थैर, घास-पात आ अगवास सहितमे दू कट्ठा अजवाइर अछि, एक कट्ठा चौमास अछि। चौमासक माने भेल सालो भरि तीमन-तरकारी उपजैबला खेत, तखन किए हाट-बजार दिस मुँह ताकब आ जहराएल-बिखाएल तीमन-तरकारी खाएब। अपन खेत अपन पेटक बीच समरस बनबैक जरूरत अछि। अपना खुट्टापर एकटा गाए रखने छी, जे छह मसुआ आमदनी अछि, आमदनियेँटा किए जे अपन भोजनो छी, मुदा ई केना बरहमसिया हएत? जँ से नइ हएत तँ आमदनी जे हुअए मुदा अपने केना जीब?

किछु क्षणक पछाइत सोनाय कक्काक नजैर थैरपर गेलैन, जाइते गाइक संग अठारह मासक गौड़ सेहो देखलैन। तीन मास पाल खेला तँ ओकरो भऽ गेल। खुट्टापर दूटा गाए रहत, छह गोरेक परिवारमे दूधेक धारमे बारहो मास बहैत रहब, करवनो घासक बोझ नेने घाट टपब तँ करवनो कुट्टीकट्टा-संगे झूलब.! खुशी भेलैन।

गाइक सेवा-ले सुखल चाराक संग हरिअर घासो, खनिजो पदार्थ आ अन्नो खुअबऽ पड़ै छइ। समुचित आहार गाएकेँ भेटत तखने ने ओ दूधक धार बहौत। तखैन? जोतसीम जमीन पाँचे कट्ठा अछि। तखन गाइक भोजन केना पुरत? अपन तँ भेल गाइक देल धन, मुदा ओकरो धनक तँ विचार अपने करऽ पड़त किने.! सोनाय कक्काक मन ठमकलैन। ठमैकते पत्नियोँ आ बेटोकेँ शोर पाड़लखिन।

भिनसुरका समय, घरे-अँगनामे छिड़ियाएल दुनू गोरे, लगले आबि

गेलैन। मुदा तैबीच जे आँगन बहारैत पुतोहु छेलैन, ओ अपन पुकार नइ सुनि बिच्चे आँगनमे बाढ़नि रखि कनसोह लइले दलानक देवाल लग कान सटा अखिहासऽ लगली। रघू तँ चुपेचाप आएल, बैसल। मुदा गोरहा पाथैत बुधनी गोबराएले हाथे आएल तँए पहुँचते बजली-

“कथीक हकवाहि छल, गोरहा पाथै छेलौं गोबराएले हाथ अछि। कहू।”

एक तँ भिनसुरका समय तैपर पारिवारिक विचार करब, तँए सोनाय कक्काक मन सरोवरक पानि जकाँ शान्त भऽ असथिर भेल रहैन, मुदा पत्नीक झटहा तँ लागिये गेल रहैन। बजला-

“गोबराएले हाथ अछि तँ की हेतै, कोनो कि खाइ-पीबैक अछि जे गोबराएल हाथ देखबै छी।”

पतिक झटहाकेँ झटवाहि करैत बुधनी काकी बजली-

“इहए गोबरधन पहाड़ किसुनजी ओढ़ि व्रजवासीकेँ जान बँचौने रहथिन किने.!”

पत्नीक बात जेना सोनाय काकाकेँ मनहर बनबए लगलैन तहिना मुस्कुराइत बजला-

“अपन गोबरधन पूजा बिसैर गेलौं जे दीयावातीक पराते गोबरक घर-आँगन बना, कोठी, ढक, बखारी बनबै छी आ ओइमे दूबि-धान सजा कऽ गोधन पूजा करै छी।”

बगलमे बैसल रघूक मन अकछाए लगलै। ओना, रघू तीस बर्खक जवान, पिता तुल्य रहितो माता-पिताक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पबैत। अकछाइत मुँहक सुरखी देखि बुधनियोँ काकी आ सोनाइयो काका अपन पाशा बदललैन। पाश बदलैत बुधनी काकी बजली-

“किए शोर पाड़लौं से पेटेमे राखब आकि उगलबो करब?”

पत्नीक विचार सुनि सोनाय काका गम्भीर भऽ गेला। गम्भीरता अबिते विचारलैन जे समैयक चर्च माने प्रदूषित होइत जिनगीक चर्च करब अखन उचिन नहि, एक तँ काजक समय छी, दोखर आड़िए-कोण बान्हैमे रहि जाएब, तइसँ नीक जे किए ने काजेक विचार करी। रघू दिस आँखि घुमा बजला-

"बौआ, परिवार तोरे छिअ, तोरे जिनगी देखि हमरो खुशीसँ दिन बीतत, तँए तोरा नीक जकाँ बुझि लिअ पड़तह जे कौल्हुका दिन हमर केना चलत, केहेन चलत।"

सोनाय काका जे सोचि बाजल होथि मुदा बुधनी काकी बेटाक कान्हपर भार अबैत बुझलैन। बुझिते मनमे उठलैन जे माए-बाप अछैत बेटा भार तर पड़ि जाए, ई केहेन माए-बाप भेल.! मनमे उठिते विचार झन-झना गेलैन। बजली-

"अखैन रघुआ कोन-जोकर अछि जे अपने देह छीपै छिऐ.!"

सोनाइयो काका बुधनी काकीक बातमे ओझरा गेला। ओझरा ई गेला जे अपन हाथ-जुति नइ छोड़ऽ चाहै छैथ, आकि अखनो दूधपीबे बच्चा रघूकेँ बुझै छथिन। मुदा अपन विचारकेँ बेटा दिस मोड़ैत बजला-

"बौआ, जेना-जेना परिवार बढ़तह तेना-तेना खरचो बढ़तह। माने ई जे खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ रहनाइ, पढ़नाइ-लिखनाइ, बिआह-दान सहित अनेको काज परिवारमे बढ़तह। तँए कमसँ कम अपनाकेँ एक सीमाक अन्तर्गत रखि परिस्थितिकेँ देखऽ पड़तह। चारि गोरे अखन घरमे कमासुत छी, आगू दिवरखौक नइ होइ तँए अखने नीक जकाँ विचारि काजक जड़ि मजगूत करैमे लगि जा।"

अन्ध-भक्त जकाँ रघू बाजल-

"बाबू, जाबे अहाँ दुनू गोरे जीबै छी...।"

रघूक बात सुनि सोनाय काका ओझरा गेला। ओझरा ई गेला जे

एकरा की बुझल जाए, कान्ह पटकब आकि उठाएब? मुदा बुधनी काकी अपन एकक्षत्र वर्चस्व देखि अठनियाँ हँसी हँसैत बजली-

“आब कि बेटा गरदेन उतारि कऽ पैरपर रखि देत तखन बुझबै। जहिना सभ दिन बेटा बुझैत एलिऐ तहिना ओहो माए-बाप बुझैत रहए, सहए ने भेल... ।”

झाँपन-तोपन करैत मेघ जकाँ सोनाय कक्काक मन हुअ लगलैन। करवनो होइन जे ई की भेल? बुढ़िया फूसि छोड़ि एकरा की कहबै। मुदा फेर होइन जे परिवारक गाड़ी तँ एक-सूत्रेसँ ने चलत। तँए सभकेँ अनुकूल दिशाक जरूरत पड़िये जाइ छइ। पत्नीक महतकेँ ऊपर रखैत बजला-

“बौआ, माए जे कहलखुन से नीके-ले कहलखुन। मुदा घर-परिवार ओहिना नइ चलै छइ। घर-परिवारकेँ चलैक अपन रस्ता छइ। रस्ताक दूटा मुँह अछि, एकटा अछि ‘बुझब’ दोसर अछि ‘करब’। तँए... ।”

पिताक विचार रघूकेँ नीक लगलै। मुदा बुधनी काकी महाभारतक वर्वरी जकाँ गरदेन कटा पहाड़पर जा बैसली। शान्त वातावरण देखि सोनाय काका रघूकेँ लगमे बैसबैत अपन पारिवारिक स्थिति बुझबैत कहलखिन-

“बौआ, आब तोहू घीगर-पूतगर भेलह, तँए अपना गुजर-जोकर लूरियो-बुधि आ बातो-विचार नइ रहतह, तँ जिनगी बेठेकान बनि जेतह। तँए जहिना अखैन तक जहिना परिवारकेँ विचारक वा विचारवान परिवार बना जीबैत एलौं, तहिना आगूओ जीबैत रही, यएह भेल जिनगीक धार। एकरा बुझऽ पड़तह।”

पिताक बात सुनि रघू ठमैक गेल। ओना, सभ बात रघू नइ बुझि पेलक, मुदा सोलहन्नी नइ बुझलक, सेहो तँ नहियेँ भेल। होइतो अहिना छै, कोनो गम्भीर विषयक कियो नाँगैर पकैड़ नचैए तँ कियो मुँह पकैड़। एहेन स्थितिमे के केकरा किछु कहत। सवहिं नचाबे राम गोसाँइ, नर नाचे

मरकट की माँही। मुदा से भेल नहि, पहाड़ेपर सँ बुधनी काकी बजली-

"गाममे केकरासँ हमर घर-परिवार अदूस रहल जे कियो आँखि देखौत।"

ओना, बुधनी काकीक बात सुनि सोनाय कक्काक मनमे कुवाथ भेलैन, मुदा सबहक तँ सीमा छइ। बेटा आगू विचारक बातपर पत्नीकेँ डाँटबो ओते नीक नहि, जेते विचारकेँ मोड़ि परिवारक अनुकूल बनाएब हएत। तँए मनक तामसकेँ अपन खून अपने मने-मन पीब रघू दिस मुँह घुमा बजला-

"बौआ, माए की कहलखुन 'अदूस परिवार' से बुझलहक?"

रघू चुप्पे रहल। बेटाकेँ चुप देखि सोनाय काका जिज्ञासु बुझि बुझबैत कहलखिन-

"अदूस परिवार ओ भेल जेकरामे कोनो दोख नइ छै, से निमाहब... ।"

'निमाहब' कहि सोनाय कक्काक मुँह ओहिना बन्न भऽ गेलैन जहिना बिजली गेने वत्तीकेँ होइ छइ। पिताक मुँह बन्न होइत देखि जेना रघूक मनक फड़की खुजल। बाजल-

"बाबू, मुँह किए बन्न भेल?"

बेटाक जिज्ञासा आ समैयक गति-विधि देखि सोनाय कक्काक मन तड़ैप उठलैन। मनमे उठलैन जे जेहेन समय भेल जा रहल अछि ओ एहेन दुरकाल बनल जा रहल अछि जैठाम एक संग अन्हर-बिहाड़ि, झाँट-बरखा, ओला-पाथरक संग ठनको खसै-खसैपर अछि, तैठाम जँ रघूकेँ सभ बात कहि देबइ तँ मन उबिअए लगतै, तइसँ नीक जे जे परिवारक अछि ओ केहेन अछि आ केहेन बनला पछाइत ओ समैयक संग चलत।

बजला- "बौआ, जखन समाजमे छी तखन बहुत बात बुझऽ देखऽ पड़तह, मुदा से नहि, लोके-लोक परिवार बनै छै, परिवारे-परिवार समाज

बनै छै आ समाजे-समाज देश-बनै छइ। ई भेल अपन जिनगीक बाट-घाट। अही बीच अपनो जीबैत चलबह जइसँ परिवारोकेँ जिनगी भेटतह आ ओहो जीबैत चलतह।"

पिताक विचार सुनि रघूकेँ जेना जेठुआ बम्बै आमक बोनेलहा सुआद भेटल होइ तहिना बिहुसि उठल-

"बाबू, अहाँ खाली दहिना हाथक ओंगरीक इशारा करैत ने चलू, जेते देहमे दम अछि तइसँ पाछू नै हटब।"

सौनक पहिल फुहार जकाँ सोनाय कक्काक मनमे पड़लैन। आँखि उठा रघूक आँखिपर दैत बजला-

"बौआ, एकाएक समयमे भुमकम आबि गेल अछि.! अइमे केना थीर भऽ कऽ रहबह, एकर परीक्षाक कठिन समय आबि गेल अछि।"

रघू बाजल- "ई तँ भेल संकट, मुदा एकर मोचन केना हएत से ते अहीं ने विचारि कऽ कहब।"

विचारक बाट बेटाकेँ पकड़ैत देखि सोनाय कक्काक मनमे स्वाति नक्षत्रक बून बाँसमे पड़ि गेने जहिना वंशलोचन बनि जाइ छै तहिना बुझि पड़लैन। छाती उघारि बजला-

"बौआ, आठ कट्ठा जमीनबला कियो अपन मोल बुझैए.! अपने सभ बिकाए चाहैए.! कीनिनिहारोक कमी छै, जे नइ कीनत। अहिना मनुखक खरीद-बिकरी दुनियाँमे होइ छै.! मुदा दुनियाँ-दारीक बात छोड़ह।"

बात छुटैत सुनि रघूकेँ मनमे भेल जे जखने बात छुटत तखने काज छुटत, जखने काज छुटत तखने घरक गति छुटत जइसँ परिवारक नोकसान हएत...।

मुदा ई नइ बुझि पेलक जे गामेक बाधक खेत जकाँ परिवारमे छोट-पैघ, नीच-ऊँच, धार-धूर सभ किछु रहै छइ। तहीमे जँ इचना माछ

जकाँ ओझरा जाएब तखन समाजक परिवार केना बनत?

विचारक जे दिशा अछि ओ काजक दिशाक अनुकूल चलैए। मुदा ऐठाम बोनिहारक ओकाइतबला सोनाय काका अपन स्वावलंबी जिनगी बना जीबैत एला अछि, आ आइक परिस्थितिमे केना ठाढ़ रहता, यएह विचार मनक मोइन बनि फुटऽ चाहै छैन, मुदा धकमका रहला अछि। धकमका ऐ दुआरे रहला अछि, जे दूटा बच्चा स्कूल जाइबला अछि ओकरा प्राइवेट स्कूल जाए देब आकि सरकारी। सार्वजनिक विद्यालयमे केतौ मकान नइ छै, तँ केतौ शिक्षक नहि, केतौ शिक्षक अछि तँ पढ़ौनिहार नहि...।

..एहेन स्थितिमे समयसँ मुकाबला करैक संस्कार पोतामे केना औत? मुदा लगले मन घुमि परिवारेक बीच आबि गेलैन। बजला-

“बौआ, जेतबे खेत-पथार छह तेकरे नीक जकाँ परेखह। केहेन काज आ केतेटा काज सम्हारैक शक्ति छह। तइ हिसाबसँ अपनाकेँ असथिर रखैत आगू बढ़ैक कोशिश करह।”

बिच्चेमे रघू टोनैत बाजल-

“बाबू, जाबे अहाँ मेहौत जकाँ परिवारमे छी, ताबे हम सभ पाइटे भेलौं किने, जेना-जेना अहाँ घुमब तेना-तेना हमहूँ सभ घुमब।”

बजैक बेगमे रघू बाजि गेल, मुदा ई नइ बुझि पेलक जे ई भेल अन्ध-भक्त। अहीठाम अबिसवास आ बिसवासक घाट छै, अबिसवासक घाटपर अन्धबिसवास सेहो बैसल अछि...।

सोनाय कक्काक मनमे ईहो नचैत रहैन जे बुधियारक काज बुड़िबकक खेलो तँ होइते अछि। जेना खुरपीक काज करैत माता-पिताकेँ देखि बालो-बोध अपनो हाथमे खुरपी लैत खाधि खुनऽ लगैए। अपना बुझने तँ काजे करैए मुदा ओकरा खेलब छोड़ि की कहबै। कहबो केना ने करबै, मातो-पिताक सोभावो तँ काजक नहियेँ छैन, बाल-बोधकेँ बोधबे

रहै छैन...।

मनक सभ काहो-कूह आ जालो-समाढ़कें फरिच करैत सोनाय काका बजला-

"बौआ, गाममे जँ लोक जेरगर गाए पोसौ चाहत तँ नइ भऽ सकै छइ। ओना, गाए अनमोल-रत्न छी, दूध सन वस्तु पैदा करैए, खेती-पथारीसँ जुड़ल उद्योग छी, मुदा गाम आ शहर-बजारक दू परिस्थिति अछि। जखन शहरमे नइ छी, तखन शहरक बात बुझनौं कोनो लाभ नहियेँ अछि।"

जेना रघूक तामस बजारवादपर उठल होइ तहिना ओही झोंकीमे बाजल- "हँ-हँ छोड़ू शहर-बजारकें, अपन गामक बात बुझा दिअ।"

गामक बात आ अपन परिवारक बात, दुनूक दू सीमा छइ। परिवारक सीमा परिवारक आँट-पेटसँ अछि, गामक गामक आँट-पेटसँ। मुदा गाममे रहै छी, गामक बात नइ बुझबै तँ गौंआँ भेलिऐ कथीक। तँए गामक बातकें विचार रूपमे आ परिवारक बातकें काज रूपमे चलब नीक हएत। रघूकें बुझबैत सोनाय काका कहलखिन-

"बौआ, मानि लाए कियो गाममे दसटा गाए पोसि उद्योग ठाढ़ करए चाहैए, तेकरा-ले दसटा गाइयक जगहक संग हरिअर चारा-ले घासक खेतीक संग सभ कथुक जरूरत पड़तै। मुदा अधिकांश परिवार अछि केहेन? केकरो घर-थैर बनबैक जगह नइ छै, तँ केकरो घास उपजबैक खेत। शहर गाममे ई अन्तर सोझा-सोझी अछि। गाममे घासक बिकरी नइ अछि, शहरमे अछि। तैसंग ईहो अछि जे जेकरा चीज छै तँ करताइत नइ छै आ जेकरा...।"

पिताक विचार रघूकें बेलक काँट जकाँ मनमे गड़ल। बाजल- "बाबू, छोड़ू गामक गप। जानए जअ आ जानए जत्ता। अपन परिवारक बात खाली बुझा दिअ जेते करैत रहब।"

एकाग्रताक बाट बेटाकेँ पकड़ैत देखि सोनाय काका नवका बबाजी जकाँ रामधुन जकाँ तोपि देब नीक बुझलैन। ओ ई जे साइयो काज आगूमे रहतै, तइमे जेते कएल हेतै तेते बीछि-बीछि करत। कहलखिन-

"बौआ, परिवारक हिसाबसँ अपना सभ किछु अछि। तँए कोनो उपार्जनक क्षेत्र बना खाली चलैक अछि जइसँ परिवार चलैत रहत।"

पिताक विचार रघूकेँ जँचल। बाजल-

"खेती-जोकर खेत नइ अछि, तहूमे रौदी-दाहीक आफद सेहो ऐछे.! तरवन?"

सोनाय काका रघूकेँ बुझबैत कहलखिन-

"कट्ठा भरि जे वाड़ी अछि जइमे डेढ़िया परहक कलसँ पानियोँक काज भऽ जाइए, ओइमे बरहमसिया तीमन तरकारीक खेती केने बजारक जहरेलहा तीमन-तरकारी नइ कीनए पड़त। संगे परिवारमे जेते गोरे छी, तइ हिसाबे दूटा गाए परियाप्त भेल। नमहर काजसँ नमहर आमदनी हेबे करत, मुदा तइले नमहर खर्चक संग समैयोक तँ एकभगाह खर्च चाहबी करी...।"

पिताक बात सुनि रघूक मन जेना थीर भऽ गेल। मने-मन हिसाब जोड़ए लगल जे दूटा गाएकेँ खुअबै-पीअबै, दुहै-गाड़ै आ थैर-गोबर करैत परिवारक जेते गोरे छी, सबहक दिन खटि जाइए। छबे मास नइ ने तेकर पछाइत तँ दूटा दूधारू गाए खुट्टापर भइये जाएत। रघूक मन असथिर भऽ गेल।

बाजल- "परिवारक लोकक समस्या समाधानक उपाए भऽ गेल, मुदा जे उपाइयक साधन भेल तेकर समाधानक उपाय केना हएत?"

योजनाबद्ध ढंगसँ अपनाकेँ चलबैत आबि रहल सोनाय काका बजला-

"बौआ, गाए पोसैले थैर-घर छहे, सुखल चारा-ले गहुमक भूसी

कीनि लेब, दवाइ-दारू बजारेमे भेटैए मुदा, हरिअर चाराक जोगार बिसवासू ढंगसँ करए पड़तह।”

पिताक बात सुनि रघू टपैक पड़ल-

“से केना करब?”

हरिअर चाराक चर्च करैत सोनाय काका बजला-

“बौआ, हरिअर चारा एकटा भेल घास, दोसर भेल दुधिया घास। दुधिया घास दनगर चारा होइए। तँए नीक हेतह जे मक्के दुधिया घास छी जे बारहो मास उपजैबला घास छी। तीन खलमे पाँचो कट्ठाकेँ बाँटि तीनू समैयक घास चक्रवत करैत रहब, दूधारू घास उपजबैत रहब, दूधारू गाए दुहैत रहब, दुधिया जिनगी जीबैत रहब, दूधखौका दूधा-वैष्णव कहबैत रहब।”



तिथि : 13 मई 2015, शब्द संख्या : 2775

सझिया खेती

छोट-छीन गाम किसुनपुर। मुदा छोट-छीन ओहन नहि जे एकघरिया होइ। एकघरियाक माने भेल जे केतौ कोनो गाममे एक मैनजनीक आकि जवारेक बीच भोज-भातमे कोनो गाममे जँ एको घर रहल तँ ओकरो हिसाब भोजक गाममे भइये जाइ छइ। तहूमे जँ कोनो कारणे एकघरिया एकजना रहला आ भोजमे उपस्थिति नइ भेला, तँए भोजैत गामक सोलहन्नी खेनिहारक हिसाब नइ करत, सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। भलेँ अपन उगरल वौसक ढोल नइ पीटैथ ओ फराक भेल। चाहे गामक कियो खेने होथि आकि नहि।

मुदा से नहि, 1952 इस्वीसँ किसुनपुर पंचायत रहल, ओहन पंचायत नइ रहल जे एक गाममे दूटा, तीनटा आकि चारिटा पंचायत एके गाममे हुअए। ओहन पंचायत तँ किसुनपुर कहियो ने भेल मुदा एते तँ भेबे कएल जे हरेलहा-भुतियेलहा टोल-टपरा सहित सातटा गाम मिला पंचायत तँ बनबे कएल।

ओना, जइ हिसाबक माने जइ तरहक पंचायतक संख्या बढ़ऽ लगल तइ हिसाबे पंचायतक गाम सभ कटऽ लगल, अबैत-अबैत दू गाम मिला किसुनपुर पंचायत बनले रहल।

ओना, दुनू गाम समकश, मुदा शुरूसँ जे किसुनपुर नाम रहल से रहबे कएल। मुदा टोल-टपरा तैबीच एक-दू-तीन पंचायत टहैल आएल।

वएह छोट-छीन गाम जे गाम तँ गामे रहल जे पंचायत घटैत-घटैत

दू गामपर चलि आएल आ आब दुनू गामक सझिया नाम पंचायतक होउ, तइले बखेड़ा ठाढ़ भेल अछि। यएह दृश्य सुबल, सुमत आ सुकृत्तिक बीच तीन दिनसँ उठल अछि। तीन दिन पहिने पंचायतक नामकरणक आवेदन ऑफिसमे पड़ि गेल, तँए छोट-छीन गाम किसुनपुर तीनू गोरेक मनमे उठऽ लगल।

आने दिन जकाँ दोसैर साँझमे तीनू गोरे- सुबल, सुमत आ सुकृत्ति-क जुटान भेल। गामक टटका घटना, दू दिन तीनू गोरे आवेदनकेँ सेरिया कऽ बुझैमे लगौलक। तेसर दिन जखन रंग-रंगक चर्च मनमे घोंसियाएल तखन तीनूक मन फुरफुराएल, जे नइ अनका-ले तँ कम-सँ-कम अपनो हित-अपेछित, गौंआँ-समाज-ले तँ किछु विचार करब। सुबल बाजल-

“भैयारी, गाम बँटेने तँ समाजो बँटि जाएत.!”

ओना, ‘भैयारी’ सुनि सुकृत्तियो कान ठाढ़ केलक, मुदा सुमतक लुसफुसाइत मुँह देखि अपन मुँह चुपे रखलक।

ओना, सुवलोक नजैर सुकृत्तिपर सँ ससैर सुमतिये दिस बढ़ि गेल। नजैर मिलिते सुमत बाजल-

“भैयारी, गाम बँटेने समाज नइ बँटाइ छै, गामक सम्बन्ध माटि-पानि, गाछ-बिरीछ इत्यादिसँ निरमित होइ छै आ समाज मनुख निरमित जिनगीसँ।”

ओना, गामक टटका समाचार- पंचायतक नामकरण- अछि तँए जेतए-तेतए रंग-बिरंगक चर्च अहीपर चलए लगल। कोनो समाचार पत्रमे छपल-

‘जेते धनीकगर अछि ओ एक गाममे भऽ गेल आ जेते मझोलका आ बोनिहार अछि ओ एक गाममे पड़ि गेल.!’

समुच्चा अकासमे तेहेन ने हवा पसैर गेल अछि जे पुरबा बहैए आकि पछबा, उतरंग बहैए आकि दछिनाहा तेकर कोनो थाहे ने।

अकासो तँ अकासे छी। धरती थोड़े छी जे कोनो हवा बहौ, गाछ-बिरीछ अपन पातसँ ओकरा निवेदित करैत आगू बाट धरबैत रहैए। मुदा अकासक संग तँ से नइ अछि। करवनो कास-पटेरक फूल सेने उड़ैए तँ करवनो महाकाश बनि धरतीपर ठनका-पाथर खसबैए...। गपे-सप्पमे समय ससैर गेल, तीनू गोरे अपना-अपना ऐठाम गेल।

चौकक सटले माने दस लग्गा हटि कऽ एकटा खाली घर अछि, माने ओहन घर जेकर घरवारी दिल्लीमे घर बना ऐ घरकेँ बिसैर ओइ घरमे रहैए। पक्काक घर। चाकर ओसार। वएह बैसारक जगह। घन्टा-दू-घन्टा तीनू गोरे बैस गामक गतिविधि गामक लोकक बीच केहेन अछि, अपनामे विचार-विमर्श सभ दिन करिते अछि। ओना, तीनू गोरे- सुबल, सुमत, सुकृत्ति- तीन जातियोक आ तीन टोलोक, मुदा तीनू एक उमेरिया। किछु मास किछु सालक अन्तर, तँए छोट-पैघ माने उमेरक हिसाबसँ, तीनूक मनसँ हरा गेल आ संग-तुरियाक रूप पकैड़ लेलक, जइसँ सासुरक चौठारीसँ लऽ कऽ देश-दुनियाँक चौठारी तकक विचार-विमर्श अपनामे करिते अछि। ओना, एकटा बात आरो बीचमे अछि, किछु मास वा किछु साल वा बर्खक एकटा अर्थ ईहो होइए जे दिनक टुटल मास किछु मास भेल आ सालक किछु मास टुटल सेहो किछु साल भेल। आ दोसर, किछु मासक माने भेल- दू-चारि-छह मास, तहिना किछु सालक माने दू-चारि-पाँच साल भेल। तँए ऐठाम पहिलुका माने किछु दिन टुटल मास आ किछु मास टुटल सालसँ अछि।

शुरूक दिनमे तीनूक माता-पिता गामक स्कूलमे नाओं लिखा देलखिन। किछु छी तँ विद्यालय छी, पढ़ल-लिखल जँ हरो जोतत तँ कागजक पतियानी जकाँ सिरौड़ सोझ हेबे करत। एकठाम रहने, खेलने-कुदने, खेने-पीने, घुमने-फिरने, तीनूक सामाजिक जातिमे ह्रास अनलक। जइसँ तीनूक घर-आँगन आएब-जाएब, खाएब-पीअब, काज-उदम, पाबैन-तिहार संग मिलि मनौने समाजक बीच, माने गामक बीच, एक

बेवहारिक नव समाजक रूपमे बनियेँ गेल अछि। नव समाजक माने ई जे जइ गाममे जातीय दूरी एते बनल अछि, जैठाम एक-दोसरक हाथक पानि नइ पीबऽ चाहैए तैठाम जँ एकसत्तैरमे एक ओसारपर एक-दोसरक ऐठाम तीनू खेबो-पीबो करैए आ बातो-विचार एक रखने अछि।

गामक स्कूलसँ पचमा पास केलाक पछाइत सुबलक मनमे उठल जे आन गाम जा पढ़बसँ नीक खेतो-पथार ऐछे, खुट्टापर महींसो ऐछे तखन चाहबे कि करी, जेकरा खाहिंस छै ओ नोकरी-ले पढ़ह। तँए नीक जे अखड़ाहा खुनि कुश्ती लड़ैत रहब, ओहिना तँ खलीफा नइ बनि जाएब। तैसंग देहमे गुद्दो बढ़त आ खूनो बढ़त जइसँ तागतो बढ़त। जुगो तेहेन आबि गेल अछि जे सौओ-पचास लऽ कऽ घरसँ नइ बहरा सकै छी कि आबि सकै छी। से नइ तँ अपन अखड़ाहासँ खेत-पथार धरि खूब मेहनत करब, जहिना दण्ड-बैठक केलासँ देहमे तागत अबै छै तहिना ने कोदारियो-खुरपी चलौने अबै छइ। जेते दिन जीब निरोग बनि कऽ जीब। अनेरे दुनियाँक चक्कर-भक्करमे कथीले पड़ब, तइसँ नीक जे अपन नून-रोटीक जोगार करैत रहब, चैनसँ दिन कटैत रहत, मनमाफित खुशीसँ जिनगी जीबैत रहब...।

ओना, सुबल स्कूल छोड़ला पछाइत माता-पिताक संग पारिवारिक काजमे लागि गेल मुदा सुमतो आ सुकृत्तियो आगूक पढ़ाइ दिस बढ़ल। सुमत आ सुकृत्तिक सम्बन्ध बढ़ैत-बढ़ैत हाइ स्कूल तक पहुँच गेल, मुदा सुबलक सम्बन्धमे कमी आएल। ओना, कमीक अनेको कारण भेल, एक तँ स्कूलक जिनगी दोसर अखड़ाहाक जिनगी। मुदा असली कारण भेल स्कूली शिक्षा आ बेवहारिक शिक्षाक बीच दूरी। दुनूक दू दिशा, दू उदेस अछिए। तैसंग काजोक दूरी बढ़ल। सुबलक किसानी जिनगी शुरू भऽ गेल मुदा सुमतो आ सुकृत्तियो स्कूली विद्यार्थी-क-विद्यार्थी बनल-क-बनले रहि गेल।

मैट्रिक परीक्षाक फार्म सुमतो आ सुकृत्तियो भड़लक। बीचमे

जबरदस बाढ़ि आएल, सुमतक घराड़ियो आ खेतो बेसी चपगर तँए, घरो खसि पड़लै आ चासो दहा गेलइ। ओना, सुवलो आ सुकृत्तियोक उपजा-वाड़ी दहेलै मुदा घर बँचल रहलै। फार्म भरैसँ लऽ कऽ परीक्षाक बीचक समय सुमतक एहेन भऽ गेलै जे पढ़ाइक संग परीक्षो छुटि गेलइ।

आब ऐगला साल फेर फार्म भरऽ पड़त तेकर पछाइत परीक्षा हएत। मुदा तइ बिच्चेमे परिवारक चक्का पाछू दिस ससैर गेल। अखन मैट्रिकेमे छी जँ बी.एओ तक पढ़ऽ चाहब तैयो पाँच बर्ख समय लगत, टुटल घरसँ खर्चा जुटाएब, हड्डीसँ खून निकालब हएत। पाँचे बर्खमे परिवार ओतए पहुँच जाएत, जेतएसँ अबैमे बहुत समैयौ आ श्रमोक जरूरत पड़त। तइसँ नीक जे ढेरबा जवान भइये गेल छी, जाबे चेतन जवान बनब, ताबे कनी दिके-कि-सिके, सम्पैत तँ अपनो ऐछे, किए ने अपन सुभ्यस्त जिनगी बनबैक परियास करी...। यएह सोचि सुमत मैट्रिकक परीक्षा छोड़ि अपन जिनगीक बाट पकड़लक।

जइ दिन सुकृत्ति मैट्रिकक सर्टिफिकेट नेने कौलेजमे नाओं लिखबऽ गेल तइ दिन सासुर जाइत धीआ जकाँ गामक सखी-बहिनपाक नाच मनमे हुअ लगलै। नाच ई हुअ लगलै जे गामक एक बैचमे तीन गोरे विद्यालयमे भर्ती भेलौं, सुबल गामेमे अखड़ाहा खुनि देहक शक्ति-ले डण्ड-बैठक करैत कुश्ती करए लगल तँ सुमत दिनक मारल वौआ रहल अछि.! अही माटि-पानिक ने हमहूँ छी जे आगू पढ़ैले बढ़ि रहल छी। इत्यादि...।

सुकृत्तिक मनमे एहेन विचार किए उठितै जे सभ लोककेँ समाजक खुट्टा बनि समाज-ले ठाढ़ हुअ पड़त। गाम की छी एकरा नीक जकाँ चिन्हऽ पड़त। मुदा अनठेकानलो गोटे गोलासँ जहिना पाकल आम टुटि गोलवाहक हाथमे अबिते खुशी होइ छै तहिना सुकृत्तियोक मनमे उठलै। किए ने उठैत, बेटा भेने तँ लोक राज-पाट लूटा दइए, मुदा तैबीच एकटा बात तँ ऐछे जे 'बेटा जनमब' आ 'बेटा बनब' दुनू दू छी। अनठेकानले किए ने कौलेज प्रवेश दिनक खुशी सुकृत्तियोकेँ भेल होइ मुदा मनमे एते

तँ उठबे केलै जे कौलेजक शिक्षाक माने एतबे नइ होइ छै जे अपन सिलेवसे भरि अपनाकेँ समेट अध्ययन करी। बल्की कौलेज-शिक्षणक माने एक स्तर होइए, ओइ स्तरक अनुकूल जिनगीक उपयोगीक हर क्षेत्रक अध्ययन करब होइ छइ।

मुदा विचारक दौरमे सुकृत्तिक मन बेसी काल नै अँटकल, अँटकबो केना करैत, पहिल दिन कौलेजक दू-महला मकानपर नजैर पड़लै जइसँ कनी-कनी थरथरी आबिये गेल रहै। माघ मासक बच्चाकेँ जहिना जाड़सँ दुनू ठोर थरथराइत रहै छै, जइसँ अपन मनक पीड़ा माता-पिताकेँ सुपुट बोलमे नहि बुझा पबैए तहिना सुकृत्तियो थरथराइत मन विवेकक विचार नीक जकाँ बुझैले नइ अँटकल। मुदा कौलेजमे प्रवेश तँ भइये गेल।

सात दिनक पछाइत जखन सुकृत्ति अध्ययन करैक खियालसँ कौलेज दिस डेग उठौलक तँ अपन परिवारक विचित्र-चित्र आँखिक सोझमे लटैक गेलइ। लटैकते अपन दायित्वक बोध जगलै। अपन पैतृक परिवारक पहिल सीढ़ीपर डेग उठि रहल अछि, अहिना उठल चलैत रहए। पहाड़सँ झरना होइत झहड़ैत पानि जहिना गलीए-कुचीए बहैत विशाल धारमे परिणत होइत समुद्रमे चिर स्थायी भऽ जाइए तहिना ने जिनगियो छी।

इकोनोमिक्स ऑनर्सक संग सुकृत्ति कौलेजसँ निकैल दुनियाँ दिस तकलक। मुदा अध्ययनक विषयक प्रभाव अध्ययन कर्ताक जिनगी आ विचारपर कमो-बेस पड़िते अछि। तहूमे सुकृत्तिकेँ अर्थशास्त्र मनलग्गू विषय भऽ गेल। किए ओ साहित्यिक पत्रिका पढ़त आकि गीत-संगीतक पोथी। जखन-कखनो समाचार पत्र पढ़बो करैत तँ सोझे ओइ पन्ना दिस नजैर दौग जाइ जेतए खेत-पथारसँ लऽ कऽ कल-कारखाना, बैंक-बेपार धरिमे आर्थिक चर्च रहैत। मुदा जखन अपन समीक्षा माने अपना परिवारक समीक्षा अर्थशास्त्रीय दृष्टिसँ केलक तँ अधजरूआ टार्च जकाँ भकइजोत भेल। दस बीघा जमीन अछि। करोड़ोक पूजी भेल। जँ

ओकरा खाली बेचि कऽ बैंकमे रखि देब तखन जेते बैंक सुइद देत तेते दरमाहाक नोकरी कहाँ भेटत। तहूमे देखै छी जे हजारक आँटा-चक्की चला दस गोरेक परिवार ठाठसँ चलैए, लाखक कारोवारी तँ आरो बढ़ि दस लाख-बीस लाखक बिआहो बेटा-बेटीक करैए, हमरा तँ तहूसँ बेसी सम्पैत अपने अछि...।

सक्कत मनसँ सुकृत्ति विचारि लेलक जे गामेमे रहब, हजारो उपयोगी कारोबार अछि जएह मन मानत सएह करब मुदा करब अप्पन कारोबार।

गाम अबिते, गाममे बास करिते सुकृत्तिकेँ मोन पड़ल गामक स्कूल आ स्कूलक संगी। ओना, ई विचार गाम एलाक छह मासक पछाइत सुकृत्तिकेँ जगल। शुरूमे माने, गाम एलापर जखन सुकृत्ति अपना नजैरे माने आर्थिक दृष्टिये विचारए तँ बुझि पड़ै जे किसानी जिनगी घाटामे चलि रहल छै, खर्चक अनुकूल उपज नइ भऽ रहल छै, तँए बिनु लगामक घोड़ा जकाँ अनेरो केकरो खेत देखि कहऽ लगैत-

‘ऐ खेतमे समयपर पटौनी नइ देलहक?’

तँ केकरो कहैत-

‘खादक दुआरे जजात गड़बड़ा गेलह.!’

तँ केकरो ई कहैत- ‘कीटनाशक नइ देलहक तँए पीलूए सभटा खा गेलह.!’

मुदा एक दिन बाताबातीमे सुकृत्तिक संग विवाद फँसि गेल। भेल एना- टमाटरक खेतमे एकटा किसान गलल-पचल फड़ो आ गाछो देखि पीड़ासँ पीड़ित रहैथ, तही काल सुकृत्ति अपन गाछी घुमि कऽ अबैत रहए। टमाटरक खेत देखि अपन पीड़ा जनबैत सुकृत्ति बाजल- “भाय साहैब, नीक जकाँ तर्दूत नइ केलिऐ?”

अपन कठिन मेहनैतसँ ओ किसान खेती केने छला जे पालामे गलि

गेल छेलैन, तैपर सुकृत्तिक बोल घापर नून छीटब सन हुनका लगलैन। खिसिया कऽ बजला- “ईह.! अनेरे भदबरिया बेंग जकाँ टर्र-टर्र बजै छैथ.!”

किसानक बात सुनि सुकृत्ति भरमे-सरमे चुपे रहि गेल। बाजल किछु ने। मुदा किसानो ऐ ताकमे अपन कानकेँ तकिया रखलैन जे आगू किछु बाजत तखन ने कड़ुएलहा तरकारी खाएत जे केहेन होइ छइ। तँए ओहो चुप रहला। हलाँकि सुकृत्तियो ओतएसँ विदा भऽ गेल।

रस्तामे मड़ुयाएल-मुरझाएल सुकृत्तिक मन ग्लानिसँ गलऽ लगल। अन्हार जकाँ जिनगीक रस्तामे पसैर गेलइ। अपने-आप धिक्कार मनमे उठलै। उठिते विचार जगलै जे हाइए स्कूलमे पढ़ने रही जे मनुख सामाजिक प्राणी छी। समाज बिना रहि नइ सकैए आ जँ रहबो करत तँ ओ या तँ देवते बनि रहत या नै तँ जानवरे बनि।

दोसर साँझक अन्हार जकाँ फेर सुकृत्तिक मनमे अन्हार बढ़ल। मुदा सौंझुका तरेगन जकाँ एकटा विचार मनमे जगलै। जगिते भक्क लगलै- नीको विचार केना केकरो देल जाए? चोटाएल साँप जकाँ सुकृत्तिक विचार नाँगैर पटकैत रहि गेल मुदा समुचित जवाब नहि पाबि सकल। अनायास मोन पड़लै सुबल आ सुमत। बच्चेसँ तीनू गोरे संगी रहलौं, समैयक चक्रमे तीनू छिड़िया गेलौं मुदा आइयो तँ तीनू गोरे अही गाममे छी, गामेक माटि-पानिपर जीब रहल छी। दुनू गोरे ऐठाम जा किए ने अपन अध्ययनकेँ बेवहारिक रूपमे प्रयोग करी। जेना मन आरो चमकलै। छोट-छोट बेसी रंगक खेती केने लाभक अपेक्षा श्रमक क्षय बेसी होइ छै, तँए जँ सझिया खेती रूपमे ऐकेँ बढ़ौल जाए तँ श्रमानुकूल लाभो बेसी आ बहुतायत उत्पादनो भऽ सकैए। किए ने अपन पुरान संगियोँ सबहक संग विचारक आदान-प्रदान करी। जाबे अर्थशास्त्रक सिद्धान्तकेँ बेवहारिक रूप जमीनपर नइ उतारल जाएत ताबे विषयक मोल की। जँ मोले नइ तँ अनेरे लोक पढ़त किए।

दुनू संगी- सुवलो आ सुमतो- स्नातक संगी- सुकृत्ति-कें देखिते दुनूक मन सौनक मोर जकाँ नाचि उठल। नचबो केना ने करैत, हेराएल ओहन संगी भेटल जेकर जरूरत समाजकेँ छइ। ओना, दू रस्ते संगी होराइत अछि, एक काजक दौड़मे, अगुआ-पछुआ आकि हेरा-भोथिया कऽ, आ दोसर हेराइत अछि अकाजक बनि। जेकरा बाट चलनिहार संग छोड़ि दैत अछि। मुदा से नहि, काजमे आब तीनू संगीक बिछुड़न भेल, जे ऐगला दिनक ऐगला काजेमे फेर संगी बनत।

सुकृत्ति पहिने सुमत ऐठाम गेल, ओना सुमतो अखैन तक समाजमे पहचान बना नेने अछि।

पहचान ई छै जे गामक भीतर जँ कियो ओहन लोक आबि जाइ छैथ, जिनकर अपन कोनो सम्बन्धी नइ छैन, ओ सोझे सुमतक ऐठाम पहुँच जाइ छैथ।

हेराएल संगीकेँ देखि सुमत दुनू हाथे दुनू बाँहि पजिया छाती-सँ-छाती मिलौलक। सुमतक संग सुबल ऐठाम पहुँचते सुकृत्ति देखलक जे जेना सीमाबंदीक विवादमे दू देशक सीमाकातक लोककेँ होइत, तहिना सुबलकेँ भऽ रहल छल।

कान बुच्च, घुट्ठी पातर आ भारी देह सुबलक देखि सुकृत्ति बाजल-

“भाय तूँ तँ गामक पहलमान जकाँ लगै छह.!”

जहिना कम पानिमे नावकेँ लग्गीक बदला पएरे-जाँघेसँ आगू बढ़ौल जाइत तहिना सुबलक मनमे सेहो भेल। बाजल-

“भाय, कान बुच्च दुनियाँ सुन्न। अपन गाम छी अपने गामक बीच खेती-पथारी करैत महींस पोसैत दिवस गूदस करै छी, अपन मनक मालिक छी अपना मोजेमे मनमौजीसँ जीबै छी।”

पारखी सुकृत्ति परखि गेल जे सुबल कोन जिनगी आ कोन झण्डा नेने समाजमे ठाढ़ अछि। किए ने अखने तीनू गोरेक बीच विचारि ली जे

भरि दिन जे जेतऽ रही मुदा साँझू-पहरमे सभ दिन एकठाम बैस सभ कियो अपनो आ अपन गामो-समाजक विषयमे विचार-विमर्श करी। सुकृत्तिक मनमे ईहो उठल जे समाजकेँ हमर केते खगता छै आ केते खगताकेँ हमरा बुते पुरौल हएत। तीनूक बीच समय निर्धारित भऽ गेल। निर्धारित समायानुसार तीनू गोरेक बीच अनवरत विचार-विमर्श शुरू भेल।

पहिल दिनक बैसारक पछाइत गाममे जेना नव जागरणक दीप नेँसा गेल होइ तहिना भरि गाम चकमकाएल। ओना, बैसारक दुनू घन्टाक समय चिन्हे–परिचयमे खतम भऽ गेल। जे भेल मुदा एक अध्यायक समापन तँ भेबे कएल। चिन्हा-परिचय पहिल दिन जरूरतो ऐछे, ऐ दुआरे जे जिनगीमे केकरा की बिसाएल आ केकरा की बिखाएल, तैसंग ईहो जे के केकरापर बिसाएल अछि आ के केकरापर बिखाएल अछि तेकर मुँह-मिलानियोँ तँ अहिना सम्भव अछि।

चिन्हा-परिचयक क्रममे सुकृत्ति सुबलकेँ पुछलक-

“भैयारी, दुनियाँमे लोक बुधिक पूजा करैत ज्ञान-शक्ति पबैए, आ अहाँ देहे-शक्ति पाबि एते मगनमे रहै छी एकर की कारण?”

बाल-बोधकेँ जहिना ठोरेपर ‘सीता-राम’ रहै छै जे असगरोमे सन्यासी जकाँ खेलबो करैत रहैए आ ‘सीतो-राम, सीतो राम’ करैत रहैए, तहिना सुबलमे बुझि पड़ल। साले-साल कातिक मासमे भागवत-कथा जोतखी कक्काक मुहेँ सुनैत सुबल एकटा कथा सीखिये नेने अछि, जेकर साले-साल ड्राइवरी लाइसैंस जकाँ रेनुअलो होइते रहल छइ। कृष्णकेँ गैबार-महींसवार मानि अपनोकेँ महींसवार बुझिते अछि, संगीक संग जहिना कृष्ण खेलाइ-धुपाइ छला तहिना बाध-सँ-अखड़ाहा धरि अपनो खेलेबे-धुपेबे करै छी.! तखन कमीए की रहल। बाजल-

“भैयारी, सभ सुख अही धरतीपर छै, भरि दिन कण्ठ फारि-फारि लोक चिचिआइत रहैए जे झूठ बाजब पाप छी। झूठ बाजब पाप छी।

मुदा अपन भरि दिनक काजसँ निचेन भेला पछाइत सौंझुका गायित्री-बन्धन जकाँ पाछू उनैट भरि दिनक जिनगीपर नजैर दइ छी, तखन कहाँ कखनो बुझि पड़ैए जे झूठ पाप छी। झूठ पाप ओकरा-ले अछि जे झूठ बजैए, ओकरा-ले किए पाप रहत जे झूठ बजिते ने अछि।"

सुबलक विचारक जिनगी सुकृत्तिकेँ सकताएल बुझि पड़लै। जहिना जइ घरक खुट्टा जेते सक्कत आ सुरेब रहल ओ घर ओते टिकाउओ आ सुन्दरो बनल रहैए तहिना समाज रूपी घर-ले सेहो खगता अछि। ओना, असारो सुरेब होइए मुदा जेकरा सक्कत कहै छिऐ वएह छी लकड़ीक शील-गुण। जेकरामे शील-गुण नइ रहत ओ असार ओहन लकड़ी सदृश्य छी जे भरि बरसाते कहिऔ आकि साल लगैत-लगैत तेहेन दिवरियाह भऽ जाइए जे माटिपर पएर रखनिहार अपने माटि भऽ जाइए.! तखन ओ अपने केना ठाढ़ रहत आ माथ परहक छप्परकेँ केना बँचा कऽ रखने रहत?

सुबलपर सँ सुकृत्तिक नजैर सुमतपर पड़ल। धारक बहता पानि जकाँ सुमतक जिनगी देखलक। देखिते किसान परिवारक आचार-विचारक महत बुझलक।

आइक युगमे केकरा एते पलखति छै जे अपन सख-सेहन्ता छोड़ि बाप-दादाक देल आचार-विचार जोगा कऽ रखत। जे चलि गेल से चलि गेल.! तँए विचारैक अछि जे ऐगला एकैसम पीढ़ीक बेटा-बेटी-ले खेबा-पीबासँ लऽ कऽ मन-मनोरथ धरिक ने प्रबन्ध करि कऽ रखैक अछि।

जिनगी की छी, यएह ने जे प्राण छूटल दुनियाँ छूटल.! मने-मन जखन सुकृत्ति गौर केलक तँ बुझि पड़लै जे समाजक धार अखनो ओइ रूपमे बहि रहल अछि जइमे नीक-सँ नीक विचार विचरण करैए। जरूरत अछि रस्तासँ ओकरा समेट धारमे प्रवाहित करैक।

एकाएक सुकृत्तिक मनमे सझिया खेतीक पन्ना उनटल। पन्ना

उनैटते चुप्पी टुटलै-

“भैयारी, मन जखन धन दिस बढ़ै छै आ सुधन भेट जाइ छै, तखन जे मनक तृप्ति होइ छै ओ बिआहक बरियातीक भोज आकि पीकनीकक एकांत भोजसँ थोड़े भेटत।”

सुकृत्तिक विचार सुमत तँ अदहा-छिदहा बुझलक मुदा सुबल महाभारतक अभिमन्युक संगी- भीम- जकाँ वौआइत रहल। वौएबो केना ने करैत, जैठाम सुकृत्ति सन स्नातक संगी, सुमत सन समाजक विचारवान संगी रहत, तैठाम अपन माथ-खपाएब सुबल नीक किए बुझैत। अपन निरमौल अपन दुनियाँ छै, जखैन-जखैन पलखैत होइ छै तखैन-तखैन कृष्ण-कृष्ण करैए, नइ पलखैत होइ छै तँ काज-काज करैए। आखिर काजे ने काम-धाम आ कामे-धाम ने राम-राम.!

अपन विचार रखि सुकृत्ति दुनू संगीक विचार बुझऽ चाहलक। सुमत सुबल दिस तकलक तँ बुझि पड़लै जे भरिसक सुबलक मन कदमक गाछपर मचकी झूलै छै तँए भरिसक सुकृत्तिक विचार सुनबे ने केलक। मुदा अपने तँ सुनलौं। सुनि कऽ जँ किछु बाजब नहि तँ संगीक संगपना केना भेल। बाजल-

“भैयारी, जखन एक गाममे तीनू गोरे बच्चेसँ संगी रहलौं, बीचमे किछु दिन वैदिक पद्धैत जकाँ बिछुड़ि गेल छेलौं, तँए एते दिनक बिछुड़लाहाकेँ बिसरू आ आब केना संगी बनल रहब से सोचू?”

कहि सुमत सुबलक समरथन पबैले पुन: बाजल-

“की भैयारी?”

सुमतक विचार पाबि सुबल गदगदाइत गदा उठबैत बाजल-

“भैयारी, सभ कियो जखन एके गाम-समाजमे छी तखन जँ एकठाम बैस एको पहर कृष्ण-धुनमे नइ बितेलौं, तखन ऐ जिनगीकेँ धो-धो चाटब।”

समतल खेत जकाँ सुकृत्तिक मनमे भेल। बाजल- “सझिया खेती?”

‘सझिया खेती’ सुनि सुबलक मन टनटनाएल। जहिना घण्टी टाँगल हाथीक प्रवेश गाममे होइते धिया-पुता बुझि जाइए जे रस्तापर हाथी अबैए तहिना सुबलक मनमे टनटनाएल। टनटनाएल ई जे नाना-मुहेँ पचासो दिन सुनने जे बौआ, सझिया बहु नीक मुदा सझिया खेती नइ नीक।

मुदा संगीक बातकेँ सोझे ठुकरा देब सेहो नीक नहि। तँए किछु अपन ओहन विचार नइ राखब तखन नइ मानब केना हएत। बाजल-

“भैयारी, गामक भैयारीक खेतीमे देखै छी जँ दू भाँइक भैयारी अछि, दुनूमे भिनौज अछि, तइमे जँ एकटा परदेशी भेला तँ हुनकर खेत सेहो ने रसे-रसे उपजे बिसैर जाइ छैन।”

सुबलक विचारकेँ ग्रहण करैत सुकृत्ति बाजल- “भैयारी, ओहन नहि।”

फेर सुबल बाजल- “अपना तीनियेँ गोरेमे सौंसे गामक सझिया खेती केना हएत? जखैन कि अपना तीनू गोरे तँ तीन टोलोक आ तीन जातियोक छी।”

सुबलक विचार सुकृत्तिकेँ जँचल, मुदा सामाजिक बेवस्था तँ समाजकेँ बुझला पछाइत केलापर हएत, ऐठाम तँ तीनियेँ गोरेक बात अछि। बाजल- “भैयारी, ओहो नहि।”

‘ओहो नइ’ सुनि सुबल ठमैक गेल, मुदा सुमतक मनमे जेना पहिनेसँ उठल रहै तहिना बाजल- “भैयारी, जाति-जातिक बीच पेशेवर खेती सेहो सझिया होइए..?”

“सेहो नहि, भैयारी।”

मुदा लगले हाथ सुमत बाजल- “जँ कोनो सझिया मशीन लऽ तीनू

गोरे ओकर कच्चा माल-ले एके रंगक खेती करब?”

सुकृत्ति-

“ओहो नहि।”

जिज्ञासु मुँह बाँबि सुबल बाजल-

“तखन?”

अपन विचार रखैत सुकृत्ति बाजल-

“भैयारी, सभकेँ अपन-अपन खेत अछि, सभ रंगक सेहो अछि। तँए ओकर उपजक सझिया।”

‘उपजक सझिया’ सुबलकेँ बुझैमे नइ आएल। बाजल-

“नीक जकाँ नइ बुझलौं, भैयारी?”

सुकृत्ति बुझबैत बाजल-

“एक समयमे माने एक मौसममे अनेको रंगक अनेको फसिल होइए, ओइमे सझिया। किछु चीजक एक गोरे करब, किछु चीजक दोसर गोरे आ किछु चीजक तेसर गोरे, ओइमे तीनू गोरे अदैल-बदैल बेसी वस्तुक लाभ लेब।”



तिथि : 23 मई 2015, शब्द संख्या : 3135

मुफतिया माल

हेमकान्त बाबू आ दिवाकान्त काका लङ्गोटिया संगी। ओहन लङ्गोटिया संगी नहि, जे कुश्तीक अखड़ाहाक होइए, आ ने वएह जे बुढ़ाड़ीमे घर-परिवार छोड़ि वा छुटि गेने लङ्गोटा धारण करैत लङ्गोटिया संगीक संग तीर्थ-वर्त, कीर्तन-भजनमे अपन दिवस गमबैत अछि। ओहो लङ्गोटिया संगी नहि, जे बाल-बोधकेँ बोधि माए जखन लङ्गोटा पहिरा बच्चाकेँ आँगनसँ अगुआ टोल-पड़ोसक बच्चाक संग खेलैले छोड़ि दइत।

हेमकान्त बाबू आ दिवाकान्त कक्काक बीच ओहन लङ्गोटिया सम्बन्ध छैन जे गामक स्कूलमे दुनू गोरेकेँ लङ्गोटा पहिरौने पिता दाखिला करौलखिन। तहियेसँ दुनू गोरेक बीच सम्बन्ध रहलैन। भिनसुरका समाचारमे जहिना रेडियो-टी.बी. रातुक घटना सबहक प्रसारण करैत, तहिना सौंझुका समाचारमे दिनुका घटना प्रसारित करिते अछि।

वएह भिनसुरका समाचार गाम-समाजक सुनै-बुझैले चाह पीब पान खा दिवाकान्त काका पलंगपर सँ उठि विदा होइते रहैथ तखने भातीज- रवि शंकर- आबि कहलकैन-

"काका, अनर्थ भऽ रहल अछि.!"

दिवाकान्त काका तीन साल पहिने कौलेजसँ सेवा निवृत्त भेल छैथ, भातीजक बातक कोनो अरथे ने लगलैन। अर्थो केना लगितैन, जे शब्द अपने अनर्थ अछि ओकर अर्थे की हएत। तैबीच रवि शंकर ऐ ताकमे दिवाकान्त दिस आँखि उठा-उठा तकैत जे काका अकचकाइत

किछु बजता, मुदा से किछु ने देखलक। देखबो केना करैत काका अपने अथाहमे उगऽ-डुमऽ लगला। तखन केना केकरो घटना सुनि अकचकेबे करितैथ। मुदा से भेल नहि। खगेन्द्र जकाँ खगक भाषा बुझैक खियालसँ दिवाकान्त काका पुछलखिन-

“बौआ, रातिमे कोनो तेहेन घटना केतौ भेल?”

घुमौन बात बजैक कारण रवि शंकरक रहै जे दुनू गोरे माने हेमकान्तो बाबू आ दिवाकान्तो कक्काक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध, तँए परदाक बीच अपन विचार रखने छल।

मुदा घटना तँ घटना छी। ओना, घटनोक प्रसारण केते ढंगसँ होइते अछि, केतौ तिलकेँ तार बना प्रसारण होइत तँ केतौ तारकेँ तिल बना देल जाइए, तँए तिलकेँ तिल आ तारकेँ तार कहि प्रसारित नइ होइए, एहनो तँ नहियेँ अछि, सेहो तँ होइते अछि। कनी आगू ससरैत रवि शंकर बाजल-

“काका, अहाँक संगीकेँ तँ..?”

कहि रवि शंकर चुप भऽ गेल। ‘संगी’ सुनि दिवाकान्त काकाकेँ मन आगू बुझैक हुलास जगलैन। बजला-

“बौआ, एना तम्माक मुड़ी छोपि कऽ नइ बाजह।”

ओना, रवि शंकरो बुझैत जे तेलिया-फुलिया लगा दिवाकान्त काका ने अपने बजै छैथ आ ने अनके मुँहक नीक लगै छैन। मुदा बुझैक जिज्ञासा तँ छैन्हे। रवि शंकर बाजल-

“काका, हेमकान्त काकाकेँ बेटा कपार फोड़ि देलकैन।”

‘बेटा कपार फोड़ि देलकैन’ सुनिते दिवाकान्त कक्काक माथमे कठझालि जकाँ झन्न-दे उठलैन। रवि शंकरोक मनमे भेल जे भरिसक संगीक कपार फुटब सुनि काका बेथा गेला, बेथापर बेथा लादब नीक नहि। तँए जान छोड़ा घसैके जाएब नीक हएत। बाजल- “काका, कनी

दूध-ले जाएब, परसुका नोत अछि, जाइ छी।"

'हँ-हूँ' दिवाकान्त काका किछु ने बजला। रवि शंकर चलि गेल।

एक संग अनेको प्रश्न दिवाकान्त कक्काक मनमे सिनेमाक रील जकाँ नाचए लगलैन। ऐ अवस्थामे बेटा कपार फोड़ि देलकैन.! ओना, रेडियो-अखबारमे एहेन समाचारक कमी नहियेँ रहैए मुदा लगक लोक सभ दिन हेमकान्त रहला। जखन समाचार कानमे पहुँच गेल तखन जँ खोज-पुछारि नइ करिऐन, जिज्ञासा नइ करिऐन सेहो केहेन हएत। मुदा खोजो-पुछारि करै-करैमे भेद तँ अछिए। नीक काजक खोज-पुछारि आ अधला काजक खोज-पुछारिमे अन्तर तँ अछिए। अधला काजक खोज-पुछारिक एकटा माने ईहो तँ ऐछे जे व्यंग्य-स्वरूप खोज-पुछारि करऽ आएल छैथ.!

मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे हमरा कान तक समाचार आबि गेल से हेमकान्त केना बुझता जे हमर आशा भेँट करैक वा जिज्ञासा करैक हेतैन। फेर लगले मनमे उठि गेलैन जे ई तँ भेल अपन मुँह नुकाएब। नीक आकि बेजए ओ केलैन, बेटा हुनका कपार फोड़लकैन, आ मुँह नुकाबी हम, ईहो तँ नीक नहियेँ हएत। असमंजसमे पड़ल दिवाकान्त काकाकेँ ने अक् चलैन आ ने बक्। मुदा लगले भेलैन जे रवि शंकर तँ एतबे बाजल जे 'बेटा कपार फोड़ि देलकैन।' किए फोड़लकैन, केना फोड़लकैन से तँ नइ बाजल तँए धड़फड़ा कऽ पहुँचबो आ जर-जिगेसा करबो जरूरी नहियेँ अछि। कोनो कि हम डॉक्टर छी जे मलहम-पट्टी करबैन। मन थीर भेलैन। थीर होइते मन नचलैन। मन नचलैन ई जे धड़फड़मे हेमकान्तक ऐठाम जाएबो नीक नहियेँ, दुनू बापुतक बीचक बात छी। जखने एक दिस जाएब तखने दोसर दिससँ जाएब।

होइते छै जे दू गोरेक झगड़ामे जखने एकसँ कियो गप करैए तखने दोसर बुझैए जे किछु सिखा-बुधी कऽ रहल अछि। दिवाकान्तकेँ फेर

भेलैन जे हेमकान्ते बाबूटा हमरा अपन संगी नइ बुझै छैथ, से नइ ने अछि। गामक के कहए जे कौलेजोक चिनहरबा, अड़ोसो-पड़ोसियो आ गौंआँ-घरूआ तँ बुझिते अछि। से नइ तँ पहिने नीक जकाँ घटनाक घटित घटक बुझि कऽ जाएब वा नइ जाएब से विचारब। संगबे रहला तँ स्कूल-कौलेजक पढ़ाइ आ नोकरी धरिक रहला, एकर माने ई नइ ने भेल जे जइ घटनामे हेमकान्तक कपार फुटलैन तइमे हम हुनकर संग रहिऐन। जाइ कि नइ जाइ, तेकर हँ-निहँस दिवाकान्त काका कइये ने पाबि रहल छैथ। मनमे उड़ी-बीड़ी तँ लगले छैन।

फेर भेलैन जे दोसर-तेसरसँ पुछि कऽ पहिने भँजिया ली आ पछाइत जाएब आकि नइ जाएब से विचार कऽ लेब। मुदा लगले भेलैन जे गामोक लोक तँ बेसी तीन-तसिये अछि, कियो हेमकान्त दिससँ बाजत तँ कियो शिलाकान्त दिससँ, जइसँ नीक जकाँ भाँजो लगब तँ कठिने अछि। दिवाकान्त कक्काक नजैर घुमैत-फिड़ैत उमाकान्तपर पड़लैन। उमाकान्ते गाममे एहेन लोक अछि जे दूध-पानि बेड़ा कऽ बजैए। जइसँ सत् बात बुझैमे आबि जाएत।

मुदा लगले फेर भेलैन जे जँ कहीं उमाकान्तोकेँ अपन देखल-सुनल नइ होइ आ उहो उड़न्तीए कहि दिअए तैयो तँ भाँज नहियेँ पएब। फेर भेलैन जे हाथ-पर-हाथ रखि चुपचाप बैसबो तँ नीक नहियेँ हएत। से नइ तँ उमाकान्ते ऐठाम पहुँच भाँज लगाएब नीक रहत। तहूमे वेचारा जँ अपने काने सुनने हएत सेहो कहिये देत आ जँ केकरो आनक मुँहक सुनने हएत सेहो कहिये देत। किछु अछि उमाकान्त तँ बागर धान जकाँ आनसँ नमहर तँ अछिए। सेठ-साहुकार जकाँ लौली-बाजी दइ बला नहियेँ अछि...। यएह सोचि दिवाकान्त काका उमाकान्तसँ भेँट करऽ विदा भेला।

संयोग कहियौ आकि घटना, उमाकान्तो हेमकान्ते बाबू ऐठामसँ अबैत रस्तेमे रहए कि दिवाकान्त कक्काक नजैर पड़लैन। कोनो नीक बोल

सुनैले वचनामृतक खगता होइते अछि। दिवाकान्त काका बजला-

“उमाकान्त, तोँ बड़ भाग्यशाली छह, बहुत दिन जीबह.!”

दिवाकान्त कक्काक आसिर वचन सुनि उमाकान्तोक मन ठनकल, ठनकल ई जे एना अगुरवारे तँ दिवाकान्त काका कहियौ आसीर-वचन नहि कहै छला, आइ किए..?

फेर लगले उमाकान्तक नजैर दुनू गोरे- दिवाकान्त-हेमकान्त-क सम्बन्धपर पहुँच गेल, बाजल-

“काका.. .!”

‘काका’ कहि उमाकान्त चुप भऽ गेल। उमाकान्तकेँ चुप होइत देखि दिवाकान्त कक्काक मन तर-ऊपर हुअ लगलैन। जँ नीक समाचार रहैत तँ ढोल पीट-पीट बजैत, मुदा बकार बन्न भऽ गेलै.! जरूर किछु तेहेन बात अछि जे बजै ने चाहैए। दिवाकान्त काका कहलखिन-

“उमा, तोँ अपनाकेँ आन किए बुझै छह। बेटा-भातिज भऽ कऽ एना धरवाइ किए छह?”

दिवाकान्त कक्काक विचार उमाकान्तक मनकेँ उत्साहित केलक। उत्-सुक मने उमाकान्त बाजल-

“काका, बजैत लाज होइए, तँए... ।”

‘तँए’ सुनि उमाकान्तकेँ हड़बड़बैत दिवाकान्त काका कहलखिन-

“कनीको रखि-जोगा कऽ नइ बाजह। तोरा धाख कथीक होइ छह।”

उमाकान्त बाजल-

“काका, हेमकान्त कक्काक पत्नी आठ-नअ बर्ख पहिने मरलखिन से तँ बुझले अछि।”

“हँ-हँ किए ने बुझल रहत। हुनकासँ एक साल पहिने हमरो पत्नी

मुइली। दसम बरखी एक मास पहिने केने छेलिऐन। हिनकर दस तँ हुनकर नअ बर्ख भेबे केलैन।”

दिवाकान्त कक्काक बहैत मनकेँ अपना दिस मोड़ैत उमाकान्त बाजल- “ओ केहेन धुड़फन्दा लोक छैथ से तँ बुझले अछि।”

‘धुड़फन्दा’ सुनि दिवाकान्तो कक्काक मन धुड़खेल खेलऽ लगलैन। बजला-

“बौआ उमाकान्त, तोरा बुझल हेतह की नहि, हम ओइ बिआहोमे बरियाती रही, राज मोरंगमे की-की भेल से की कहबह।”

कहि काका विस्मित हुअ लगला। दिवाकान्त काकाकेँ विस्मित होइत देखि उमाकान्तोक जिज्ञासा जगल। बाजल-

“काका, एना किए अदहे मुहसँ निकलल आ अदहा मुहेँमे रहि गेल?”

एक तँ ओहिना दिवाकान्त काका, जहियासँ कौलेज छोड़लैन तहियासँ वतरसिया भऽ गेल छैथ तैपर उमाकान्तक मोलामा पाबि दिवाकान्त काका बमैक कऽ उगलऽ लगला-

“उमा बौआ, हेमकान्त बेटाक बिआहक बात-चीत पक्का केलैन। तेरह लाख नगद, अतिरिक्त आधुनिक वस्त्र-जात आ तीन साए बरियातीक बेवस्था। कन्याँगतोक मनमे मस्ती चढ़ले रहै, हरे-हरे सभ किछु गछिए नै लेलकैन जे अगुरवारे दाइओ देलकैन। बरियातीमे हमहूँ रही।”

उमाकान्त- “तखन तँ अहाँकेँ सभ बात बुझले अछि।”

जहिना रटल बात उझकी मारि-मारि मुहसँ निकलऽ चाहैत तहिना दिवाकान्तो कक्काक मनमे उझकी उठैत रहैन, ओना तेरह लाख रुपैआ सुनि उमाकान्तकेँ अपन समाचारक सत्यापन भऽ गेल। सत्यापन ई जे वएह रुपैआ कपार फोड़ै-फोड़बैक कारण छल। मुदा आरो बेसी भाँज

लगबैक जिज्ञासा उमाकान्तक मनमे जगले रहइ। जागल लोक जहिना आँखि उठा-उठा चारूकात तकैत तहिना उमाकान्तो आगूक बात बुझैक कोशिशमे पियासल बटोहीक नजैर गढ़ि, दिवाकान्त काकापर समधानल तीर छोड़लक। तीर जेना दिवाकान्त कक्काक बीचला छातीमे लगल होइन तहिना छातीक पीड़ासँ पीड़ित होइत बजला-

"बौआ उमा, छाँह-छूँहमे बात बुझिये गेलौं, मुदा तेकरा अखन रहऽ दहक, बूढ़-पुरान भेलौं, कखन छी कखन नइ रहब, तेकर कोनो ठीक अछि।"

आगूक बात दिवाकान्त कक्काक मनेमे रहैन आकि तइ बिच्चेमे अपन गोटी लाल होइत देखि उमाकान्त बाजल-

"काका, अहूँ जँ तगेदे भरोसे रहब जे उमाकान्त फल्लाँ-फल्लाँ बात पुछत तखन ओकरा बुझा कऽ कहबै से अहीं कहू जे अहाँ सन भेल?"

ओना, दिवाकान्त काका दृष्टिकूटो आ चिक्कारियो भाषाक अनुभवी शिक्षक कौलेजमे बुझल जाइ छला, मुदा विद्यालय आ समाजमे की दूरी बनल अछि सेहो तँ बुझिते छैथ। तँए सेवा निवृतिक पछाइत दिवाकान्त काका कौलेजक विषयकेँ कौलेजेमे निवृत्त कऽ समाजमे सामाजिक विषय धारण कऽ अपन बदलैत परिवेशमे अपनोकेँ समावेश कइये रहल छैथ। 'अहीं कहू जे अहाँ सन भेल?' पैछला बातक फल-फूल भेल। दिवाकान्त कक्काक मनमे भेलैन जे ठीके उमाकान्त बाजल। किछु छी तँ बेटा-भातीज छी जँ ओकरा पुछै भरोसे रहब आ जँ ओकरा ओ बात बुझले ने होइ, तखन की पुछत। तेतबे किए जँ ओकरा बुझले रहितै तँ अनेरे दोहरा कऽ अपन समय किए दुइर करैत...।

..रेही चलैत मटकूरमे जहिना पानि-मक्खन चारू दिस पेनी-सँ-छिप्पी धरि नचैत रहैए तहिना दिवाकान्त कक्काक मन नचलैन। नचिते बजला- "बौआ, धड़फड़ाएल नै ने छह?"

उमाकान्त अपन सुतरैत लक्ष्य देखि गुलेतीमे गोलीक निशान साधि बाजल-

“काका, अधपोखैरयामे जहिना जुड़शीतलक दिन थाल-कादो आ पानि एकबट्ट भऽ जाइए तहिना ने आइ समाजक पोखैरमे भऽ गेल अछि.! भरि दिन कोनो आन काज करैक मन थोड़े हएत।”

श्रोता-वक्ताक अनुकूल वातावरण होइत देखि दिवाकान्त काका बजला-

“बौआ, तोहर घर जँ लग रहितऽ तँ तोरे ऐठाम जेतौं, चाहो पीबतौं आ गपो-सप्प करितौं। मुदा अखन तँ हमरा डेढ़िये पर छह, तँए दलानेपर चलह। चाहो-पान खाएब पीब आ अपन अनुभवक किछु किछु बातो कहबह।”

पिपाशु लोक उमाकान्त, तँए समाजक काजक बात-विचार सुनै-करैक समैकेँ अधला नइ बुझि उपयोगीए बुझैत अछि। तैसंग मनमे ईहो उठि गेलै जे अपन दरबज्जापर लोक भरिमुँह बजैए, सेहो गर देखि उमाकान्त बाजल-

“बहुत दिनक पछाइत दुनू बापुतक बीच गप-सप्प हएत काका। तँए जहाँ धरि पार लगत तेते गप कइये लेब।”

एक तँ भिनसुरका उखड़ाहाक नरमाएल मन, तैपर जराएल समाचार सुनि दिवाकान्त कक्काक मन इनहोर पानि जकाँ खौलैत रहबे करैन। बजला-

“बौआ, आगि-छाइ कि अगुतेने मानत, ई नइ अबिसवास करह जे चाह नइ पीब। ओना, आनक पुतोहु जकाँ हमर पुतोहु बतकेहलि नइ छैथ, ओ बुझि गेली। तैबीच अपना सभ मुँह चुपे किए राखब।”

नोइसिक शीशीक मुन्ना खोलि दिवाकान्त काका नाकमे भिड़ौलैन। भिड़ैबते छीका भेलैन। छीका होइते बजला- “बौआ, औझुका बात ताबे

तरमे रहऽ दहक, अपन इस्कूलेक जिनगी लगसँ पहिने पैछला बात सुनबै छिअ।”

हेमकान्त बाबू आ दिवाकान्त कक्काक गाम सटले, बड़का गामक टोले जकाँ। मुदा दुनू वित्तीय गाम तँए दूटा नाम तँ अछिए। ओना, नाम दू रहितो दिनानुदिनक किरिया-कलाप दुनू गामक एकरंगाहे अछि। एकबधू खेत, जोड़ल सड़क आ जोड़ल स्कूल तँ अछिए।

दुनू गोरे एके जातिक सेहो छैथे। मुदा एक जाति रहितो दुनूक कुल-मूलमे कनी तरपट, तँए सामाजिक भोजो-भात आ कुटुमो-कुटमारक सम्बन्ध नहियेँ होइत अछि। मुदा केतबो दूरी किए ने होइ, बेकतीगतो सम्बन्ध आ आन-आन तरहक काजो उदेमक सम्बन्ध तँ छैन्हे।

दिवाकान्त काका तेज गतिये बाजैथ, तँए उमाकान्त पजरल चुल्हिक खोरनी जकाँ बीच-बीचमे खोरनी चलाएब नीक बुझलक। ओना, खोरनी चलबैक पाछू उमाकान्तक मनमे ईहो रहै जे धाराक प्रवाहमे केते झूठो बात खढ़-पात जकाँ अलगि जाइए, सेहो हएत। बाजल-

“नमहर जिनगीक नमहर खेरहा हएत, तँए कनी..?”

उमाकान्तक इशारा दिवाकान्त काका बुझि गेला। बजला-

“बौआ, हेमकान्तो आ हमहूँ दुनू गोरे संगे गामक स्कूलमे भर्ती भेलौं। शुरूहेसँ ओ चंगला, चंगलाक माने- झूठ-सत् आ सही-गलतकेँ ओइ रूपेँ मिश्रण करैत भषो आ काजो बना लइत जेकरा बूझब-परिखब भारी अछि। हमरा सन-सन अनेको ओहन छैथे जे नइ बुझि पाबि रहला अछि। हमहूँ कि भाँज बुझितौं, गुण भेल जे दृष्टिकूटो आ चिक्कारियो भाषा कनी पढ़ि लेलौं।”

दिवाकान्त कक्काक खुलल छाती देखि उमाकान्त बुझि गेल जे कक्काक बातपर कनी-कनी जँ ऊपरसँ पानिक छिच्चा जकाँ दैत रहबैन तँ

अनेरे ने सोगर बनल रहता। बाजल- "काका, धिया-पुता गपक अखन कोन बजैक खगता अछि... ।"

वतरसिया दिवाकान्त काका छैथे, चौकियेक ओछाइनपर दुनू ठेहुन सोझ करैत मुस्की दैत बजला-

"ई तँ पेनी कहलियह उमा, अइमे एतबे बूझह जे जहिना लोअर प्राइमरी स्कूलसँ हाइ स्कूलक दसमा धरिक विद्यार्थीक रिजल्ट सिरिफ परीक्षेक कॉपी जाँचि टा शिक्षक नइ दइ छथिन, किलासमे प्रश्नोत्तरक संग विद्यार्थीक लगनो देखि दइ छथिन, तँए दसमा तक नीके-ना रहलौं। मुदा मैट्रिकक परीक्षामे हमरासँ पनरह-बीस नम्बर ओकरे बेसी रहइ। ओना, फस्ट डिवीजन दुनू गोरेकेँ भेल, तँए ओइपर कान-बात नइ देलिऐ।"

उमाकान्तक मनक ब्रह्म जगल। जेना ओ बुझि गेल जे किछु रहस्यक बात छिपल अछि, जे खोलए चाहै छैथ मुदा खोलि नइ पाबि रहला अछि। पोखैरक घाटपर पानिकेँ धफाड़ि जहिना फरिच बनाएल जाइए तहिना उमाकान्त बाजल-

"काका, जखन बचपनेक बात उठेलौं तखन तेना कऽ कहिऔ जे दोहरा कऽ पुछऽ नइ पड़ए।"

तैबीच पुतोहु चाह नेने आबि गेलैन। शराबक शीशी देखिते पिआककेँ जहिना मन चटपटाए लगै छै तहिना दिवाकान्तो कक्काक मन चटपटेलैन। बजला-

"बौआ उमा, दुनियाँमे भगवान केकरो पुतोहु देलखिन तँ हमरो देलैन। हमर चौबीसो घन्टाक खटनी हिनका बुझल छैन। कखन चाह पीब, कखन पानि आ कखन खेनाइ खाएब तइ सबहक हिसाबे अपनाकेँ परिवारमे ठाढ़ रखने छैथ।"

सोझहामे बजलासँ जँ बड़प्पनक भाव अबैत अछि, तँ की सत्-बातक भाव नइ औत? एबे करत... ।

..चाहक घोंट लइते जेना दिवाकान्त कक्काक कण्ठ सर्ड़ास भेलैन। बीचमे टभैक पड़ला- “बौआ, लगला सूरमे एकटा आरो बात सुनि लएह, बिनु कहने जँ आगू बढ़ि जाएब तँ ओ बिच्चेमे हेरा जेतह।”

दिवाकान्त कक्काक मनक उत्फुल विचार देखि उमाकान्त बाजल-

“काका, अहाँकेँ कि मुँह रोकने छी। हमहूँ कियो आन छी जे... ।”

सह पाबि सहैट दिवाकान्त काका बजला-

“बौआ, जइ दिन मैट्रिकक सर्टिफिकेट लइले गेलौं, तरवन जे हेमकान्तक डेट ऑफ वर्थ मिलेलौं तँ हमरासँ चारि बर्ख कम रहइ।”

बीचमे टोन दैत उमाकान्त बाजल- “नइ बुझलौं, काका?”

‘नइ बुझलौं’ सुनि दिवाकान्त कक्काक मनमे भेलैन जे भरिसक मोटगर शब्दक प्रयोग भऽ गेल तँए उमाकान्त नइ बुझि पेलक। सिलौटपर जहिना कोनो वस्तुक चटनी हलसँ पीसकऽ हल्लुक बनौल जाइए, जइसँ ओ चाटै-जोकर भऽ जाइए, तहिना दिवाकान्त काका मेहियबैत बजला-

“उमेरक चोरीमे की-की फड़ै छै से भरिसक उमा तोरा नजैरमे नइ छह। खाएर छोड़ह नइ छह तँ नइ छह, मुदा एते बुझि कऽ आँखिक मोटरी बान्हि रखिहऽ जे ओइ-गाछ मे नोकरीक अन्तिम ओ समय नुकाएल ऐछे जइमे उच्च कोटिक दरमाहाक संग उच्च पद सेहो नुकाएल अछि। तैसंग नुकाएल अछि, एकसँ अनेक बिआह, तैसंग छिपल अछि कम उमेरमे पैघ बात बुझैक श्रेय।”

बिच्चेमे उमाकान्त बाजल- “काका, एना नइ घुरिया कऽ कहियौ सोझुका बात कहियौ।”

समगम होइत दिवाकान्त काका बजला- “बौआ उमा, जाधैर केकरो अपन उचित उमेर रहल ताधैर ओ बढ़ैत-बढ़ैत फुनगी तक पहुँच गेल। ओतैसँ माने फुनगीए-परसँ चोरौलहा उमेर आबि खसैए आ पदो-

प्रतिष्ठा आ दरमहो पबैत रहैए।”

बिच्चेमे उमाकान्त टोकारा भरलक- “ओऽऽ ऽ.!”

उमाकान्तक ‘ओ’ सुनि दिवाकान्तकेँ जेना अपन ‘म’ जगलैन तहिना बजला-

“बौआ, अखन तूँ दुनियाँक छकल-बकल नइ बुझि रहलह अछि, तँए अन्हराएल बुझि पड़ैत हेतह। मुदा से नहि, लोको ते लोको छी किने, केतौ मरद लोक बनल रहैए आ केतौ घरवाली बनि मौगी बनि जाइए। जखने मौगी बनैए तखने ने ओ मौगियाह पुरुख बनि, एकसँ अनेक बिआह करैए।”

बिच्चेमे उमाकान्त टिपलक- “काका, कनी दोहरा कऽ कहियौ, नीकसँ नइ बुझलौं।”

धारक बहैत पानि जहिना पोखैर-इनारक असथिर पानिक सुधि बिसैर गंगा सागर दिस बढ़ैत रहैए तहिना दिवाकान्त काका दुनियाँक सभ सुधि बिसैर बजला-

“बौआ, बेसियो उमेरबला सभ पाकल केश रंगा, पाथरक दाँत बना मोछ कटा कऽ नव कवरिया जकाँ अपनाकेँ जुआन कहि केतेको बिआह कऽ लइए।”

मुस्की दैत उमाकान्त बाजल-

“बेस बात काका कहि देलौं।”

अपन विचार जहिना दोसर बुझि कऽ मानि लइए, तैकाल जे खुशी बजनिहारकेँ होइ छै तहिना दिवाकान्तो काकाकेँ भेलैन। अठनियाँ हँसी हँसैत बजला- “बौआ, उमेर चोरा लोक कमे उमेर कहि बड़का उमेरबलाक कान काटि कहिते अछि किने जे हम एतबी उमेरमे एते पढ़ि-गुनि नेने छी। उमेर रहत पचास बर्खक आ कहत जे बारहे बर्खमे माता सरस्वती हमरा सपनौती विद्या देने छैथ।”

किछु खेलाक पछाइत आकि पीलाक पछाइत जहिना मन भरि जाइ छै, अघा जाइ छै तहिना उमाकान्तोकेँ भेल। बाजल-

"काका, जलखै बेर भऽ गेल। भुखक तरास जगि रहल अछि। दोसर दिन आरो सुनब।"

दुनू हाथसँ उमाकान्तकेँ असथिर करैत दिवाकान्त काका कहलखिन-

"जलखै-बेर भऽ गेल तँ की हेतै, हमहूँ सभ अन्ने खाइ छी।"

पुतोहुकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"जलखैयोक ओरियान करब।"

दिवाकान्त कक्काक आग्रह सुनि उमाकान्त बाजल-

"काका, जखन अहाँ अपन पेटक बात कहऽ चाहै छी तँ हमहूँ कहै छी दोहरा कऽ समय नै लगाएब, सभ बात बुझिये लेब।"

दिवाकान्त कक्काक मनमे ऐगला बात जेना उत्फाल मचबऽ लगलैन तहिना भेलैन। बजला-

"आलतू-फालतू बात छोड़ह ऐगला बात कहै छिअ।"

'ऐगला बात' सुनि उमाकान्तो अपन पियासल आँखि दिवाकान्त कक्काक आँखिपर देलक। आँखि-सँ-आँखि मिलिते दिवाकान्त काका बजला-

"पड़ोसिया गामक भाग्य जगल। एकटा कौलेज खुगल। ता हेमकान्तो आ हमहूँ- दुनू गोरे एम.ए. पास कऽ नेने रही। हेमकान्त धुड़फन्दा लोक सभ दिनक, अगुआ कऽ कौलेजक हेड प्रोफेसर भऽ गेल। पाछूसँ हमरो बहाली भेल। सातम नम्बरक प्रोफेसर हमहूँ भेलौं। भगवानो ओकरे दहिन भेलखिन। दरमाहाक संग मुफतिया मालक जोगार सेहो कऽ देलखिन। उमेर तीन साल घटाइए नेने रहए, अपन सिहन्ता हम मनेमे

मारि लेलौं, जे ई जिनगी इन्चार्य बनै-जोकर नइ अछि। तरे-तर मनक त्रिवेणी-घाट मरने-घाट बनि गेल।”

मनक उमकी उमाकान्तक जगि गेल। बाजल-

“काका, अनेरे केहेन लोकक जड़ि बीटियबै छी.! छोड़ू, औझुका बात सुना दइ छी।”

दुनू हाथसँ उमाकान्तकेँ रोकैत दिवाकान्त काका बजला-

“भने अखैन तोहूँ छहे, विचारेक बात अछि। ई कहऽ जे खोज-पुछारि करऽ जाइ की नहि। अपराधीक हार होउ कि जीत, खोज-पुछारि की करत से के कहलक।”

‘विचार’ सुनि उमाकान्त ठमकऽ लगल। उमाकान्तकेँ ठमकैत देखि दिवाकान्त काका बजला-

“बौआ, बरियातीक बात कहि दइ छिअ।”

उमाकान्तक मनमे भेल जे भरिसक फेर रजनी-सजनीक खिस्सा जकाँ सात दिन लगौता। तँए बिच्चेमे बाजल-

“बरियातीक बात छोड़ि दियौ काका, ऐगला कहियौ।”

उमाकान्तकेँ बिच्चेमे अँटकबैत दिवाकान्त काका बजला-

“बौआ, हेमकान्तक दोसर बिआह केना भेल से बुझल छह?”

ई प्रसंग सुनि उमाकान्तक जिज्ञासा जगल। बाजल-

“बेसी तेलिया-फुलिया कहैमे नइ लगाएब। सोझ-साझ कहियौ।”

खखास करैत दिवाकान्त काका कहऽ लगलखिन- “बिआह होइले गेल शिलाकान्तक आ भऽ गेल शिलाकान्तक बापक।”

कहि देवकान्त काका मुस्कुराए लगला। मकै आकि धान जहिना खापरिमे पहिने चनकैए तखन दोसर-तेसर रूप बदैल लाबा बनैए तहिना दिवाकान्त कक्काक चनकी उमाकान्तक मुँहकेँ लाबा बना देलक। हँसैत

उमाकान्त बाजल-

“काका, कुमरम किनकर भेल रहैन?”

जहिना हँसी उमाकान्तक तहिना बतीसो दाँतक बतीसोअना हँसैत दिवाकान्त काका कहलखिन-

“कुमरमेटा कँ की कहै छहक जे तेरह लाख रुपैओ बेटेक नामसँ बैंकमे जमा भेल।”

‘तेरह लाख रुपैआ’ सुनि जेना उमाकान्तक मनमे औझुका घटना नाचि उठल। बाजल-

“ई केना भेल?”

दिवाकान्त-

“ई भेल जे सिनूरदानक समय शिलाकान्त रूसि रहल। सिनूरदान करैले तैयारे ने भेल। हेमकान्तकेँ बजा आँगन लऽ गेलैन। चालू-पुरजा लोक हेमकान्त सभ दिनक, सिनूर उठा कन्याक माङ्मे लगबैत बाजल-

‘बेटा नइ सिनूरदान करत तँ बेटाक बाप करत.!’

..अपन चलाकी सुतारै दुआरे हेमकान्त जोर-जोरसँ चारि-पाँच बेर बाजिते रहल।”

क्षुब्द होइत उमाकान्त बाजल-

“काका, कनी सोझरा कऽ कहियौ।”

अपन भारीपन देखि दिवाकान्त काका आगूक बात बाजऽ लगला-

“बौआ.! ओना, हम सभ कौलेजक आठ-नअटा शिक्षक एकठाम बैसकखानामे रही। आँगनमे गल-गूल भेल। किछु गोरे, शिक्षकोमे सँ आ किछु परिवारो-समाजक बरियाती आँगन गेला,एक स्वरसँ सभ कहि देलखिन जे बिआह हेमकान्तेक भेलैन। कोनो पहिलुका रचल रचना छलै कि अनहोनी से अखनो धरि नइ बुझि पेलौं अछि।”

जिज्ञासा करैत उमाकान्त बाजल- “लड़की केना राजी भेलैन?”

दिवाकान्त-

“लड़कीकेँ कि विचारैक पलखैत भेटल। तीन-चारि दिन विधि-बेवहारक होहामे बीति गेल। जाबे कन्याक मन थीर भेलैन, ताबे तँ शीलहरण भेल कन्याक विचारो-हरण ने भऽ जाइए।”

नमहर साँस छोड़ैत उमाकान्त बाजल-

“काका, वएह तेरह लाख रुपैआक लेनी-देनीक झंझट दुनू बापूत-हेमकान्त-शिलाकान्तक बीच भेल। धचगर बेटा एक्के बाँसक टोन तेना कपारपर मारलकैन जे बिच्चे–बीच ढाहियो देलकैन आ तरे-तर थौकचो केने छैन।”

नमहर निसाँस छोड़ैत दिवाकान्त काका बजला-

“जेकरा खोज-पुछारि करऽ जाएब ओ तँ भइये गेल। केते दिन जीब, आब किए मन मोलि करब।”



तिथि : 29 मई 2015, शब्द संख्या : 3231

मथाहाथ

जेठ मास। उपनाइन, मूड़न आ बिआह-दुरागमनक संग घरवासक धुर-झार लगन चलैत। लोककेँ जेना मनेसँ हेरा गेल जे आगूओ लगन हएत कि नहि। सभ एकमुहरी जे जेते काज अगुआ कऽ भऽ जाइ छै ओतेसँ परिवार निचेन भऽ जाइए। तँए अपना-अपनीकेँ सभ काजक पाछू जी-जानसँ भीरल।

मुदा से नहि, धिया-पुताक बाढ़ि एने अहिना होइ छइ। तहूमे हम सभ मिथिलामे बास करै छी किने जैठाम माटि-पानि, रौद-वसात बारहो मासक बारहो मौसम बनौनहि अछि। जइसँ बारहो विरहिनीसँ लऽ कऽ मनुख धरिक जनन शक्ति ऐछे, तँए ओइ जनन शक्ति धारिणीकेँ किए ने नमन करबैन।

तीन बजेक बेरुका समय, रौदक संग उमस अपन सोल्हो श्रृंगार केने, हवा गुम, तहूमे पैछला सालक छह-मसिया रौदी गाछो-बिरीछक सेखी उतारिये देने अछि। मुदा तैयो रस्ता-पेरापर राही-बटोही बाजा-गाजाक संग डाला-पौतीक गाड़ी-सवारी धुरझार चलिते अछि।

परसूक सात ठामक नौत-हकार लाल काकाकेँ छैन। छह ठामक तँ परिवारक बुझि परिवारकेँ सुमझा देलखिन मुदा सातम सासुरक छिऐन तँए अपना सिरे रखि विचारै छला।

चाह पीबैक मन हमरो भेल। एकटा नवका गप नेने लाल काका लग पहुँचलौं। मथाहाथ देने किछु विचारैत रहैथ, चाह नइ पीने रहैथ,

मुदा वेरूका चाह पीबैक समय भइये गेल अछि। हमर यात्रा नीक छल जे पहिने चाहेक आग्रह भेल आकि लाले कक्काक यात्रा नीक छेलैन जे बिनु बजौनहि दोसर कजबिचरी विचारक भेट गेलैन, ई तेहल्ला जानैथ। अहाँ कहब जे विचारक तँ विचारवान होइए मुदा से छी नहि। हम छी जे जखन विचारैक विषय, कुतरूमक चटनी जकाँ हलसँ पीसा गेल रहैए तखन आँगुर भीड़ा जीहमे लगा चाटि लइ छी। से लालो काका बुझै छैथ। जहिना नवका गप सुनबैक गर हमरा लागल तहिना काजक विचार करैक गर हुनको लगलैन तँए दुनू गोरेक यात्रा शुभ-शुभ रहल।

चाह आएल, दुनू गोरे चाह पीलौं, पान आएल, पानो खेलौं। बड़ चिक्कन बड़ बढ़ियाँ, मुदा अपना दरबाजापर लाल काका अपन समस्या अगुआ कऽ किए सुनौता, तँए हमर बात सुनैले आँखि-कान ठाढ़ केलैन।

हम सोचलौं जे मथोहाथ कि लोक बिपैतिये पड़ने दइए, बिपैतक जड़िओ खोदियबै काल सेहो लोक मथाहाथ दइते अछि। से जँ नइ देत तँ आनक माथा अपनामे भीड़तै केना। जेबीसँ एकटा परचा नेने आगूमे देखबैत कहलयैन-

“काका, अपना देशमे तेते ने गाड़ी-सवारी बढ़ि गेल जे वायु-प्रदूषण भेने साँस लेब कठिन भऽ गेल अछि।”

कहि परचा आगूमे देलिऐन। हमर बात सुनि लाल काका मने-मन बाघ जकाँ गुम्हरऽ लगला मुदा बजला किछु ने। दोहरा कऽ किछु बाजब अपनो ने उचित बुझलौं, मुदा पियासल नजैर नजैरपर जरूर देलिऐन। नजैर पड़िते नजराना देलैन-

“बौआ, जइ गाममे सवारीक नामपर अखनो टायरगाड़ी, घोड़ा आ पैडिलबला साइकिल अछि, दू-पहियो इंजिनबला गाड़ीसँ भेंटो ने भेल छै तैठाम गाड़ी-सवारीक धुआँसँ वायु प्रदूषण हएत?”

कहि चुप भऽ गेला। मने-मन भेल जे ई तँ केकर दिनक पइर भऽ

गेल जे सबालक जवाब सवाले भेल। जमल आगिकेँ खोंरनीसँ, इंजिनकेँ नोजलसँ आ मनुखकेँ नारी पकैड़ जहिना गति-विधि जाँचल जाइए तहिना काकाकेँ खोंरनीसँ खोरियबैत पुछलयैन-

"काका, जे कहलिऐ से नइ बुझि पेलौं।"

ओना, लाल कक्काक मन नौत-पिहानीसँ लऽ कऽ जेठुआ धुर-झार लगन दिस देखैत रहैन, तइ बीचमे उठौल हमर सबाल छल। तँए जनु अनमनाएले जकाँ उत्तर देलैन-

"बाउ, दुनियाँ बड़ीटा छै, रंग-बिरंगक देश-कोस, रंग-बिरंगक चालि-ढालि आ रंग-बिरंगक बात-विचार अछि, तहीमे ने अपनो सभ छी।"

बुझि पड़ल जे काका किछु बजबऽ चाहै छैथ। मुदा दू गोरेक गप-सप्प जँ बेरा-बेरी नइ चलत तखन फलो तँ नहियेँ निकलत। एकटा भेल वक्ता दोसर भेल श्रोता, मुदा अभाव तँ अछि कर्ताक। हूँहकारी भरैत कहलयैन-

"हँ, से तँ छीहे। एकरा के काटत। आ जँ काटत तँ ओकरो हाथक ओंगरी काटि लेबइ.!"

हमर बात सुनि लाल कक्काक मन चढ़लैन। बजला-

"रमेश.! वकिंगधम सन एहनो चौराहा अछि जैठाम लाखो गाड़ी टपैए, आ एहनो तँ गाम ऐछे जैठाम माटियोक चौराहा ऐछे नहि।"

कक्काक बात नीक लागल। सह दैत कहलयैन-

"हँ से तँ अछिए।"

धारक पानि जकाँ लालो कक्काक मन बहैत आगू बढ़लैन। बजला-

"बौआ, अपन गाम केहेन अछि। एकर विचार करब अपना सबहक पहिल काज छी।"

मुड़ी डोलबैत कक्काक सूरमे अपन सूर मिलबैत बजलौं-

“हँ से तँ छीहे।”

जेना लालो काकाकेँ हमर बात बुझले रहैन कि की, सिनेमाक रील जकाँ दोसर दृश्य जोड़ैत बजला-

“बाउ, अहाँ जेकरा वायु प्रदूषण कहै छिऐ, ओ केना होइए, केते रंगक अछि, पहिने एकर ने विचार करब।”

पौरुकाँ साल ‘वायु पुराण’ पढ़ने रही, सभ बात तँ नहि, मुदा उनचास रंगक वायु अछि, से मने अछि। लाल कक्काक बात ओराएलो ने रहैन कि बिच्चेमे बजलौं-

“व्यास बाबा उनचास रंगक वायु कहने छैथ।”

जेना हुनको गर भेटलैन कि की, धाँइ-दे बजला- “बस, भने तूँ व्यास बाबाक विचार मोन पाड़ि देलह। व्यास बाबाक सखारीमे की सभ सजल अछि, से तँ बुझले छह। अनेको रंगक वस्तु-जात भरल अछि। ओही सखारीकेँ खोलि-खोलि देखहऽ जे माँ जगदम्बा की सभ साजि-साजि रखने छैथ।”

कहि चुप भऽ गेला। मनमे भेल जे तेहेन विचार लाल काका आगूमे रखि देलैन जे हमरा तँ तीन साल पुराण सबहक नामे भँजियबैमे लगि जाएत। तरका बात बुझैमे तँ जिनगीए टपि जाएत, तखन बुझब कहिया आ विचारब कहिया। मुदा सबालो तँ ओहने अछि जेकरा नकारलो नइ जा सकैए। ईहो नइ कहल जा सकैए जे लाल काका अनेरे हमरा कि कहि देलैन। चुप छोड़ि दोसर उपाइए की। मुदा जइ रस्तामे पहाड़ पड़ि जाए आकि धार पड़ि जाए चाहे कटारि पड़ि जाए, से टपब कठिन अछि, मुदा बगलि कऽ दोसर रस्ता तँ पकड़ल जा सकैए। कहलयैन-

“काका, अपना सबहक प्रदूषण दूषण अछि कि भूषण?”

लाल काकाकेँ हमर बात नीक लगलैन। मुदा बुझि पड़ल जे जहिना

कटहर खेलहाकेँ कण्ठ लग कटहरेक सुआद, लताम खेलहाकेँ लतामेक सुआद आ दारू पीलहाकेँ दारूएक सुआद लटकल रहैए तहिना भरिसक छैन। मुदा तैयो शहरसँ पड़ा गामक विचारमे घुमैत बजला-

“बौआ, गाम नामेक नइ होइए कामोक होइए।”

मनमे भेल जे लाल काका की कहि देलैन। पुछलयैन प्रदूषणक बात आ कहि देलैन नाम-गाम आ काम-धामक बात। जेना कछु खेबाक इच्छा जगिते मन ओहने चटपटए लगैत जेहेन वस्तु खेबाक इच्छा होइए, तहिना भेल। मुँहक ठोर चटपटाइत देख, बजला-

“बौआ, मनुखे नहि आनो-आनो जीव-जन्तु वायु साँस लेबो करैए आ छोड़बो करैए। जइसँ ओकर जिनगीक धार बहैत रहै छइ। मुदा प्रश्न तँ ओतौ उठिये जाइए जे केहेन वायु लइए आ केहेन छोड़ैए।”

लाल कक्काक विचारक समतूल अपनाकेँ नहि पाबि कहलयैन-

“गामक बात तँ छुटिये गेल.!”

हमर बात सुनिते लाल काका चौंकला। चौंकला ई जे गाम तँ समुद्रोसँ गहींर पहाड़ोसँ ऊँच आ दुनियोँसँ नमहर अछि, ओकर पार पुराएब असान थोड़े अछि.! तखन तँ जएह अछि तेहीसँ भरब, सएह ने। बजला-

“बौआ, बम्बइमे जे हवा अछि ओ गामक हवासँ भिन्न अछि, हजारो रंगक हवा अकासमे पसरल अछि, जेकरा जेते दम छै से तेते जगह छेकने अछि।”

लाल कक्काक बात ठीकसँ बुझि नइ पेलौं तँए हूँहकारी देब छुटि गेल। मुदा हूँहकारी बन्न भेने ओ बुझि गेला। बजला-

“बौआ, नीक-सँ-नीक, पवित्र-सँ-पवित्र वायु सेहो वायुमण्डलमे अछि आ अधला-सँ-अधला, मधुर-सँ-मधुर, अमृत-सँ-अमृत, तीत-सँ-तीत आ जहर-सँ-जहराएल वायु सेहो अछि। मुदा वायुमण्डल तँ

वायुमण्डल छी, सबहक छी, सभ रहबे करत।"

लाल कक्काक सोझ बात सुनि बुझबो केलौं आ नीको लागल। जे से सभ किछु मधुरे जकाँ मीठो अछि आ खटमिठो अछि। तँए आगू बुझैले कान उठेलौं। आकि लाल काका बजला-

"बड़-बड़ लीला अछि मनरंगमे, बौआ.!"

बुझि पड़ल जे हमरोसँ बेसी लाले काका मधुरमणि बनि गेला अछि। मधुमाछीक तान भरैत कहलयैन-

"काका, जाए दियौ वायुकेँ हवामे। अपना सभ जेतए छी तेतुक्का... ।"

आगू बजैले रहबे करी आकि बिच्चेमे लाल काका ऊपरे लोकि लेलैन, बजला-

"हवासँ कि पानि-माटि कम खेलाड़ी अछि?"

गपक क्रममे तँ हूँहकारी भरि देलिऐन मुदा लगले मन पचतए लगल जे ई की हूँहकारी भरि देलिऐन.! जहिना माटि असथिर रहैबला तहिना ने पानियोँ अछि.! मुदा खेलाड़ी तँ खेलक मैदानमे खेलैए। जेना-जेना मन मुड़ियाइत जाए तेना-तेना मुँहक सुर्खी सेहो मलिन होइत जाए। कण्ठक पानि सेहो धीरे-धीरे सुखए लगल। मुदा से लाल काका बुझि गेला। केना बुझि गेला से तँ ओ जानैथ। बजला-

"बौआ, माटियेक धरती बनल छै आ धरतीयेक खेतसँ गाम-घर, देस-कोस बनल अछि। कहैले तँ माटिये छी मुदा माटियोक तँ अनेको रंगक रूप-रंग अछिए। नीको अछि अधलो अछि। तैसंग नीकोमे नीक अछि आ अधलोमे अधला अछि। मुदा छी तँ धरतीए। जेकरा छोड़ल तँ नहियेँ जा सकैए। तँए ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे सभमे एके रंग गुण-अवगुण छइ। केकरो सोना उपजबैक गुण छै तँ केकरो हीरा। केकरो पाथर उपजबैक गुण छै तँ केकरो कोयला।"

ओना, लाल कक्काक बात सुनैमे नीक लगैत रहए मुदा मन जेना भरि कऽ अगधा गेल तहिना अकछए लगल। कहलयैन-

“उखराहा उसरैपर भऽ गेल, अपराहणक सभ काज पछुआ रहल अछि।”

हमर अकछाएल विचार लाल काकाकेँ नीक नइ लगलैन, बजला-

“मन अकछा जाए तँ चारि डेग टहैल आबी चाहे चाह पीब ली। मन ठीक भऽ जेतह। मुदा अधखिज्जू धान जहिना चाउर नइ भेल, अधपक्कू आम जहिना पाकल आम नइ भेल तहिना अधखिजू बातो तँ विचार नहियेँ ने भेल।”

लाल कक्काक विचार सुनि अपनो विचार जगल, जगिते उठल-माटिक चर्च काका केलैन, मुदा पानिक तँ छुटले छैन। केना नइ मनमे कुवाथ हेतैन जे तेहेन जुग-जमाना आबि गेल जे कियो केकरो बात-विचारमे रहैक कोन बात जे सुनौं ने चाहैए। जखन कि मरियाएल मन लगले जगजियारो नहियेँ बनि सकैए। मुदा समय संग देलक, तखने एकटा झमटगर बरियाती छोट-पैघ सतरहटा गाड़ीमे गाजा-बाजाक संग पीह-पाह करैत रस्ते-रस्ते पास करए लगल, जइसँ हमरो कान ठाढ़ भेल आ लालो कक्काक कान ठाढ़ भेलैन।

दुनू गोरेक आँखियो चकोना होइत रस्ता दिस बढ़ल, तावे बरियाती सोझहा आबि गेल। जेना-जेना बरियाती आगू बढ़ैत गेल तेना-तेना दुनू गोरेक मनो बदलैत गेल। लालो काका पाछूक छुटल बात बिसैर गेला आ अपनो मन लगन दिस बढ़ि गेल। बरियातीक चाल-चूल जखन शान्त भऽ गेल तखन लाल काका बजला-

“बौआ, आब कि तोहूँ कोनो बाल-बोल रहलह जे दुनियाँ-दारीक गप-सप्प नइ बुझबहक।”

कहि चुप भऽ गेला। लाल काकाकेँ चुप होइते मन उधियए-उफनए

लगल जे कक्काक नजैरमे आब हमहूँ बाल-बोध नइ रहलौं। मुदा दुनियाँ-दारीक बात बुझब ओते असान अछि जे लाले काका कहने हम लगले चेतन भऽ जाएब। सामंजस्य करैत बजलौं-

“काका, आब कि लोक बेटा-बेटीक बिआह थोड़े करैए, आब तँ धुड़-खेल खेलैए।”

अनठेकानले विचारक तीर जेना लाल काकाकेँ छातीक बीच हृदयमे लगि गेलैन। एकाएक अपन जिनगीक धारमे पहुँच गम्भीर होइत बजला-

“बौआ, संग मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। एकटा विचार करैक अछि।”

‘एकटा विचार करैक अछि।’ लाल कक्काक मुहेँ सुनिते हमरा अपने-आपमे विचारवानक भान भेल। देह-हाथक संग बुधियो-विवेककेँ असथिर केलौं। असथिर करिते आँखि उठा लाल कक्काक आँखिपर देलिऐन जे केहेन बात उठा विचार करता। हमर हाव-भावसँ लाल काका बुझि गेला जे रमेश बुझै-विचारैले तैयार भऽ गेल तँए विचारैक विचार रखैत बजला-

“बौआ, परसूका लगनमे सात ठामसँ नोत-हकार आएल अछि।”

हमरो मन असथिरे रहए, बिच्चेमे टोनैत कहलयैन-

“एहेन शुभ समाचार तँ लछमी पात्रे आकि लछमिनियेँ परिवारक होइए, तखन ऐसँ नीक की हएत।”

अपना मने तँ हम सकारात्मक विचार लाल काकाकेँ देलिऐन मुदा से हुनका मनमे नइ पचलैन। मन भीन-भीना गेलैन, जे से मुँहक रूखि मलिन हुअ लगलैन। मलिन होइत चेहरा देखि मनमे हुअए जे एहेन बीचमे कोन विचार आबि गेल जे सकारात्मक नकारात्मक रूपमे बदैल गेल.! कोनो भाँजे ने बुझि पबैत रही। एकटा युक्ति सूझल, सूझल ई जे जेना-

जेना लाल कक्काक चेहरा मलिन भेल जाइ छैन तेहने शीशाक जँ ऐना बना देखब तखन स्पष्ट रूपेँ बुझि पाएब...।

..हमर बात जेते लाल काकाकेँ बेधने रहैन तइ हिसाबे नहि, कनी बीच-बचाव करैत बजला-

"बौआ, सातो नोत-हकार कि एके रंगक अछि। केतौ बिआह तँ केतौ मूड़न, केतौ दुरागमन तँ केतौ घरवास अछि। जँ सातो काज कनियोँ हटल-हटल रहैत तँ अपने जा सातो पूरि लइतौं। मुदा से सम्भव अछि।"

संयोग नीक रहल मुहसँ निकैल गेल-

"जिनकर-जिनकर काज छिऐन तिनका-तिनका सुमझा दियनु। माने ई जे परिवारक बीचोमे काज हटल-हटल अछिए। जँ किनको नैहरमे काज छिऐन तँ पहिने नैहरवाली वा मात्रिकबला चाहे सासुरबलाक पहिल काज भेल, तखन ने समधियौरबलाक हएत। तहूमे जँ समधियौरबलाकेँ अपने सासुरमे आकि मात्रिकमे काज रहत तखन ओ समधियौर केना जाएत?"

हमर बात सुनि लाल कक्काक मन टनमनेलैन। टनमनाइते टनटनाइत बजला-

"हँ, सएह केलौं। सातमे छअटा केँ तहिना सुमझा देलिऐ बाँकी एकटा रहल।"

लाल कक्काक मन हल्लुक होइते कहलयैन-

"सातटा काजमे जँ छअटा निपैट गेल, तखन एकटा की भेल। ओ तँ लबे-दुआमे चलि जाएत।"

चरिचकिया गाड़ीमे जहिना एकटा चक्का जाम भेने बाँकी ओहो तीनू अपना चालिये नहि चलि, घिसियाइत चलैए, लालो कक्काकेँ भरिसक तहिना भेलैन। अपन सासुरक जिनगी दिस नजैर दौड़ गेलैन। दौड़ ई गेलैन जे अनका जकाँ सासुरोकेँ अखन धरि सासुर कहाँ बुझलौं, जिनकर

घर-दुआर माने नैहरक परिवार छेलैन हुनके काजो-उदेम सुमझा देने छेलिऐन। वएह ने काज-उदेममे ऐगला बाहन बनि जाइ छेली आ काजक निमरजना करै छेली। मुदा आब...।

'मुदा आब'क माने पैछला साल लाल काकी मरि गेलखिन। नैहरसँ आएब-जाएब, लेन-देन, नीक-बेजए सभ लाले काकीक हथौटी छेलैन, जे आब...।

अपने लाल काका बोझ परहक आँटी जकाँ अपनाकेँ बुझै छला। जहिना सिल्ली आगू अगो भलेँ सूपक वस्तु भेल, पथारक नै भेल। मुदा भेल तँ अगोए। तहिना लालो काका अगो रहितो बोझे परहक आँटी जकाँ रहैत आएल छैथ। बिआहक पछाइत बर-कन्याकेँ पारिवारिक बनि परिवार बसाएब जिम्मा भेबे कएल। जे केतेकेँ अबूहो लगै छै आ केते जिम्मा बुझि कन्हेठो लइते अछि। एहने स्थितिमे लाल काका सासुरक नौत पुरैक विचारमे मथाहाथ दऽ बैस कऽ विचार करैक सूर-सार करिते रहैथ कि हम पहुँचल रही।

जइ समय लाल कक्काक बिआह भेल रहैन तइ समय लाल काकी बीस बर्खक छेली। तीन बहिन आ चारि भाँइ रहैथ। जे अखैन चारिम सीढ़ीपर पहुँच गेल छैथ। एक भाए आ एक बहिन लाल काकीसँ छोट रहैन। चारि भाँइक भैयारीक पिताक बेटी लाल काकी छेली। ओना, चारू भैयारीमे सहोदर-पितियौत लगा तेरह भाँइ आ एगारह बहिन छेली। मुदा परिवार शामिल रहने सम्बन्धमे कोनो दूरी नहियेँ छेलैन। आने काज जकाँ माता-पिताक श्राद्ध बेटा-बेटीकेँ पालव-पोसव, बिआह-दान परिवारक नियमित काज छेलैने। जेकरा वैदिक पद्धैत कहियौ आकि मैथिल पद्धैत कहियौ।

पहिल पीढ़ी बीतैत-बीतैत माने चफलगर बाल-बच्चा भेला पछाइत चारू भैयारीमे भिनौज भेल। दू भाँइक एक-एक-टा बेटा दिल्लीमे नोकरी

करऽ गेला, जैठाम नव कमाइओ आ नव हवो-वसातसँ भेँट भेलैन। जइसँ भैयारीमे भिनौजक सम्भावना बनल। सम्भावना ई जे अखन धरि चारू भाँइक सम्मिलित परिवारमे सम्मिलित कारोबार आ काजो-उदेम छेलैन। मुदा दिल्लीक आमदनी दुनू भाँइकेँ नैतिक मतिपर प्रहार करैत आर्थिक मति दिस बढ़ौलकैन।

आर्थिक मतिक संस्कारमे गति सेहो आबिये रहल छल मुदा तइसँ एकटा विर्ड़ो जकाँ झोंक उठल। जइसँ चारू भाँइक बीच भीन-भिनौज भेलैन।

मनुखसँ लऽ कऽ घर-आँगन, खेत-पथारक संग कुटुमो-कुटमारे बँटा गेलैन। अपन-अपन सासुर तँ बँटा गेलैन मुदा मात्रिक रहि गेलैन सझिया। बीस-एक्कैस बर्खक अवस्थामे लाली सासुर एली। शुरूहेसँ लाल कक्काक मन उछटल रहैन, तँए बात-बातमे, विचार-विचारमे आ काज-काजमे किछु-ने-किछु तरपट परिवारसँ अलग बुझिये पड़ैन जे अपन सीमा-सरहद अमीनसँ नापी करा काइम कऽ नेने छला। कोन काजमे केते समय लगाएब आ कोन काजमे केते हमर खगता छै, ओतेकेँ पूर्ति करब दायित्व भेल। जइसँ कोन तरहक सम्बन्ध आदमी-आदमीसँ, परिवार-परिवारसँ राखब।

लालो काकीक नैहरक जिनगी ओहन रहलैन जे केना सहोदर बहिन आ पितियौत बहिन एके थारीमे खेबो करै छेलौं, खेतो-पथार जाइ छेलौं आ हाटो-बजार, मेला-ठेला करै छेलौं। हाट-बजार आकि मेला-ठेला जाइए काल बाबू पाइ गनि कऽ दऽ दइ छला आ ओइ काजकेँ हम सभ पुरेने अबै छेलौं।

पचीस बर्खक अवस्थामे लाल काकीकेँ तीन सालक बेटा कोरामे रहैन आ तइ समयमे सत्ताइस-अट्ठाइस बर्खक लाल काका रहैथ। लाल कक्काक पितो सासुरक सम्बन्ध लाले काकाकेँ सुमझा देने छेलखिन।

लाल काकाकेँ सासुरसँ मूड़नक नौत एलैन। पिता पहिनहि सासुरक भार लाल काकाकेँ सुमझाइए देने छेलखिन। मूड़नक काजक विचार जखन लाल काका करए लगला तखन किछु वाध्यता सेहो भेलैन। भेलैन ई जे बच्चाक मूड़नसँ पहिलुका जिनगीक जेते अनुभव माएकेँ होइ छैन तेते बापकेँ नहि। केतेटा बच्चाकेँ केते बेर जाँतल-पीचल जाए, केते बेर दूध पिऔल जाए, कोन स्थितिमे केना राखल जाए, ऐ मानेमे माइए ने गुरु, पिता तँ चेला जकाँ कखनो तेल तँ कखनो जाफर, कखनो पसीदक पात तँ कखनो मधु आनि-आनि पुरौथिन।

सासुरक मूड़नक नौत लाल काका भिनौजीक भार तर पहिल बेर पड़ला। सेहो सुगर देखि लाले काकीकेँ सुमझा देने छेलखिन। ओना, जखन लाल काकीकेँ नैहरक नौत आएल रहैन तखन अपनो बेटा मूड़न जोग भऽ गेल रहैन। सवा दुइए बर्खक बच्चाक मूड़न नैहरमे रहैन जखन कि अपन बच्चा पौने तीन बर्खक रहैन। से तरपट भेल दिन-बेरागनक दुआरे। मुदा तँए कि आगूक एगारम मासमे लाल काकी बेटाक मूड़न नइ करती सेहो बात तँ नहियेँ अछि। तँए अपनो सिरचढ़ मूड़नक काज देखि लालो काकी मूड़नक भार उठबैत-उठबैत नैहरक सभ भार लाल काकी कन्हेठ नेने छेली जइसँ लाल काकाकेँ कन्हापर भार कहियो पड़बे ने केलैन।

थकमकाएल मन लाल काकाकेँ रहबे करैन। थकमकाएल ई जे परसुके नौत छी, अखैन तक विचारबो ने केलौं जे जाइ कि नइ जाइ, जाइ तँ केना जाइ, जँ जाइयेक विचार हएत तँ काल्हिये भरि ओरियान करैक समय अछि। अपन सिरचढ़ काज देख, लाल काका नमहर साँस छोड़ैत कहलैन-

"बौआ रमेश, तोहूँ कोनो आन छिअ, बाँटि कुटि खाइ राजा घर जाइ।"

जहिना झँपले-तोपल बात लाल काका बजला, हमहूँ तहिना झँपैत कहलयैन- “काका, अनेरे लोक दुनियाँक मगजमारीमे अपनो मगजकेँ मारैए। तइसँ नीक जे... ।”

आगूक बात मुहसँ निकलब बाँकीए रहए कि बिच्चेमे टोनियबैत लाल काका बजला-

“भने कहै छह। कहह जे आब ऐ चौथापनमे जे सासुरक मूड़नक नोत पुड़ऽ जाएब से केहेन हएत। ओइ गाममे लोक नइ अछि, कोनो कि रौदीमे सभटा सुखाइए गेल।”

लाल कक्काक चपचपी देखि हमहूँ टोकारा देलिऐन-

“काका, कनी फरिछा कऽ कहियौ।”

लाल काका बजला-

“सासुरसँ नोत आएल अछि। चारिम सीढ़ीपर परिवार चलि रहल अछि। केते कहबह, सोझहे बुझहक जे हमरा सासु-ससुरक एक परिवारसँ चालीस परिवार बनि गेल अछि।”

मने-मन कक्काक मन टोनलयैन तँ बुझि पड़ल जे लालो काका सासुरक नौत पुरैक विचारमे नहियेँ छैथ। तँए नीक हएत जे हुनके मनक अनुकूल विचार दिऐन जे हरे-हरे कऽ मानि लेता। कहलयैन-

“काका, अहाँ कोन लटारममे पड़ल छी, अपना बेटाक हम मूड़न करेलौं, सोझहे जनमौटी केस कटा नाइक रजिष्टरमे नाओं दर्ज करा देलिऐ.! सवा सेर चाउर आ ओकर संगी-तुरीया जे होइ छै- दालि-तरकारी से दऽ देलिऐ, वेचारा खुशीसँ अपन नीक देखैत बच्चाकेँ असिरवाद दैत चलि गेल।”

हमर बात जेना लाल काकाकेँ नीक लगलैन। तहिना मुड़ी डोलौलैन। शतरंजक गोटी जकाँ चाललौं-

"काका, जाबे लाल काकी छेली, ताबे ओ अपन निमाहलैन। आब ते ओहो नहियेँ छैथ, तखन अनेरे कोन मायाजालमे ओझरए चाहै छी।"

जहिना बहैत पानिमे चुट्टी खढ़ो-पातक सहारा पाबि अपन जान बँचा लइए तहिना लालो काकाकेँ भेलैन। बजला-

"भने कहलह।"

कहलयैन-

"जाबे लाल काकी मर्तलोकमे छेली ताबे सम्बन्ध छल, जखन ओ मृत्यु लोकमे चलि गेली तखन अनेरे... ।"

धड़फड़ाइत लाल काका बजला-

"तखन?"

कहलयैन-

"काका, अहाँकेँ अपने चारि जुगक अनुभव अछि, तखन... ।"

लाल काका बजला-

"बहुत चीज बिसरियो गेलिऐ।"

❑

तिथि : 02 जून 2015, शब्द संख्या : 2923

पहपैट

केता मासक पछाइत गुरु काकासँ भेँट होइक सम्भावना बनल। सेहो अहिना नइ बनल, चाहक दोकानपर उड़न्ती सुनलौं जे ससपेंड भऽ गुरु काका गामेमे बैसल छैथ। ओना, गुरु कक्काक नाओं सुनि थकमकेलौं, थकमकेलौं ई जे पुरान सम्बन्ध अपनो अछि आ परिवारोक बीच रहबे कएल अछि। तँए कनतोपि कऽ लागल-लागल चाहो पीबी आ गौंआँ-घरूआक मुँह की कुचड़ै-कचड़ै छै से सुनबो करी। एक गोरे बाजल-

"गुरु काकाकेँ घूस लइके कोनो औझुके आदत छिऐन जे पहिल दिन घूस लेलैन आ पकड़ा कऽ नोकरी छोड़ि गाम आबि बैसल छैथ.!"

शतरंजक गोटी जकाँ दोसर गोरे थोड़े आगूक सह दैत कहलकै-

"मीता, तोरा नीक जकाँ नइ बुझल छौ, किरानी भऽ कऽ हाकिमोक कान कटैए.!"

तैपर तेसर कहलकै-

"एहेन लोककेँ अहिना हुअए। आब बुझथुन जे बुढ़ाड़ीमे घी-ढारी केहेन होइ छै.!"

तैबीच चाहक दोकानबला चेतौनी दैत बाजल-

"देखू.! गहिंकी सभ बाहर ठाढ़ छैथ, अहाँ सभ एक कप चाह नइ पीब आ भरि दिन दोकान छेकने रहब।"

दोकानदारक बातक असैर भेल। बाहरमे ठाढ़ गहिंकी सेहो जोर दैत दोकानदारकेँ तरखने टोकलकै- "कियो तोहर चाह पाइ दऽ कऽ पीबै

छह आ कियो मंगनीए पीबै छह जे कियो ठाढ़े-ठाढ़ पीबए आ कियो घन्टाक-घन्टा बैस बात बनबैत पीबए.!”

गुरु कक्काक चर्च तर पड़ि गेल। दोसरे गप अगुआ कऽ आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। दोकानदारोक आ बाहरमे ठाढ़ भेल गहिंकियोक बात सुनि मनमे अपन गलतीक बोध भेबे कएल। जँ गुरुए कक्काक घटना छिऐन तँ की ओ कोनो बाँटल छैथ जे हुनका ऐठाम जा कऽ पुछि नइ सकै छऐन, तखन अनेरे चाहक दोकानपर एतेकाल बैसबे किए केलौं।

गुरु काका हमर स्कूलेक संगी छैथ। समाजक बेसी लोक हुनका गुरुए काका कहै छैन, तँए हमहूँ कहलौं। ओना, नाओं बहकानन छिऐन। बी.ए.तक दुनू गोरे संगे पढ़लौं। बी.ए. केलाक पछाइत हुनका जिला कार्यलयमे किरानीक नोकरी भेलैन आ हम स्कूलक शिक्षक छी। एहेन होइते छै जे केकरो निर्धारित नाओं लऽ कऽ चिन्हल जाइ छै तँ केकरो तहूसँ कम करि कऽ चिन्हल जाइ छै आ केकरो बेसी करि कऽ चिन्हल जाइ छै आ केकरो तहूसँ बेसी चिन्हल जाइ छइ।

रहै छी दुनू गोरे एके गाममे, मुदा टोल दू अछि। बीचमे कनीटा पाँतर छइ। पाँतरो ओहन नइ अछि जे कोसक-कोस मटियारी माटिक धनखेतीक होइ। बीघा दसेक पाँतर छै सेहो गाछीए-बिरछीसँ झाँपल अछि।

एक गाम, एकठाम रहितो बेसी दिनपर भेँट होइक कारण ईहो अछि जे ओ जिला कार्यालयमे किरानीक नोकरी करै छैथ आ हम स्कूलक शिक्षक छी से तँ अहुँकेँ बुझले अछि जे दुनू गोरेक काजो आ काजक रूटिंगोमे एते दूरी बनि गेल अछि जे लङ्गोटिया संगी रहितो, एक गाम-समाजक रहितो मासो-मास ने वएह भेँट होइ छैथ आ ने हमहीं भेँट होइ छिऐन।

नोकरीमे दुनू गोरेक काज उनटा-पुनटा भऽ गेल अछि जइसँ एक-

दोसरक बीच जरूरतो नहियेँ जकाँ रहैए। उनटा-पुनटा काज ई अछि जे ओ भरि दिन लिखनीबला काज करै छैथ आ हम पढ़नी-पढ़ौनीबला काज करै छी। दोसर रूटिंगक हेर-फेर सेहो अछि।

ओना, दुनू गोरे गामेसँ जाइ-अबै छी, माने डेढ़ कोसपर हुनको ऑफिस छैन आ डेढ़-पोने-दू कोसपर हमरो स्कूल अछि। ओ मोटर साइकिलसँ जाइ-अबै छैथ आ हम एक-सलिया, दू-सलिया, तीन-सलिया सेनरेले साइकिलसँ जाइ-अबै छी। तीन सालपर अधोर दाममे बेचि नवका कसा लइ छी। अजमाएल ऐछे तीस-चालीस मिनट जाइमे लगैए। साढ़े दस बजे स्कूल खुजैक समय छै, साढ़े नअ बजे घरपर सँ चलै छी, स्कूलक चौकपर पान खाइत-खाइत समय भऽ जाइए, घण्टी बजैत आँफिस पहुँच जाइ छी।

मुदा बहकाननकेँ से नइ छैन। भोरे नहा कऽ कहियो चाहो पीबै छैथ आ कहियो नहियोँ पीबै छैथ, तहिना जलखैयोक छैन। कल्लौक तँ छैन्हे। छुट्टी दिन छोड़ि कहियो दिनक खेनाइ घरमे नइ खाइ छैथ। अफसरक ऑफिस खुजैसँ पहिने किरानी सबहक ऑफिस आने ठाम जकाँ खुजिते छैन। काज करौनिहारोक कमी तँ नहियेँ अछि, केतबो सकाल बहकानन ऑफिस पहुँचै छैथ तइसँ पहिनहि चाहक दोकान, जलखैक दोकान सुआगत करैले ठाढ़ रहिते छैन। ओना, काजोक भीर बेसीए छैन। एकटा छोट-छीन काजमे घन्टो-घन्टा माथ धुननाइ, घन्टा-घन्टा भरि लिखनाइक संग आमद-खर्चक हिसाब लगौनाइ तँ छैन्हे। धइन हुनके कही जे एते सम्हारि चलै छैथ।

ओना, चौकपर सँ गामपर अबैत-अबैत ईहो बातक जानकारी भेल जे स्थानीय सी.आइ.डी.क नोकरी केनिहार अपने काजे गेल। जेना आन पहिने अपन परिचय दऽ दैत रहैन तेना ओ सी.आइ.डी.क परिचय नइ दऽ गामक परिचय देलकैन। मुदा बहकानन जहिना सभकेँ अपन परिचय काजसँ पहिने दऽ दैत तहिना देलकैन। गर देखि ओ अपने नोट अपने

हाथे पहिने धरा पाछू धऽ लेलकैन.!

तीन दिन ससपेंड भेना भऽ गेलैन। लोक किछु बजैए, तइसँ थोड़े हएत। किताबोमे अछि आ बुझनिहारो बुझै छैथ जे पृथ्वी गोल छै, मुदा आँखिक सोझमे चापट नै अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तँए चाहे दोकानपर मन बना लेलौं जे बहकाननक खोज-पुछारि करऽ जरूर जाएब अछि।

फेर मनमे भेल जे काने-कान तँ केता गोरेक मुहेँ सुननहि छी जे बिना घूस नेने कोनो काज दिस बहकानन तकबो ने करै छैथ। केहनो इमानदार अफसर किए ने ऑफिसमे होथु, किरानीक हाथ पकड़ब कठिन तँ अछिए। कारणो अछि, मात्र दसखते टा ने अफसर करता आ जे घन्टा-दू-घन्टा, तीन घन्टा तक कलमक धार बहौलक ओ की ओहिना धारमे हेलल.! तँए तेकर मुकाबला करब तँ कठिन अछिए। भाय, बड़ इमानदार छह तँ तोरा इमानदारीक भाषामे बुझबैक अछि, दसखतक पछातिक रखबार तँ हमहीं छी, अपन रखबारि केना छोड़ि देब।

चौक-चौराहा होइत दस बजे घरपर पहुँचलौं। मनमे उड़ी-बीड़ी लगले रहए जे संजोगो संग देलक। रबि दिनक छुट्टी अपनो हाथ लगले रहए। भूत जकाँ लङ्गोटिया संगी बहकानन लङ्गोटा पकैड़ लेलक, ने केम्हरो जाए दिअए आ ने लङ्गोटा छोड़ए। करखनो मनमे हुअए जे नहेने तँ सिनूर दहा जाइ छै, आ हम कि कोनो बहिखत लिखि देने छिऐन जे अहाँ लङ्गोटिया संगी छी, नीक करब कि अधला करब हम संगी रहबे करब.!

मुदा पत्नीक चपेटमे पड़ि गेलौं। चपेट ई जे जही गामक अपन पत्नी तेही गामक बहकाननोक पत्नी। पत्नीकेँ भाँज लगि गेलैन जे बहिन पेटकान लधने अछि। आब तिलकोरक तड़ुआ केतएसँ औत।

आगू-आगू पत्नी आ पाछू-पाछू अपने विदा भेलौं। बहकानन दरबज्जेपर बैस बेरुका चाह पीबैत रहैथ। अपने दरबज्जापर बैसलौं आ पत्नी सुरसुराएल दही-चूरा जकाँ अँगने पहुँचली। मुदा बहकानन एते रच्छ

रखलैन जे पहुँचते पत्नीकेँ कहलखिन- “बहू दिनक पछाइत मीतक भेँट-घाँट अछि, संगे चाह पीब।”

मनमे नचैत रहए तीन दिनक ससपेन्शनमे घर बैसल छैथ। अपने ने अपन सफाइ करैत दसठाम बजता जे एना-नइ-एना भेल। तँए तइ ताकमे रही। मुदा बहकाननक मन मिसियो भरि मलिन नहि, जे नोकरीमे ससपेन्शन कलंक छी। मनमे ई गदगदी बहकाननकेँ रहबे करैन जे दस-दस दिन, पनरह-पनरह दिनक छुट्टीमे केना रहै छी, तहिना बुझब। गामक लोक कियाँने गेलै जे हम ससपेंड भऽ गाममे छी। तँए पिछराह गाछ जकाँ देहमे छल-छली रहबे करैन।

दुनियाँ-दारीक गप होइत-हबाइत दिन लहैस गेल, आँगनसँ पत्नियोक समाद आबए लगल जे घर-अँगना करैक समय भऽ गेल, साँझ-बातीक बेर लगिचाएल जाइए।

‘साँझ-बातीक बेर लगिचाएल जाइए’ पत्नीक ई चिक्कारी भाषा रहैन। आनकेँ बुझल होइ आकि नइ मुदा अपने तँ बुझिते छी। असलमे चिक्कारी भाषा बजैक पत्नियोकेँ बाध्यता रहैन। बाध्यता ई रहैन जे बहिनक मुहेँ अपन बेथा कम आ लोकक मुहेँ सुनल बातक बेथा बेसी रहैन, जइसँ मन अकछा गेलैन। तँए साँझ-बातीक बहाना बना लगले-लगले समाद पठबैथ। ओना, एकबेर झोंकपर समदिये दिअए कहियो देलिऐन- “पहिल साँझ साँझ-बाती नइ पड़त तँ दोसर साँझमे पड़त आ जँ सेहो संजोग नइ बैसत तँ तेसर साँझमे देब। साँझ तँ साँझे छी।”

असलमे जहिना पत्नीक कान सुनैत-सुनैत तोपा गेलैन तहिना अपन कान ओहिना ठाढ़ रहए जे बहकानन किछु बजता तखन ने अराँची जकाँ खोंइचा सोहि दाना निकालि मुँहमे लेब.! आकि बड़ धड़फड़ाएल छी तँ बिनु खोंइचा छीलिनहि मुँहमे लऽ लेब.! आ जँ ओइमे पिल्लू होइ? मिरचाइक पिल्लूकेँ ने कड़ू तेलमे छौंक दऽ तरि कऽ खाइए मुदा अराँची आकि इलाइचीकेँ तँ से नइ अछि, काँचे खाए पड़त।

ओना, बहकानन शुरूहेसँ पिछराह रहल, मुदा पीछराहो तँ पीछराह छी। केते रंगक चेहरा बना ठाढ़ अछिए। जेना लतामो गाछ पीछराह होइए आ सफेदक गाछ सेहो पीछराह होइए, मुदा दुनूकेँ एक बुझब नेनमैत हएत। नेनमैत ई जे लतामक गाछ पीछराहो रहैए तँ ओकरामे जड़ियेसँ सीढ़ी जकाँ डारि बनल रहै छै, संगे धड़ो धरियबै-जोकर रहै छइ। मुदा सफेद तँ सफेद छी, निच्चाँ-ऊपर एके रंग.! ने पँजियबै-जोकर आ ने डारि-टहनी। तहिना माटियोक अछि। चिक्कनि माटि वा मटियार माटिक पीछरपन आ खरिआइ माटि वा बलुआह माटिक पीछरपन, एके रंग थोड़े होइए।

अन्तो-अन्त बहकानन अपन बात नहियेँ खोललैन। खोलबो कि करितैथ, सभकेँ बुझले अछि घूसक अपराधमे ससपेंड होउ आ घूस दऽ कऽ पिण्ड कटा गंगा लाभ भऽ जाउ.! मुदा औहुना उठि विदा हएब नीक बुझि बजलौं-

“बहक.! बहकैत-बहकैत एते ने बहैक जाइ जे बेसम्हार भऽ जाइ, अखन जाइ छी फेर भेँट-घाँट हेतइ। कहिया तक गाममे छह?”

मुस्कुराइत बहकानन बाजल- “तीनटा सी.एल बाँकी छल, मास अन्तिम छीहे तँए सोचलौं जे अपन हिसाब-किताब फरियैबते चली। काल्हि भरि छिअ।”

सुनि विदा तँ भऽ गेलौं। मुदा पत्नीक मन खसल-क-खसले देखलयैन।

❑

तिथि : 05 जून 2015, शब्द संख्या : 1369

इजोरिया राति

साढ़े पाँच बजे भोरे पिताजीक फोन पहुँचल। रिसिभ करैत प्रणाम केलिऐन। प्रणामक जवाब दैत पिताजी कहलैन-

“दादी कहै छथुन जे जाबे बेकलाक मुँह नइ देखब ताबे परान नइ छूटत।”

‘बड़बढ़ियाँ’ कहि पिताजीकेँ जवाब देलिऐन। मोबाइल रखिते मनक मोबाइल टनटनाएल। मनमे उठल दादी-माँ। ओही दादीक मुँहक बात आ हाथक काज देखि आइ केरल सन पैघ शहरमे प्राइवेट ट्रान्सपोर्टक ओहन नोकरी करै छी जइमे सभ सुविधा मौजूद अछि.! प्लेनसँ पटना होइत आइए गाम पहुँच जाएब। मुदा...।

लगले मन बदैल गेल, बदैल ई गेल जे जखन दादीक वचन छैन जे तोरे मुँह देखै दुआरे प्राण अँटकल अछि, तँ दू-चारि दिन देहेक कष्ट ने हेतैन, मनक तँ नइ हेतैन, दू-चारि दिनक पछाइते गाम जाएब। हँ-निहँस नीक जकाँ केनौं ने रही कि फेर मनमे उठि गेल- औझुका काज, औझुका रूटिंग। नहा-धो कऽ कपड़ा पहीरि चाह पीब, समुद्रमे बनल विवेकानन्दक स्मारक देखए अठबारे सभ रबिकेँ जाइते छी, ओकरे तैयारीमे रही आकि तखने गामसँ फोन आएल छल। उठि कऽ विदा होइक विचार मनमे उठबे कएल कि अगुआ कऽ उठि गेल- गाम जाएब।

केकरो किछु कहैक जरूरत ऐछे नहि, आठ बजेक प्लेन पकैड़ लेब, सोझहे पटना दस बजे पहुँचा देत, दू-अढ़ाइ घन्टामे पटनासँ गामक

सीमान तक बस पहुँचा देत, जँ ओतएसँ पएरो जाएब, तैयो दिन लहसैत आइए गाम पहुँच जाएब। सएह केलौं।

ठीक दस बजे पटना हवाइ अड्डापर पहुँच गेलौं। पहुँचते विचार भेल जे बिनु पुछने-कहने गाम विदा भऽ गेल छी, गाम तँ गामे छी, अंगदक लंका। जे जाएब तँ असान अछि मुदा घुमि आएब कठिन। एक-दू दिनक बात रहैत तखन तँ अगर-मगर करैत छुट्टियो बँचा लितौं। मुदा तहूमे मैयाँसँ अन्तिम भेँट छी।

समय बेठेकान अछि। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे अदहा रस्तासँ बेसी दूर पहुँचिये गेल छी, कहबैन जे पटना काजे आएल छेलौं, घुमि कऽ अखन केरल नइ आएब, गाम जाएब जरूरी भऽ गेल। दादी-माँ चलचलौ भऽ गेली अछि। ओना, उमेरो भइये गेल छैन, झुनकुट बुढ़ भइये गेल छैथ।

स्टेशनसँ निकैल मुसाफिरखनासँ पहिनहि अपन कम्पनीक मालिककेँ फोनसँ सूचित केलौं। पछाइत गामक नम्बर मिला फोन लगेलौं। भैया फोन उठौलैन। प्रणाम करैत पुछलयैन-

“भैया, की समाचार अछि, दादी-माँ केना छैथ?”

भैया जवाब देलैन-

“सभ पूरबते अछि। दादी-माँ सँ गप करह।”

गोड़ लगैत दादी-माँकेँ पुछलयैन-

“मन नीक अछि किने, दादी-माँ?”

जेना ठोरेपर जवाब लटकल रहैन तहिना उत्तर देली-

“बौआ, पहिने गाम आबह तखन निचेनसँ गप करब।”

कहलयैन-

“पटना पहुँच गेल छी, कनीयेँकालक पछाइत गाम पहुँच जाएब। की सभ खाइ-पीबैक मन होइए कहू कीनने आएब।”

जवाब देली- “सब दिन अपना हाथक खेलौं, आब ऐ उमेरमे अनका हाथक खाएब.! किछो ने अनिहह। अपने सब किछु अछि।”

दादी-माँक जनम ओहन परिवारमे भेलैन जे जाति विभाजित समाजमे विभाजित जातिक बीच जातिक उच्च कोटिक परिवार छेलैन। एक शाखाक बीच अखन सात डारिमे विभाजित समुदाय अछि। माने एक जातिक बीच सात जाति बनि ठाढ़ अछि, जइमे एक-दोसरक बीच काफी दूरी बनियों गेल अछि आ बनियों रहल अछि। जेकर एलेक्शने-एलेक्शन रिनुअलो होइते अछि। अहुना सामाजिक स्तरपर खान-पानक बीच छुआ-छूत अछिए।

दादी-माँक पिता शिक्षक। ओइ समैयक शिक्षक जइ समयमे खाली पेट भरि खेनाइटा होइ छेलैन। जखन कि परिवारो समटले, छबे गोरेक परिवार रहैन। परिवारमे असगरे काजकर्ता पुरुख पिता रहैन, बाँकी पाँचो या तँ महिला छेलैन या तँ बाल-बच्चा। ओना, पान-सात बीघा खेतो रहैन मुदा मालगुजारीक अभावमे केता बेर निलाम होइत रहलैन। मुदा शिक्षकक रूपमे जुरमाना माफ करैत आपस कऽ देल जाइ छेलैन।

दादी-माँक पिता घरसँ बाहर रहने ने माल-जाल खुट्टापर पोसने रहैथ आ ने खेती-पथारी अपना सिरे करै छला। कहैले बँटाइ लगौने रहथिन मुदा बँटाइयो तँ बँटेदार किसान आ बँटाइ लगौनिहार मालिकक बीचक कारोबार छी। तँए जेहेन जे बँटेदार किसान तेहेन तेकरा लाभ।

मास्टर साहैब सोझमतिया लोक, जे-जे बँटेदार कहैन- माने रौदी भऽ गेने हमर खर्चा डुमि गेल ओकर अदहा तँ अहाँकेँ दिअ पड़त, तहिना कहियो दाही कहि तँ कहियो कीड़ी-फतिंगीक प्रकोप कहि मास्टरे साहैबक ऊपर खाइन खसा दैन, मास्टरो साहैब बुझैथ जे दू गोरेक बीचक विवाद छी, ऐमे अनकर किए समय लेब। समैये ने सभ किछु छी, जँ समैयक मालिक अपने बनि जाइ तँ कोन मलिकाना बाँकीए रहल। दुनू

गोरे- माने बँटेदार मालिक आ बँटेदार किसान-क बीच अन्तो-अन्त यएह पनचैती होइन जे जे भेल से बीतल समयमे भेल, आबसँ धुअल-पखारल दुनू गोरे भेलौं। माने किनको ऊपर कोनो देनी-लेनी नइ रहल।

ओना, मास्टर साहैबक जातिक बीच प्रतिबन्ध छेलैन जे महिला खेत-पथारक काज नइ करती, तैसंग शिक्षकक परिवार रहने अनुकूलतो छेलैन। माल-जाल नइ पोसती। नइ पोसैक कारण छल, अपने हाथे गाए दूहब परहेज छेलैन। ओना, परिवारक सदस्यक चरित्र गठन जे छेलैन ओ इमानदारीक गठन छेलैन। जइसँ झूठ बाजब, केकरो कोनो वस्तु परोछमे छुअब, केकरो अवाच कथा कहब सभसँ परहेज छेलैन। मुदा कर्मठ इमानदार तँ मेहनतेक बलपर ठाढ़ होइत अछि, तेकर अभाव परिवारमे रहबे करैन।

हमरा परिवारमे दादी-माँक बिआह नइ हेबाक चाहिऐन। ओ शिक्षकक बेटी, शारीरिक श्रमसँ हटि पलित रहैथ, जखन कि हमर परिवार खेतमे काज करैबला छेहा बोनिहार, परिवारक बुत्ता बोनियेँ छल। मुदा जतिआरे बन्हन तँ एहेन होइते अछि जे कुल-मूलक जोड़ तकैए। जखन कि जोड़ हेबा चाही काजक जे जिनगीक बुनियाद छी। धन-सम्पैत नहि। कुल-मूलक रक्छा ठाढ़ जिनगी भेला पछाइते ठाढ़ रहि सकैए।

बस स्टेण्डमे उतैरते भैयाकेँ फोन करैत कहलयैन- "कनी दादीकेँ फोन दियनु।"

फोन लइते दादी बजली-

"के छिअँ बेकला?"

"हँ"

"तोरेले बेकल छी।"

"किए बेकल छी?"

"साल भरिसँ तोरा नइ देखलियौ, तँए मन बेकल भऽ गेल।"

मनमे भेल जे जँ आइ हमहूँ गामे रहितौं, तखन दादी-माँकेँ एना बेकल होइक कोनो सम्भावने ने रहैत। मुदा...। अपनो कमजोरी केतौ-ने-केतौ जरूर अछि। चाहितौं तँ जैठाम नोकरी करै छी तहूठाम दादी-माँकेँ रैखतिऐन तैयो बेकल होइक सम्भावना नै रहैत। मुदा सबालो तँ सबाल छी, दादी तक परिवारकेँ बाहरक नोकरी केनिहार जे कियो रखने होथि, वएह टा ऐ परिस्थितिकेँ आँकि सकै छैथ। पाशा बदलैत आस लगा कहलयैन-

"दादी, ताबे अहाँ चाहपर नजैर दियौ, हम पहुँच रहल छी। दुनू गोरे संगे चाह पीब।"

दादी कि आब ओ दादी छैथ, आब तँ बेटा-पुतोहु, पोता-पोतीसँ भरल-पूरल परिवारक दादी छैथ, तहूमे जखन हमरा देखैले एते बेकल छैथ, तखन हमर चाहक तृष्णा सुनि आरो बेकल हेबे करती। एके मुहेँ, लगले सुरे जोरसँ बजली-

"एक गोरे आगू जा कऽ देखहक, कनियाँ अहाँ जल्दी चुल्हि पजाइर चाहक बरतन चढ़ाउ।"

अपना घरसँ कनी पाछूए रही आकि डेढ़ियापर ठाढ़ दादी-माँपर नजैर पड़ल। मनमे तूफान जकाँ उठि गेल जे पहिने पएर छूबि गोड़ लागि किछु कहबैन आकि पहिने दुनू हाथ जोड़ि फरिक्केसँ कहैत लग पहुँच पएर छूबि किछु कहिऐन। मुदा से भेल नहि, अगुआ कऽ बजैसँ पहिने ऐगला बाहन जकाँ दादीए बजली-

"बौआ, खाइ-पीबैमे दीक ते ने होइ छह?"

दादीक बात सुनि मनमे हँसियो लगए आ ईहो हुअए जे दादी-माँ परिवारक नमहर इतिहास पुरुख सन छैथ, ओहिना थोड़े बजली। सभ कालखण्डक अपन खण्डित आ बिखण्डित इतिहास अछि...।

..ताबे दरबज्जापर पहुँच गेलौं। सभ किछु पहिनेसँ ओरिया कऽ

दादी-माँ रखने छेली। पहुँचते पहिने पएर धो चौकीपर बैसलौं। दादियो-माँ बैसली, चाहो आएल। जेना दादी-माँसँ असगरे कोनो खास गप करब। तहिना परिवारक सभ कियो ओतएसँ सहैट गेला। खाएर जे से...।

दू-घोंट चाह पीब पुछलयैन-

“दादी, आइक समयमे खाएब-पीब कोनो तेहेन समस्या नइ रहि गेल अछि, तखन किए एहेन बात पुछलौं?”

हमर बात जेना दादी-माँक हृदैमे पहुँच गेलैन तहिना बजली-

“बौआ, उकड़ू आ सुकड़ू समय होइ छइ। जइ दिन ऐ घरमे बास लेलौं तइ दिनमे नैहरमे कहियो कोनो खेती-पथारीक काज नइ केने छेलौं। पेट बोनियाँ परिवारमे आबि गेलैं। बाधक रखबारक खोपड़ी जकाँ घर, अपना बीतो भरि जमीन नहि। दिनक-दिन बोइन-बुत्ता होइ छल, तइसँ कहुना-कहुना दुनू साँझ भरि पेट कि अदहा पेट खाइ छेलौं...।”

बिच्चेमे दादी ठमैक गेली। जेना आँखिक नोर मुँहमे चलि गेल होइन तहिना। एका-एक बाजबसँ रूकब देखि पुछलयैन-

“तब की भेल?”

विस्मित होइत दादी बजली-

“मघाइर समय रहै, दौन-दोगौन, नार-पात समटा गेलइ। बोनिहारक काज हेरा गेल। मुदा से चेतलौं। चेतलौं ई जे, ताबे ससुर जीबते रहैथ, ओछाइन पकैड़ नेने रहैथ, कहलयैन- बाबू, एक गोरेक कमाइसँ परिवार ठाढ़ नइ रहत। परिवार ठाढ़ हएब भेल परिवार जनक ठाढ़ हएब, परिवार-जन ताबे तक नइ ठाढ़ रहत जाबे पेटमे दाना नइ रहतै। तइले तँ परिवारेक लोक ने सोचि-विचारि किछु करता।”

बिच्चेमे पुछलयैन- “तैपर ओ की कहलैन?”

कहऽ लगली-

“बौआ, जहिना निरोग युवकक विचारमे आ रोगाएल-बुढ़ाएलक विचारमे पारिस्थितिक अनुकूल बदलाव अबै छै तहिना ससुर कहलैन, नीक-अधलाक विचार करैत आगू डेग उठाएब।”

फेर पुछलयैन-

“तेकर बाद की केना भेल?”

कहलैन-

“नैहरमे खेत-पथारक काज करब वर्जित छल, मालो-जाल तहिना छल। मुदा ऐठाम खेत-पथार जाएब वर्जित नइ अछि। रहल बात परदा-पौसक, सोचलौं तेकरो रस्ता किछु-ने-किछु लगत। खेत-तमनीक समय आबि गेल छल। अन्हार-इजोत तँ रातिये-दिन ने होइए। रातिके पतिक संग कोदरवाहि शुरू केलौं। दू मासक कठिन मेहनैत चारि मासक जिनगी बना देलक। आठे मासक घटबी रहल, जे बोनिहारक अनुकूल समय छीहे। नैहरमे फूलक गाछ रोपि फुलवाड़ीक काज करिते छेलौं, ओहो लूरि रहबे करए। मनमे भेल, फुलबाड़ीए ने बाड़ियो बनैए.! तखन तँ फूल-फूलमे अन्तर छइ। कोनो फूल नीक फलो नीक सुगंधो दइए आ किछु सुगंधेटा आ किछु एहनो तँ ऐछे जे ने नीक फले दइए आ ने नीक सुगंधे।”

दादीक बात सुनि मनमे भेल- बाप रे.! जँ दादी अबैसँ पहिने मरि गेल रहितैथ तँ एहेन अमृत वचन केतएसँ अबितए। गद-गद मने कहलयैन-

“दादी, अहाँ कहियो ने मरब।”

जेना दादियोकेँ बुझले रहैन तहिना बजली- “मासमे एक्के दिन मरैक डर होइए, बौआ। बाँकी उनतीस दिन कोन काल हमरा सोझा औत।”

दादी-माँ की कहलैन, से बुझबे ने केलौं। मुदा एक दिन आ उनतीस दिन मन रहल। पुछलयैन-

"दादी, ई की कहलिऐ- एक दिन आ उनतीस दिन?"

दादी बजली-

"बौआ, हमर जनम इजोरिया रातिमे भेल अछि तँए खाली इजोरियाक एकादसीक डर होइए जे कहीं... ।"



तिथि : 07 जून 2015, शब्द संख्या : 1512

तीन जुगिया भाय

केता बरीसक पछाइत तीन जुगिया भाय भेँट भेला। सेहो कि ओहिना थोड़े भेला, भेला तखन जखन आँखि मिचौनी ओझरीमे तेना ओझरा गेलौं जे बिनु हुनके ओझरी छुटब कठिन भऽ गेल। लाख नाँगैर पटपटेलौं मुदा जेते ओझरी छोड़बऽ चाही तइसँ बेसी लागिये जाए। बेसीक माने एक्के रंगक नहि, केतेको रंगक लगि जाए। करवनो छोटका ओझरी नमहर बनि जाए, तँ करवनो अनठिया आबि मन घोर कऽ दिअए। करवनो ओझरी-सोझरी मिलि अधसोझरू बनि जाए...।

भेल ई जे नअ बजे रातिमे मुड़नियाँ भोज खा कऽ आबि ओछाइन पकैड़ लेलौं। निशाँएल मन रहबे करए, माने अन्नक निशाँ फुटे आ बर-बरीक निशाँ फुटे चढ़ल रहए, मुदा ऐ सबहक कोनो मद्दी नहि, असल रहै जे भरि पेट सुअन भेटल, तेकर निशाँ चढ़ल रहए। ओछाइनपर अबिते हाफी करैत निनियाँ देवीकेँ आवाहन केलिऐन कि जेना ओहो हमरे बाट तकैत रहैथ तहिना धड़धड़ाएले आबि वर दैत सुता देलैन।

नीन पड़िते बिसैर गेलौं जे मुड़नक भोज तँ खा लेलौं मुदा खाइक हिसाब जोड़बे ने केलौं जे कोन वस्तु केना बनौल गेल, केना परसल गेल आ केते खेलौं। जँ से हिसाब नइ जोड़ि लितौं तँ जश-अजश केना बिलैहतौं।

निशाँएल मनक निशाँ रातिक निशाँएल नीन सन्ध्या बेलाकेँ एक्के बेर धोबिया घाट जकाँ तेना उठा कऽ फेकलक जे तेसर घाटपर पहुँचा

देलक। संध्या बेलासँ सोझहे प्रात: बेलामे पहुँच गेलौं।

तीन भोरमे नीन टुटल, नीन टुटिते मुँह-कानमे पानि लेलौं। पानि लइते पढ़ै-लिखैक विचार मनमे उठल। पेटक अन्न जखन करोटिया लइ छै तखन चाहक क्षुधा तँ कम मुदा किछु करैक क्षुधा बढ़िते छइ। जहिना सभकेँ बढ़ै छै तहिना बढ़ल। ओना, ओछाइनपर सँ उठि मुँह-कानमे पानि लऽ लेने रही, मुदा अन्हारे-अन्हार घरो आ घरक ओसारो रहबे करइ। ई काज- मुँह-कानमे पानि लेब- अन्हारेमे कऽ नेने रही। असलमे अन्हारोमे एहेन ठेकनाएल जगह अछि, जे दिनोमे आँखि मुइन जा सकै छी आ अन्हारोमे आँखि ताकियो कऽ आ मुनियोँ कऽ जा सकै छी। जहिना इतिहासक बात अछि-

'चारि बाँस चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमाण

एते पर सुलतान है, मत चूको चौहान।'

तहिना अपनो घर-ओसार नपले अछि जे केते डेग टपने घरसँ निकलै छी, आ केते डेग टपने ओसारसँ...।

खेनिहारो सभ अपन नाप बनौनहि छैथ जे केते कौर करबैन खाएब। मुदा केते कौर करबैन खाएब तहूले तँ हिसाबक रेखागणित पढ़ऽ पड़त। जँ से नइ पढ़ि नेने रहब तखन तँ अनेरे जलखै बेरमे भरिपेटा कलौ खा लेब आ कलौ बेरमे अधपेटा जलखै चाहे जलपान जकाँ गिलास भरि पानि पीब लेब। तहिना बेरहट बेर रौतुका भरिपेटा कलौ खाएब आ बाइस बेरमे दिनका। जइसँ अनेरे दिन-रातिक बीच किरिया-कलाप करै-धरैमे कटमटीक संग कटकटी हेबे करत...।

मुदा से अपन हिसाब रेखागणितक डाँरि खींच, एक-दोसरसँ मुँह-मिलानी करैत खाइ-पीबैक हिसाब जोड़ि नेने छी। जोड़ि एना नेने छी जे केतेटा दिन-रातिमे की सभ करैक अछि। जे सभ करैक अछि तइले केते उर्जा आ समैयक जरूरत अछि इत्यादि...।

समय तँ समय छी। ओ अहाँ विचारे नइ अपने विचारे अपने गतिये चलैत आबि रहल अछि, चलितो अछि आ आगूओ चलिते रहत। दिनो-राति एना सटल अछि जे रहत दिन आ देखबै जे राति अछि आ रहत राति तँ बुझि पड़त जे दिन अछि। माने ई जे दिनक बारह बजेसँ सेकेण्डो भरि आगू बढ़ने रातिक हिसाब हुअ लगैए आ बारह बजे रातिक पछाइत दिनक। मुदा ऐ पछड़ासँ अपनाकेँ कात रखैत अपन दिन-रातिक निरमान कऽ नेने छी। केने एना छी, अन्हारमे आँखि छोट पड़ि जाइए तँए दुनियाँक तामैन-कोरैन करैमे बाधा हएत मुदा घर-अँगना भरिक दुनियाँ बना, जइमे डिबिया वा बिजलीक बौल लगा इजोत करैत दिने जकाँ बना कऽ धऽ तँ सकै छी।

पढ़ैक विचार मनमे औनाइत रहए, मुदा अन्हारे-अन्हार पसरल। ने अकासमे शुक्ल पक्षक चान आ ने घरमे बिजली-लाइन, आ ने कोनो दोसर इजोतक जोगाड़। ओना, देशक आजादीक पैंसैठ बर्खक पछाइत बजलीक दर्शन गाममे भेल। जइ बीच तीन पीढ़ी ससैर कऽ आजादी-आजादी रटैत वंशक तीन सीढ़ी आगू बढ़ि गेल।

छोट-छीन हमर गाम रामनगर कोसिकन्हासँ बहुत हटल, कसवा कातक गाम छी। ओना, कोसिकन्हासँ हटल रहने कोसी बाढ़िक आकि कमला बाढ़िक आकि नेपालक बर्खाक संग पहाड़क पिघलल बर्फक धफाड़ नइ पड़ैए, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। कोसी बाढ़िसँ केतौ खूब उपजा हुअए आकि कोनो गामे गंगा लाभ भऽ जाए मुदा हमरा गामक तँ एते उपकार भेबे कएल जे चारि इस्वी क बाढ़ि भीत घरकेँ भगा, ईंटा-पाथर दिस पठेबे केलक। तँए कि लोक चारि इस्वीसँ पहिलुका भीत घरकेँ बिसरियो तँ नहियेँ सकैए।

उन्नैस साए साठि-बासैठक करीब दरभंगासँ आगू बढ़ि बिजली झंझारपुरो दिस घुसकल। तइसँ पहिने गामक लोक किए सोचता जे बिजलियो सँ समाजमे इजोत अबै छइ। गामे-गाम केतौ पानिक कहात,

केतौ अन्नक कहात तँ छेलैहे आ अछियो।

लोकक स्थिति आजादीक समय बदसँ बदतर छल। जहिना शासनक तहिना जीविकोपार्जनक। झंझारपुर-फुलपरास बिजली पहुँचने गामो-गाममे बिजलीक चर्च उठल। तेकर पछाइत जे पंचवर्षीय चुनाव भेल, तइमे गामक बिजलियो मुद्दा बनल। संयोग नीक रहल, गामक पच्छिम-उत्तर भागकेँ पकड़ैत, इसान कोणसँ दछिन मुहेँ घुमि पुबरिया सौंसे गामक सीमा पकड़ने काज आगू बढ़ल।

रामनगरक बगलेक गाममे बिजलीक इजोत हुअ लगल। केते चुनावमे लोक बिजलीक आश्वासनपर भोँट बिलहलक, मुदा गामक आँखि बिजलीक मुँह नइ देखलक।

नब्बे इस्वीक पछाइत गाममे बिजलीक सरकारी मंजूरी भेटल, ठीकेदारक माध्यमसँ कोटानुकूल पोल पहुँचल। गामक कोटा.! एकेटा टोलमे गड़ैत-गड़ैत पोल सठि गेल। जे जोगीकेँ मन भाबए से वैद फरमाबए।

सरकारोक संग मजबूरी, बिजलीक उत्पादने नहि, तँ बिलहाएत की ऐहवक फड़। ई टोल, उ टोलक माने एक टोल, दोसर टोल तैसंग गामक सभ टोलक लोक झंझट उठौलक। लूटमे चरखा नफ्फा होइते अछि। बिजली गाममे पहुँचबे ने कएल, पहुँच गेल गामे झंझट।

नव शताब्दीक पदारपन भेल, गामक एक टोलमे बिजली पहुँच गेल जइमे पोल गड़ाएल छल। एते दिनक जे झंझट छल तइमे आरो सुधार भेल। मुदा झंझट लधले रहल, कनी-मनी अखनो अछिए। रामनगर-ले बीस साए पनरह इस्वी शुभ रहल, बिजली लगि गेल। अपनो घरमे लगल।

पानि पीला पछाइत जखन बिजलीक स्विचपर आँगुर देलौं तँ बिजली नहि। पढ़ैले मन ओंघरनियाँ मारए लगल। मुदा बिजलीक इजोत

नहि। गैस लाइटपर टॉर्च देलिऐ तँ बर्नल भंगठल बुझि पड़ल। बुझि पड़ल जे कोनो पार्ट छुटि कऽ खसि पड़ल छइ।

जहिना घर अन्हार गुप-गुप तहिना मनो अन्हार गुप-गुप भऽ गेल। ओही गुप-गुप अन्हारमे लालटेन मोन पड़ल। रैकक तरमे लालटेन राखल। झोलाएल। गरदा-माटिसँ सौंसे देह भरल। चिन्हमे एबे ने करए जे कहियो यएह रोशनी दइ छल जइ रोशनाइसँ लिखै-पढ़ै छेलौं। रैकक तरसँ लालटेन निकालि, ओकरा कपड़ासँ झाड़ि-झूड़ि-पोछि-पाछि चिक्कन बनेलौं, मुदा टॉर्चक इजोतमे केतबो चिक्कनसँ साफ केलौं तैयो दोग-सान्हिमे गरदा लगल रहबे करइ। शीशा साफ करैत जखन लालटेनक बर्नल खोललौं तँ खजाना भरल तेलमे सूतक बाती भीजि सोगर बनि जरैले तैयार देखलौं। देखिते मन खुशी भेल।

सलाइ सोझहेमे रहए, लालटेन नेसि रोशनीकेँ प्रणाम केलिऐन कि तीन जुगिया भाय नजैरक सोझमे आबि गेला। मुदा रोशनीक भकभकीमे झल-फल होइत रहने नीक जकाँ चीन्ह नइ सकलयैन।

लालटेन उठा किताबक रैक दिस बढ़ेलौं तँ थकियाएल किताबक थाकसँ कोन निकालि पढ़ब, से ताँइयेँ ने कऽ पबैत रही। एके थाकमे ऋृग्वेद, उपनिषद्, वेदान्त दर्शन, श्रीमद् भागवत, महाभारतक संग तुलसीकृत रामायणिक संग अध्यात्म रामायण, वाल्मीकि रामायणिक संग वुद्धदेवक संग्रहावली, कबीरदासक बीजक, सूरदासक सूरसागर, जायसीक पद्मावतक संग विवेकानन्दक विचार सजल छल।

जँ पहिने विचारि नेने रहितौं जे फल्लाँ पोथी पढ़ब, तखन तँ अस्पतालक केहनो सम्पन्न लाश कक्षसँ नम्बर मिला सर्र-दे निकालि लइतौं, मुदा से भेल नहि। थाकि हारि असोथकित भऽ ओछाइनपर ओंघरा विचारऽ लगलौं, तँ बुझि पड़ल जे एतेकाल सँ अनेरे टप्पा-टोइया देलौं। पोथी पढ़ब, मुदा कोन पोथी पढ़ब से विचार केने बिना ओझराएल

छी। लगले मोन पड़ि गेल- पोथी ने ही ज्ञान दिया है, पोथी ने गुमराह किया है...।

जखन पढ़ैले एतेकाल सँ मन ओंघरनियाँ दइए, तखन ओहन निर्दयी माइयो बनब नीक नहि जे बच्चा भूखसँ कनैत ओंघरनियाँ दिअए आ ओकरा दिस तकबो ने करिऐ।

लालटेनक इजोतक जे फकफकी रहै ओ टेमीक ऊपरक मोमड़ी जरैत काल तक फकफकाएल, मुदा जखन ओ अपन पुरान स्वरूपकेँ ज्योतिमे जरा लेलक, तखनसँ इजोतो फरिछा गेल। साफ, सुन्दर, सुहावन रोशनी अन्हारमे अपन रंग-रोशनाइ घोरि देलक। रोशनाइ घोराइते तीन जुगिया भाय अपन पोथी-पतरा नेने आगूमे आबि कहलैन-

“इजोतमे आँखि बन्न केने किए पड़ल छह, सुधीर?”

तीन जुगिया भाइक बात कानमे पड़िते आँखि सुरसुरा उठल। धड़फड़ा कऽ उठि भायकेँ गोड़ लागि ओछाइनपर बैसबैत अपनो बैसैत कहलयैन-

“भाय, आइ अहाँकेँ गंगा-कोसी धार जकाँ द्रुत गतिये बहैत देखि मनमे असीम खुशी अछि।”

असीम खुशी सुनि, जहिना तराजूपर एक पलड़ामे वस्तु-जात आ दोसरमे बटिखाड़ा रखि तौलल जाइ छै तहिना तौलैत तीन जुगिया भाय बजला-

“सुधीर, आइ जेतए पहुँच गेल छी, तइसँ आगूओ देखब अछि आ पाछूओ केँ मोन राखब अछि, जँ से नइ रखि चलब आ कहबै जे बेटा परदेश गेने बापकेँ बिसैर गेल, से कहने थोड़बे हएत।”

तीन जुगिया भाइक विचार सुनि मन ठमकल। मुदा तेहेन ताड़-खजूर जकाँ विषयक जड़ि रोपि देलखिन जे बारह बर्खे जड़िये बन्हाएत। फरीच होइमे केते समैये रहल अछि जे ओछाइन धेने रहब। अपनो

धड़फड़ाइत आ भाइयोकेँ धड़फड़बैत कहलयैन-

“भाय, जखन अपन मनक बेथा अपन रोशनीक रोशनाइ घोरि-लिखि कहऽ चाहै छी, तँ कहिये दिअ। मुदा सूर्योदयसँ पहिने अपन विचार समेट लेबए पड़त।”

जेना व्याकरणक संक्षेपण तीन जुगिया भायकेँ ठोरेपर रहैन तहिना बजला-

“तोरा अबूह बुझि पड़ै छह, फोरनसँ पेसतर हमर विचार उसैर जाएत।”

भाइक विचार सुनि मनमे भेल जे अपनो चुकने ने कहीं असले चुइक जाए। विचारकेँ सम्हारि कहलयैन-

“भाय, उपयोगीकेँ तेना फड़िया कहियौ जे अन्हारोमे रस्ता हेराए नहि। एकर माने ई नइ जे भूतकेँ भुतिया भूमिके छोड़ि दिऐ।”

हमर बात तीन जुगिया भायकेँ नीक लगलैन। बजला-

“सुधीर, बीतल समैयक संग बीतल जिनगी बीतल, एकर माने ई करवनो ने भेल जे ओ जिनगीए ने छल। जीवनक सभ किछु रहितो जिनगी समटल-बान्हल छल, तँए..?”

भाइक अलंकारिक शैली सुनि मनमे भेल विचारैमे जँ कनीयोँ तल-बिचल भेल, तखन तँ अनेरे देवतासँ दानव भऽ जाएत आ बिच्चेमे मानव हेरा जाएत। जखन मानवे हेरा जाएत तखन जाएब केम्हर.! कहलयैन-

“भाय, एना जँ एकेटा शब्दकेँ बेर-बेर कहबै तँ हम भोथिया जाएब। तँए कनी... ।”

हमर बात सुनिते भाय मुस्की भरलैन। मुस्कीक संग मुहसँ निकललैन- “सुधीर, भूमिकामे बेसी नइ कहबह, एतबे बुझि लएह जे शक्तिक रूपमे आगि अबैसँ पहिने हमर-तोहर पूर्वज ऐ धरतीपर स्वतंत्र

रूपेँ विचरण करै छला, फल-फूल साग-पात सभ खाइ छला। दिन-रातिक बीच जीबैत एला, आगि एला पछाइत शक्तिक रूपमे उपयोग करैत आइ हम बिजलीक रोशनीमे पहुँच गेल छी।"

हूँहकारी भरैत कहलयैन-

"अइमे के काट-खोंट करत?"

जेना तीन जुगिया भायकेँ सह भेटलैन तहिना सम्हारि बजला-

"सुधीर, आगूक रोशनीक चर्च करैसँ पहिने एकटा मन रखिहह।"

मनमे भेल जे बजला किछु ने, तँ एकटा की भेल। पचीस-पचासमे ने एकटा, दूटा आकि तीनटा हएत आ जेतए किछु ने रहत तेतए एकटा की भेल? पुछलयैन-

"भाय, एकटा की कहलिऐ? मन रखैले कहलौं मुदा एकटा तँ दूटा होइए। एकटा होइए एकटा मिसिया आ दोसर होइए एक नम्मर काज, विचार, ज्ञान, रस्ता, जिनगी। से कनी बेरा कऽ पहिने कहियौ, तखन मन रखै जोकर जे एकटा हएत तेकरा राखब, जे नइ रखै जोकर हएत तेकरा एक नम्मरमे नइ राखब।"

भाइयोकेँ जेना हमर विचार नीक लगलैन। बजला-

"अपनो विचार सदिकाल यएह रहैए जे कोनो लाइ-लपटाइमे नइ रही आ ने केकरो लाइ-लपटाइ दिस ठेलिऐ।"

हूँहकारी भरैत कहलयैन-

"एहने चाहै छी।"

पहिने जेना सेरिया कऽ साँस खिंच लेलैन तहिना एके सूरे बजला-

"सुधीर, ठनका-पाथर भलेँ मनुखसँ पहिने जनम लऽ लेने हुअए, मुदा जहियासँ मनुख जनम लेलक तहियासँ कहियो ओकरा गुदानलक नहि।"

मनमे भेल जे बीचमे ई की कहि देलैन। सालक-साल देखै छी जे ठनकासँ केते लोक मरैए, पानिमे डुमि कऽ से मारि लोक मरैए आ गुदानलक केना नइ? फेर भेल जे भाय किछु छैथ तँ तीन जुगिया छैथ, अपने मने अबिसवासो करबकेँ नीक नहियेँ कहल जाएत, कहलयैन-

"भाय, कनी नीक जकाँ विचारक खोंइचा छोड़ा कहबै तखन ने एक जुगियोकेँ मन रहतैन जे इलायचीक माने फोकले इलायची नहि, दनोबला इलायची होइते छइ। भलेँ संग-संग रहने ओकरो देह-हाथ ओहिना किए ने होउ।"

भायकेँ जेना नीक लगलैन तहिना बजला-

"बौआ सुधीर, किरिणो फुटैपर आबि गेल आ गपक मुँह- नाँगैर छुटले रहि गेल, तँए नीक हएत... ।"

'नीक'क आगू की बजितैथ से तँ ओ जानैथ मुदा हमरो मन औगुता कऽ धड़फड़ा गेल तँए बिच्चेमे टोनी बना टोनि देलिऐन-

"भाय, ठनका-पाथरबला..?"

हुनको जेना मनमे नचिते रहैन तहिना बतीसो मोती छिटकबैत बजला-

"बौआ, केतबो ठनका-पाथर किए ने खसल-पड़ल मुदा ई बात झूठ छै जे हमर वंश जहियासँ धरतीपर आएल तहियासँ जीबित अछि।"

भाइक बात सुनि मनमे छह-पाँच उठऽ लगल जइसँ आँखियो आ कानो हुनका दिससँ ससैर अपना दिस अबऽ लगल। जे भाय बुझि गेला। बिच्चेमे टोनीकेँ छिलैत बजला-

"बौआ, जँ वंश जीबित नइ रहैत तँ हमर जनम केना भेल। तँए हम जीबित वंशक जीबित मनुख छी।"

पूबमे सूर्यक लाली अन्हारमे बिजलीक इजोत जकाँ पसरऽ लगल।

भाय बजला-

"बिजली बहुत पैघ सम्पैत मनुखक छी, तँए जे जेते उत्पादित पूजी बना उपयोग करता, हुनका ओते नीक हेतैन आ जे जेहेन करता से तेहेन पौता।"



तिथि : 12 जून 2015, शब्द संख्या : 2010

अँगनेमे हेरा गेलौं

कमला धारक छहर टुटने अपना गामकेँ के कहए जे समुच्चा इलाकामे बाढ़ि पसैर गेल। पोखैर-झाँखैरसँ लऽ कऽ गाछी-बिरछी धरि समुद्र जकाँ एक रंग भऽ गेल। रस्ता-पेरा बन्न भेने अपनो आ गामोक लोककेँ चौ-अन्नीसँ बत्तीस-अन्नी धरि बैसारी भऽ गेल। बैसारीमे गामक साहित्य प्रेमी सबहक विचार भेलैन जे अखन साहित्य सृजनक अनुकूल परिस्थिति अछि तँए साहित्यिक आयोजन गाममे हुअए। रस्ता-पेरा खुजल रहने ने बहबाड़ि जकाँ करैए, मुदा से तँ बाढ़िसँ घेराएल अछि, तँए एकमुहरी युवजनक विचार भऽ गेल।

साहित्यिक आजोयजनक बीच कथा पाठ आ ओकर समीक्षाक विचार ताँइ होइत पनरह तारीकक दिन निर्धारित भऽ गेल, जेकरा आइ सात दिन बाँकी छइ।

कोनो गाम आकि कोनो समाजमे नव काज भेने गामो आ समाजोक सभ किछु नव-नव रूप धारण करऽ लगैए जइसँ गामो नव आ समाजो नव देखैमे आबिये जाइए।

छह दिन बीतल, सातम दिन आइ छी। आइए तीन बजे अपराहणसँ कार्यक्रम अछि। रंग-रंगक कथाकार एकठाम बैस कथो सुनौता आ अपनो सुनता आ तैपर समीक्षा केनिहार समीक्षा करता। नवान पाबैन जकाँ नवको अन्न आ पुरनो अन्न अग्नि-आहूत हेबे करत।

गामक जे पुरान लिखबैया छैथ आ गाम-समाजमे साहित्यिक मंच नइ बनने मंचपर कथा वाचैक अवसर नइ भेटलैन हुनको तँ अवसर भेटबे करतैन। संगे जे नवतुरिया नानी-दादीक खिस्सा कागजपर कलमसँ लिखि

तैयार करत ओहू नवतुरियाकेँ तँ मंच भेटबे करत, तँए पढ़ल-लिखल समाजमे आरो बेसी खुशी।

अपन बिआहक मरबा देखि जहिना बर-कन्याकेँ खुशी होइत तहिना रंगर मंच सजल आ सभ रंगक बेवस्था देखि सभ साहित्य प्रेमीकेँ खुशी भेलैन। जे साहित्यिक प्रति पगला गेल छैथ सेहो पहुँचला, आ जे भाड़ा-किराया-फीस लऽ मंचपर जाइ-अबै छैथ, सेहो पहुँचला। तहूमे बाढ़िक समय, मोटबरे ब्लौकेसँ राशनक उठाव भऽ गेल। तँए आमदनियोँक चकचकी रहबे करैन।

गोल-मोल मंच सजल जेकर ऐगला पतियानीमे अपनो बैसल रही। भाषासँ प्रेम रहने साहित्योसँ कनी-मनी लगाव अछिए। से जँ नइ राखब तँ शब्दक ऑपरेशन करैक अपन रोजगारे बन्न भऽ जाएत, कारखाना जकाँ कच्चे मालक अभाव भऽ जाएत...। माने ई जे पारा मेडिकल जकाँ कथाक भाषेटा केँ ऑपरेशन करैक लूरि सीखि डॉक्टर छी। तँए मजबूरियो अछि, दूटा बातो सुनि कथेकारक लागि-भागिमे सटल रहै छी, सटल की रहै छी जे सटाएल रहै छी।

गामक कथाकारकेँ पहिल समैयक अवसर कथा-पाठ करैक भेटल। दिनेश भाय, कथा वाचन शुरू केलैन, सोझहा-सोझहीमे हमहीं पड़ैत रहिऐन, तँए हमरे दिस ताकि-ताकि कथा वाचन केलैन। एक तँ गौंआँ तहूमे परिवारसँ जुड़ल, केना नइ दिनेश भायकेँ हमर अपेक्षा होइतैन। कियो बाहरक होथु आकि गामेक आन टोलक, तिनकासँ तँ हम लग छेलिऐन। मुदा संजोग कहू कि दुर्जोग भाषाक ताकमे शीर्षकेमे हम हेरा गेलौं। शीर्षकेक ऑपरेशन करैमे बुधि, विवेक, मन, नजैर सभ समटा कऽ ऑपरेशनक पाछू लगि गेल। आँखि तँ दिनेश भाइक आँखिसँ मिलैत रहल मुदा शीर्षकेक शब्दमे तेना घुरिया गेलौं जे कानसँ धियान हटि गेल।

समीक्षकक बीच समीक्षा शुरू भेल। पहिल समीक्षक दुतकारि देने

छेलैन दिनेश भाइक कथाकेँ। दोसर कनी सम्हारलकैन मुदा तैयो वे-सम्हारे बुझि पड़ैत रहैन। तेसर नम्बरक समीक्षक हम रही। कथा तँ सुनलौं नहि, की समीक्षा करब.! ठाढ़ होइत बजलौं- "दिनेश भाय, अखनो धरि अहाँ-कथाक शीर्षकक भाँज नइ लगल, से कनी आबो फरिछा दिअ।"

अपना विचारे दिनेश भाइक कथाक जड़िकेँ हम तर तक रोपैक कोशिश करैत बाजल रही। मुदा दिनेश भाइक मन खटमिट्ठी जकाँ रहैन।

गुम्हैर कऽ बजला- "बड़ समीक्षक बनै छैथ.!"

दिनेश भाइक मन रूष्ट बुझि पड़ल। तँए कनी पाछू हटैत चुपे ऐ आशामे रहलौं जे दिनेश भाइक तामस कमलैन कि ओहिना छैन, आकि आरो चढ़ि गेलैन। से दोहरा कऽ किछु बजता तखने बुझब।

हमरासँ पहिलुका समीक्षकक समीक्षा मनकेँ घोर बना घोड़ैत रहैन जइसँ तामस कमितैन की जे आरो तेजे होइत गेलैन।

बजला- "एहेन रही ते आगूमे नइ बैसी। एकोरती तोरा आँखिमे पानि रहलह, ओहिना ओतेकाल आँखि चढ़ा आँखि मिलौने रहलह.!"

अपन हारल रही कि हेराएल रही से निर्णये ने कऽ पबैत रही। दिनेश भाय मुहेँ-काने बोकिया देलैन, मुदा की करितौं। चुप-चाप सभटा घोंटैत अँगनेमे हेराएल रहलौं। ❑

तिथि : 14 जून 2015, शब्द संख्या : 605

❑❑❑

❑❑

❑

Notes

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....